

63^{वें}

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2015

National Film Awards 2015

आधिकारिक विवरणिका
THE OFFICIAL CATALOGUE



सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

Ministry of Information and Broadcasting, Govt. of India

63^{वें}



आधिकारिक विवरणिका
THE OFFICIAL CATALOGUE

सी. सेंटिल राजन (निदेशक डीएफएफ़)
C. Senthil Rajan (Director DFF)

इन्द्राणी बोस (उप निदेशक)
Indrani Bose (Dy. Director)

सम्पादक: शांतनु रे चौधरी (अंग्रेजी), मिहिर पंड्या (हिन्दी)
Editors: Shantanu Ray Choudhari (English), Mihir Pandya (Hindi)

संयोजनकर्ता: कौशल्या मेहरा
Co-ordination: Kaushlaya Mehra

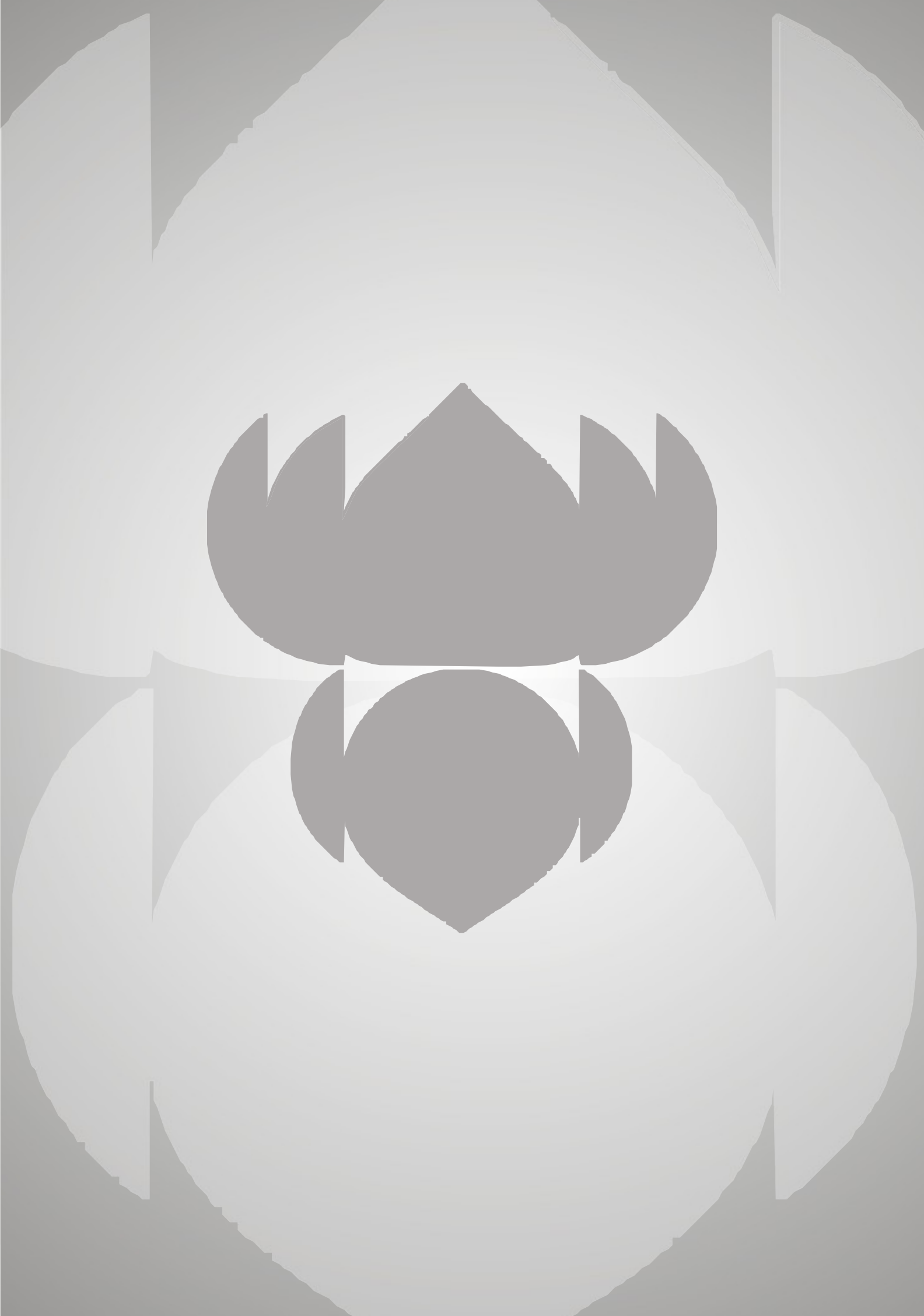
संयोजन और संपादकीय सहायक : अंशुमन शेखर, हर्ष अग्रवाल, अर्पण होम रॉय
Co-ordination & Editorial Assistance: Anshuman Shekhar, Harsh Agarwal, Arpan Home Roy

सज्जाकार: निर्माण एडवर्टाइजिंग प्रा. लि.
Designer: Nirman Advertising Pvt. Ltd.

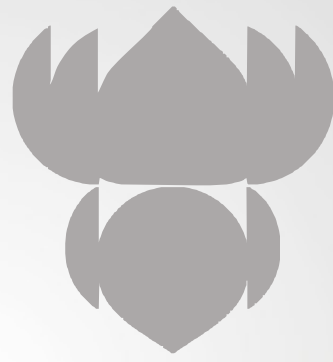
कला निर्देशक: मुकेश चंद्रा
Creative Director: Mukesh Chandra

कला सहायक: उपकार सिंह, पवन यादव
Creative Assistance: Upkar Singh, Pawan Yadav

प्रकाशक: वि.दू.प्र.नि., सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
Publisher: DAVP, Ministry of Information and Broadcasting



63^{वें}



विषय सूची

CONTENTS

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार

DADASAHEB PHALKE AWARD

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार के विषय में	10	About Dadasaheb Phalke Award
दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार : अब तक सम्मानित	12	Dadasaheb Phalke Award Past Recipients
पुरस्कार चयन समिति	16	Award Committee
मनोज कुमार : प्रोफ़ाइल	21	Manoj Kumar : Profile
निर्णायक मंडल (फीचर फिल्म)	28	Feature Film Jury
निर्णायक मंडल (गैर-फीचर फिल्म)	34	Non-Feature Film Jury
निर्णायक मंडल (सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन)	38	Best Writing on Cinema Jury
प्रादेशिक निर्णायक मंडल (फीचर फिल्म)	40	Regional Feature Film Jury
फ़िल्म अनुकूल प्रदेश निर्णायक समिति	45	Film Friendly State Jury Committee

फीचर फिल्में

FEATURE FILMS

फीचर फिल्में - एक नज़र में	48	Feature Films - At a Glance
सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म	50	Best Feature Film
इन्दिरा गांधी पुरस्कार: निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ फिल्म	52	Indira Gandhi Award for Best Debut Film of a Director
लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वश्रेष्ठ फिल्म	54	Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
राष्ट्रीय सद्भाव और एकता के लिए सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का नर्गिस दत्त पुरस्कार	56	Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म	58	Best Film on Social Issues
पर्यावरण संरक्षण / परिरक्षण पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म	60	Best Film on Environment Conservation / Preservation
सर्वश्रेष्ठ बाल फिल्म	62	Best Children's Film
सर्वश्रेष्ठ असमिया फिल्म	64	Best Assamese Film
सर्वश्रेष्ठ बांग्ला फिल्म	66	Best Bengali Film
सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फिल्म	68	Best Hindi Film
सर्वश्रेष्ठ कन्नड़ फिल्म	70	Best Kannada Film
सर्वश्रेष्ठ कोंकणी फिल्म	72	Best Konkani Film
सर्वश्रेष्ठ मलयालम फिल्म	74	Best Malayalam Film
सर्वश्रेष्ठ मराठी फिल्म	76	Best Marathi Film
सर्वश्रेष्ठ ओड़िया फिल्म	78	Best Odiya Film
सर्वश्रेष्ठ पंजाबी फिल्म	80	Best Punjabi Film
सर्वश्रेष्ठ तमिल फिल्म	82	Best Tamil Film
सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फिल्म	84	Best Telugu Film
सर्वश्रेष्ठ संस्कृत फिल्म	86	Best Sanskrit Film
सर्वश्रेष्ठ मैथिली फिल्म	88	Best Maithili Film
सर्वश्रेष्ठ मीज़ो फिल्म	90	Best Mizo Film
सर्वश्रेष्ठ मणिपुरी फिल्म	92	Best Manipuri Film
सर्वश्रेष्ठ वांचो फिल्म	94	Best Wancho Film
सर्वश्रेष्ठ हरियाणवी फिल्म	96	Best Haryanvi Film
सर्वश्रेष्ठ खासी फिल्म	98	Best Khasi Film
सर्वश्रेष्ठ बोडो फिल्म	100	Best Bodo Film

विषय सूची

CONTENTS

फीचर फ़िल्में

FEATURE FILMS

सर्वश्रेष्ठ निर्देशन	102	Best Direction
सर्वश्रेष्ठ अभिनेता	103	Best Actor
सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री	104	Best Actress
सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेता	105	Best Supporting Actor
सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेत्री	106	Best Supporting Actress
सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार	107	Best Child Artist
सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक	108	Best Male Playback Singer
सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका	109	Best Female Playback Singer
सर्वश्रेष्ठ छायांकन	110	Best Cinematography
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (मौलिक)	111	Best Screenplay (Original)
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (रूपांतरित)	113	Best Screenplay (Adapted)
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (संवाद)	114	Best Screenplay (Dialogue)
सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन (लोकेशन साउंड)	116	Best Audiography (Location Sound)
सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन (साउंड डिज़ाइन)	117	Best Audiography (Sound Design)
सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन (फाइनल साउंड मिक्सिंग)	118	Best Audiography (Re-recording of Final Mixed Track)
सर्वश्रेष्ठ सम्पादन	119	Best Editing
सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन डिज़ाइन	120	Best Production Design
सर्वश्रेष्ठ वेशभूषा	121	Best Costume Design
सर्वश्रेष्ठ रूपसज्जा	122	Best Make-up Artist
सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (गीत)	123	Best Music Direction (Songs)
सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (पार्श्व संगीत)	124	Best Music Direction (Background Score)
सर्वश्रेष्ठ गीत	125	Best Lyrics
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	126	Special Jury Award
सर्वश्रेष्ठ नृत्य संयोजन	127	Best Choreography
सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफ़ैक्ट	128	Best Special Effect
विशेष उल्लेख	129	Special Mention
कथासार-फीचर फ़िल्में	132	Synopses-Feature Films

विषय सूची

CONTENTS

गैर फीचर फिल्में

NON-FEATURE FILMS

गैर फीचर फिल्में - एक नज़र में	136	Non-Feature Films - At a Glance
सर्वश्रेष्ठ गैर फीचर फिल्म	138	Best Non-Feature Film
निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ गैर फीचर फिल्म	140	Best Debut Non-Feature Film of a Director
सर्वश्रेष्ठ मानवशास्त्रीय / मानवजातीय फिल्म	142	Best Anthropological/Ethnographic Film
सर्वश्रेष्ठ जीवनी / ऐतिहासिक पुनः निर्माण संकलन फिल्म	144	Best Biographical/Historical Reconstruction Film
सर्वश्रेष्ठ कला / सांस्कृतिक फिल्म	146	Best Arts and Culture Film
सर्वश्रेष्ठ प्रोत्साहन देने वाली फिल्म	150	Best Promotional Film
सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण फिल्म	152	Best Environment Film
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म	156	Best Film on Social Issues
सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक फिल्म	158	Best Educational Film
सर्वश्रेष्ठ गवेषणा / साहसिक फिल्म	160	Best Exploration/Adventure Film
सर्वश्रेष्ठ खोजपरक फिल्म	162	Best Investigative Film
सर्वश्रेष्ठ एनिमेशन फिल्म	164	Best Animation Film
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	166	Special Jury Award
सर्वश्रेष्ठ लघु कल्पित फिल्म	168	Best Short Fiction Film
पारिवारिक मूल्यों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म	170	Best Film on Family Values
सर्वश्रेष्ठ निर्देशन	172	Best Direction
सर्वश्रेष्ठ छायांकन	173	Best Cinematography
सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन	174	Best Audiography
सर्वश्रेष्ठ संपादन	175	Best Editing
सर्वश्रेष्ठ संगीत आलेखन	176	Best Music
सर्वश्रेष्ठ प्रकथन / वॉइस ओवर	177	Best Narration/Voice Over
विशेष उल्लेख	179	Special Mention
कथासार – गैर-फीचर फिल्मस	182	Synopses - Non-Feature Films

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन

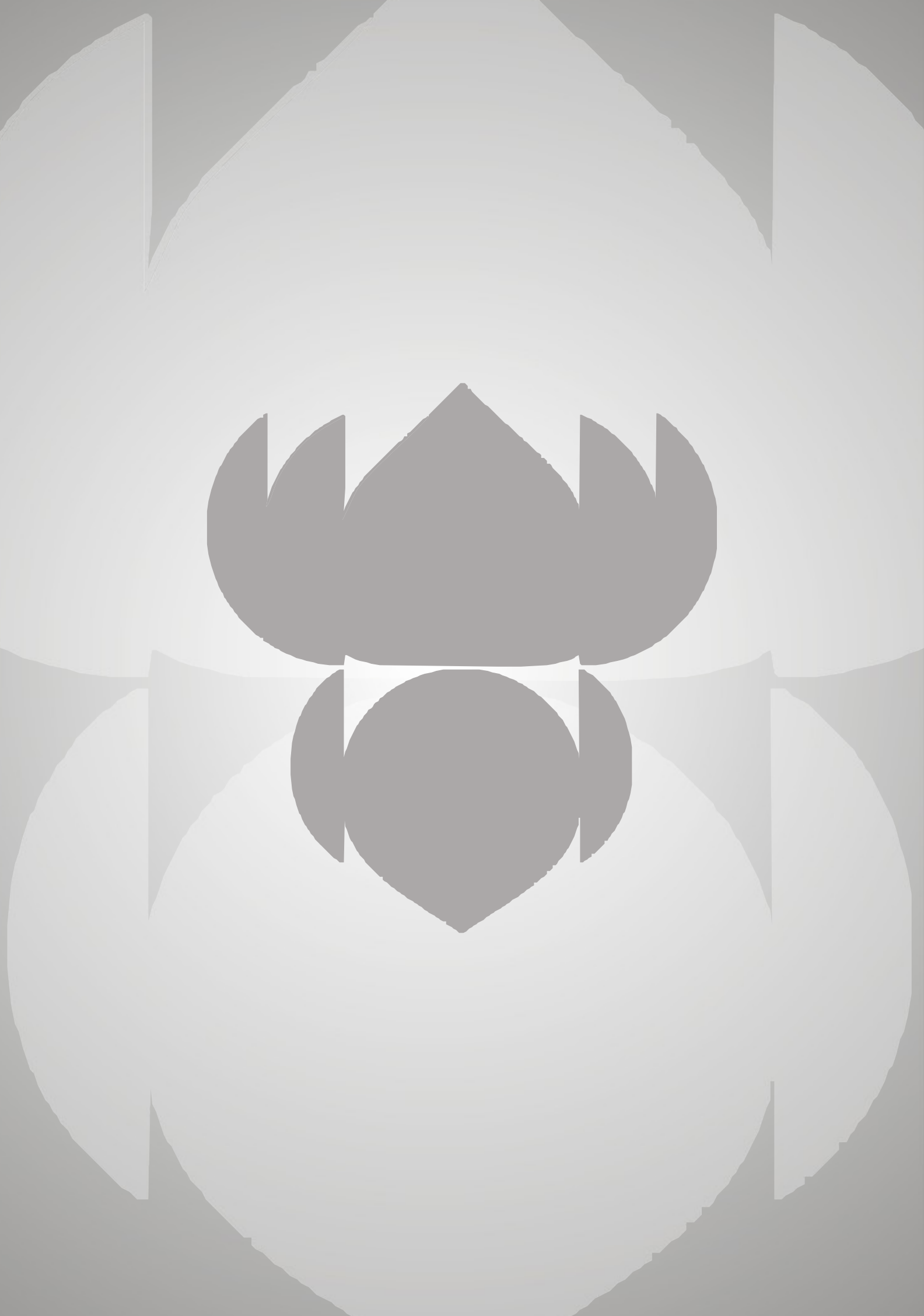
BEST WRITING ON CINEMA

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक	186	Best Book on Cinema
सर्वश्रेष्ठ फिल्म समीक्षक	188	Best Film Critic
विशेष उल्लेख	189	Special Mention

फिल्म अनुकूल प्रदेश पुरस्कार

FILM FRIENDLY STATE AWARD

सर्वश्रेष्ठ फिल्म अनुकूल राज्य	192	Most Film Friendly State
विशेष उल्लेख		Special Mention



दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार
DADASAHEB PHALKE AWARD

63^{वें}
राष्ट्रीय
फ़िल्म
पुरस्कार
2015
NATIONAL FILM
AWARDS 2015

दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार
भारतीय सिनेमा के संवर्धन और विकास
में अप्रतिम योगदान के लिए किसी एक
फ़िल्मी व्यक्तित्व को दिया जाता है।
इसके अंतर्गत पुरस्कार स्वरूप स्वर्ण
कमल, ₹10,00,000 /- प्रशस्ति पत्र
तथा शॉल प्रदान किया जाता है।
भारत सरकार ने वर्ष 1969 में भारतीय
सिनेमा के जनक, धुंडिराज गोविन्द
फ़ाल्के के सम्मान में इसे स्थापित
किया था।

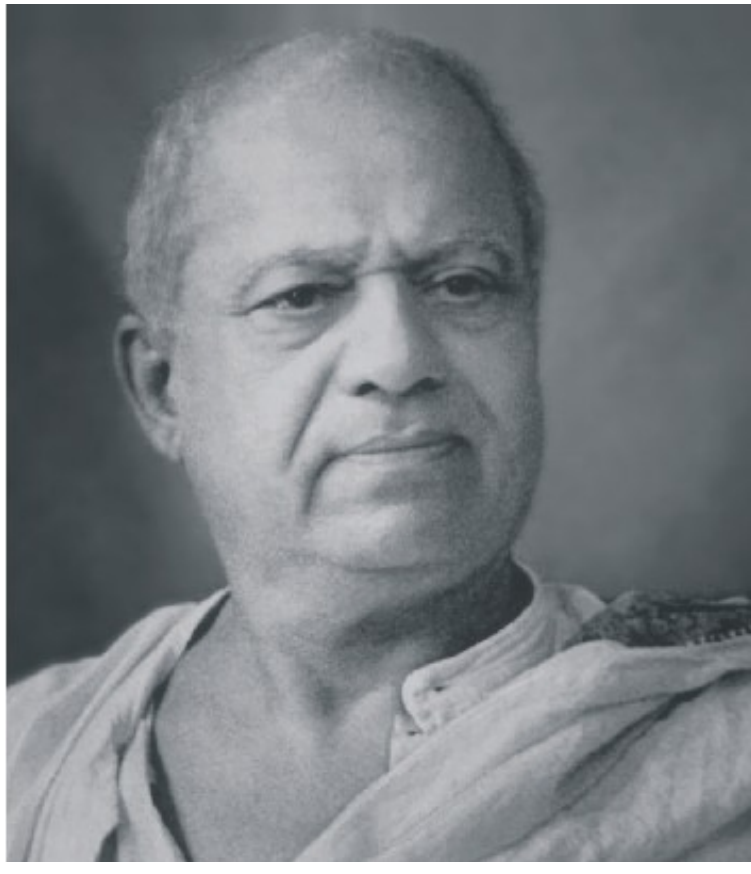
The Dadasaheb Phalke Award
is given to a film personality for
his / her outstanding contribution
to the growth and development
of Indian Cinema. The Award
comprises a Swarna Kamal, a
cash Prize of ₹10,00,000/-
(Rupees Ten Lakh) and a shawl.
The award was instituted in
1969 by the government in
honour of the father of Indian
Cinema, Dhundiraj Govind
Phalke.

दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार DADASAHEB PHALKE AWARD

भारतीय सिनेमा के जनक धुंडिराज गोविंद फाल्के या दादासाहब फाल्के (1870–1944) ने 1913 में भारत की पहली फीचर फिल्म *राजा हरिश्चंद्र* के द्वारा एक विलक्षण नवोन्मेषी फिल्मी जीवन की शुरुआत की। निर्माता, निर्देशक और पटकथा लेखक के रूप में उन्होंने अपनी कंपनी हिंदुस्तान फिल्मस के द्वारा सिर्फ 15 सालों में 95 फीचर फिल्मों और 26 लघु फिल्मों का निर्माण किया। उनकी महत्त्वपूर्ण फिल्मों में *मोहिनी भस्मासुर* (1913), *सत्यवान सावित्री* (1914), *लंका दहन* (1917), *श्री कृष्ण जन्म* (1918) और *कालिया मर्दन* (1919) शामिल हैं।

तेजी से बदलता कैरियर, हठी स्वभाव और विदेश यात्राएं, 20वीं सदी के उषाकाल में एक पारिवारिक व्यक्ति के बजाए उन्हें 21वीं सदी के किशोर के ज्यादा नजदीक ले आते हैं। मुद्रण व्यवसाय में प्रवेश करने से पहले उन्होंने फोटोग्राफी स्टूडियो से अपना कार्य शुरू किया। फिर कला की शिक्षा

प्राप्त की और वे एक जादूगर और मंच कलाकार भी बने। चित्रकार राजा रवि वर्मा से प्रेरित होकर उन्होंने लीथोग्राफी और ओलियोग्राफी में दक्षता हासिल की। बाद में उन्होंने अपना प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किया। आधुनिकतम प्रौद्योगिकी और मशीनरी के बारे में सीखने के लिए उन्होंने जर्मनी की यात्रा भी की। हालांकि अपने भागीदार के साथ विवाद होने पर उन्होंने मुद्रण व्यवसाय छोड़ दिया। एक मूक फिल्म *दि लाइफ ऑफ क्राइस्ट* से गहरे रूप में प्रभावित होने पर उन्होंने फिल्म बनाने का निर्णय लिया। उन्होंने



लंदन से एक कैमरा, प्रिंटिंग मशीन, परफ़ोरेटर और कच्चा माल खरीदा। उन्होंने वहीं पर फिल्म बनाने का क्रैश कोर्स भी किया। इसके बाद उन्होंने भारत की पहली फीचर फिल्म *राजा हरिश्चंद्र* बनायी। इस फिल्म को 1913 में बंबई के कोरोनेशन सिनेमा में प्रदर्शित किया गया और उसे अपार सफलता मिली। प्रथम विश्वयुद्ध के कारण भयंकर वित्तीय और कच्चे माल का संकट पैदा हो गया

था, फिर भी उनका हौसला पस्त नहीं हुआ। उन्होंने लघु, वृत्तचित्र, शिक्षाप्रद, ऐनिमेशन और हास्य फिल्में बनायीं। जल्दी ही उन्होंने पाँच व्यावसायिकों की भागीदारी में एक फिल्म कंपनी हिंदुस्तान फिल्मस की स्थापना की, जिसमें एक स्टूडियो था और प्रशिक्षित टेक्नीशियन और अभिनेता भी थे। एक बार फिर वे अपने भागीदारों के साथ संकट में फंस गये और उन्होंने कंपनी छोड़ दी।

फाल्के ने कुछ और फिल्मों का निर्देशन किया लेकिन वे अब अवरोध महसूस करने

लगे थे। 1931 के बाद उनकी मूक फिल्में सवाक फिल्मों के साथ प्रतिद्वंद्विता नहीं कर पा रही थीं। उनकी अंतिम फिल्मों में *सेतु बंधन* (1932) और सवाक फिल्म *गंगावतरण* (1937) थीं। 1944 में उनका देहावसान हो गया। दादा साहब फाल्के ने फिल्मों की एक महान परंपरा का सूत्रपात किया। उन्होंने कई विपत्तियों और निजी त्रासदियों को झेला और ऐसे भारतीय फिल्म उद्योग की बुनियाद रखी जो आज विश्व में सर्वाधिक सफल और वैविध्यपूर्ण फिल्म उद्योग है।

दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार DADASAHEB PHALKE AWARD

Dhundiraj Govind Phalke or Dadasaheb Phalke (1870-1944) is regarded as the father of Indian cinema. He directed India's first feature film, *Raja Harishchandra*, in 1913, flagging off a remarkably inventive career. A producer, director and screenwriter, he is believed to have made a significant number of the 95 feature films and 26 short films that his company Hindustan Films made in barely 15 years. His amazing body of films include *Mohini Bhasmasur* (1913), *Satyavan Savitri* (1914), *Lanka Dahan* (1917), *Shri Krishna Janma* (1918) and *Kaliya Mardan* (1919).

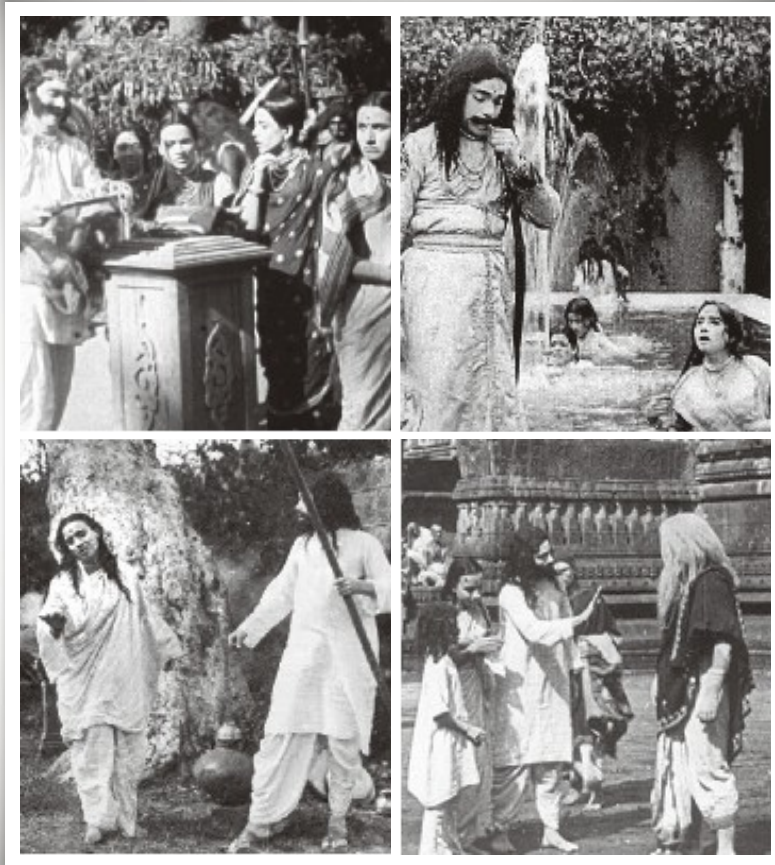
His rapid career switches, headstrong nature and trips abroad, more closely characterise a teenager in the 21st century, than a family man at the dawn of the 20th century. Starting out in a photography studio, he studied art, was a magician and stage performer, before joining the printing business. Inspired by the painter Raja Ravi Varma, Phalke specialised in lithographs and oleographs. Later, he started his own printing press, and even travelled to Germany to learn more about the latest technology and machinery. However, following a dispute with his partners, he quit the printing business. Greatly impressed by a silent film, *The Life of Christ*, he decided to make a film. He sailed for London and bought a camera, printing machine,

perforator and raw stock, and even got a crash course in film-making. He soon made *Raja Harishchandra*, on a righteous king who sacrifices his family and kingdom to fulfil a vow and uphold the truth. India's first feature film *Raja Harishchandra* was exhibited at Bombay's Coronation Cinema in 1913, and was a grand success. Undeterred when World War I brought a severe financial

and raw stock crunch, he made shorts, documentary features, educational, animation and comic films. Soon he established a film company, Hindustan Films, in partnership with five businessmen, with a studio, and trained technicians and actors. Again he ran into trouble with his partners and quit.

Phalke directed a few more films, but felt constrained. Moreover, his silent films were unable to cope with competition from the talkies after 1931. Among his

last films were *Setu Bandhan* (1932) and a talkie, *Gangavatan* (1937). He died in 1944. Dadasaheb Phalke leaves behind a pioneer's legacy, not only of his astonishing films, but a joyous inventiveness, and a resilient, unbowed spirit that weathered many reverses and personal tragedies. Little did he know then that he was laying the foundation for the Indian film industry, today the most prolific and diverse in the world.



पूर्ववर्ती दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS



01

देविका रानी रोेरिच
Devika Rani Roerich
■ 1969 ■



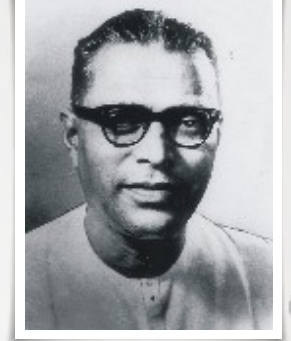
02

बी एन सरकार
B.N. Sircar
■ 1970 ■



03

पृथ्वीराज कपूर
Prithviraj Kapoor
■ 1971 ■



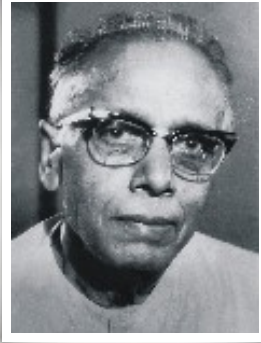
04

पंकज मल्लिक
Pankaj Mullick
■ 1972 ■



05

सुलोचना (रूबी मेयर्स)
Sulochana (Ruby Myers)
■ 1973 ■



06

बी एन रेड्डी
B.N. Reddy
■ 1974 ■



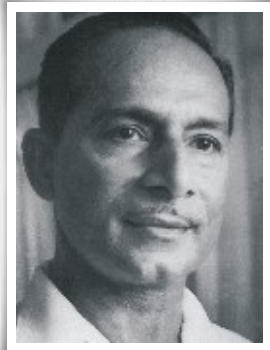
07

धीरेन गांगुली
Dhiren Ganguly
■ 1975 ■



08

कानन देवी
Kanan Devi
■ 1976 ■



09

नितिन बोस
Nitin Bose
■ 1977 ■



10

आर सी बोराल
R.C. Boral
■ 1978 ■



11

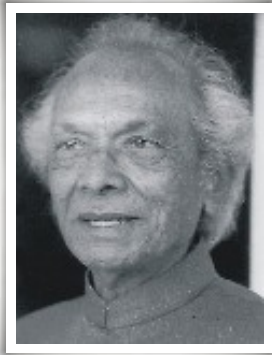
सोहराब मोदी
Sohrab Modi
■ 1979 ■



12

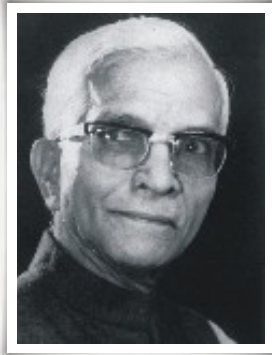
पी जयराज
P. Jairaj
■ 1980 ■

पूर्ववर्ती दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS



13

नौशाद अली
Naushad Ali
■ 1981 ■



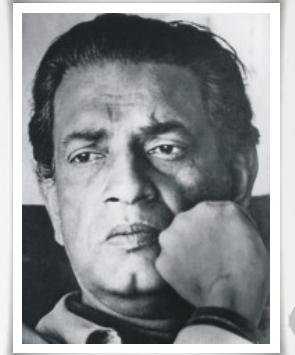
14

एल. वी. प्रसाद
L.V. Prasad
■ 1982 ■



15

दुर्गा खोटे
Durga Khote
■ 1983 ■



16

सत्यजीत राय
Satyajit Ray
■ 1984 ■



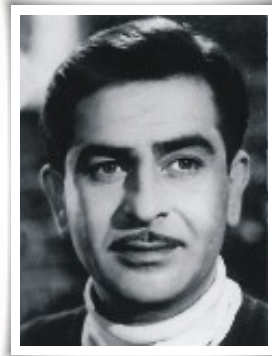
17

वी. शांताराम
V. Shantaram
■ 1985 ■



18

बी. नागी रेड्डी
B. Nagi Reddy
■ 1986 ■



19

राज कपूर
Raj Kapoor
■ 1987 ■



20

अशोक कुमार
Ashok Kumar
■ 1988 ■



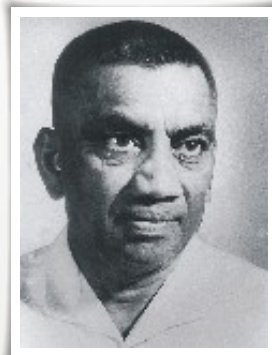
21

लता मंगेशकर
Lata Mangeshkar
■ 1989 ■



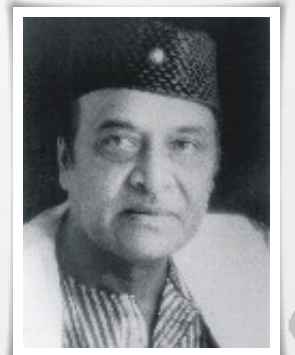
22

ए. नागेश्वर राव
A. Nageswara Rao
■ 1990 ■



23

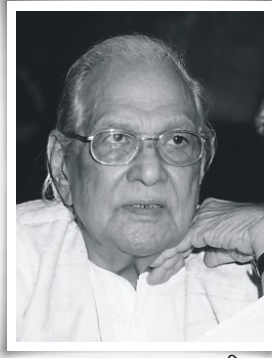
बी.जी. पेंठारकर
B.G. Pendharkar
■ 1991 ■



24

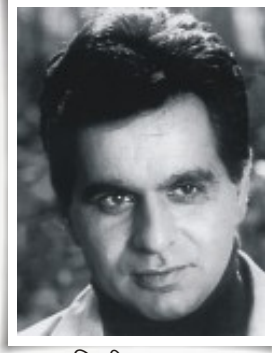
डॉ. भूपेन हज़ारिका
Dr. Bhupen Hazarika
■ 1992 ■

पूर्ववर्ती दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS



25

मज़रूह सुल्तानपुरी
Majrooh Sultanpuri
■ 1993 ■



26

दिलीप कुमार
Dilip Kumar
■ 1994 ■



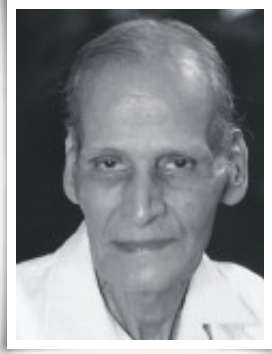
27

डॉ. राजकुमार
Dr. Rajkumar
■ 1995 ■



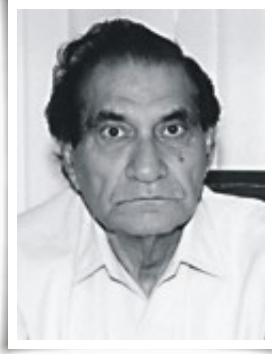
28

शिवाजी गणेशन
Shivaji Ganesan
■ 1996 ■



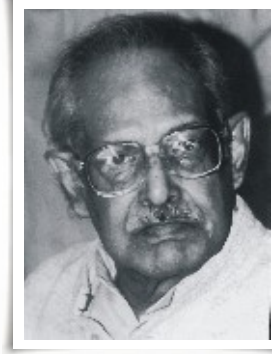
29

कवि प्रदीप
Kavi Pradeep
■ 1997 ■



30

बी.आर. चोपड़ा
B.R. Chopra
■ 1998 ■



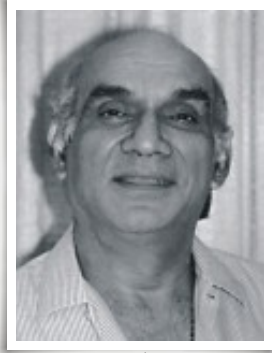
31

ऋषिकेश मुखर्जी
Hrishikesh Mukherjee
■ 1999 ■



32

आशा भोंसले
Asha Bhosle
■ 2000 ■



33

यश चोपड़ा
Yash Chopra
■ 2001 ■



34

देव आनंद
Dev Anand
■ 2002 ■



35

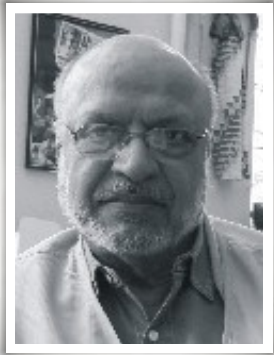
मृणाल सेन
Mrinal Sen
■ 2003 ■



36

अडूर गोपालाकृष्णन
Adoor Gopalakrishnan
■ 2004 ■

पूर्ववर्ती दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS



37

श्याम बेनेगल
Shyam Benegal
■ 2005 ■



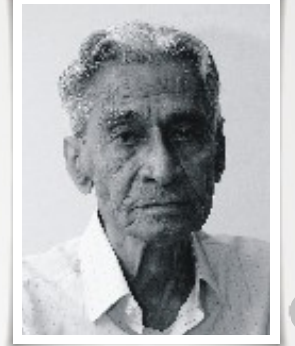
38

तपन सिन्हा
Tapan Sinha
■ 2006 ■



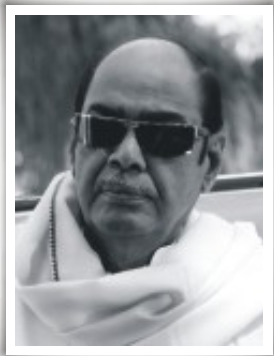
39

मन्ना डे
Manna Dey
■ 2007 ■



40

वी.के. मूर्ति
V.K. Murthy
■ 2008 ■



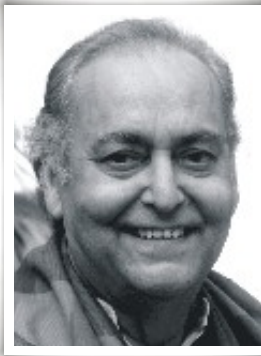
41

डी. रामानायडू
D. Ramanaidu
■ 2009 ■



42

के. बालाचंदर
K. Balachander
■ 2010 ■



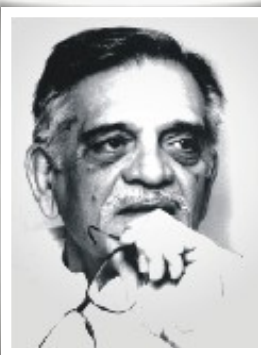
43

सौमित्र चटर्जी
Soumitra Chatterjee
■ 2011 ■



44

प्राण
Pran
■ 2012 ■



45

गुलज़ार
Gulzar
■ 2013 ■



45

शशि कपूर
Shashi Kapoor
■ 2014 ■

दादासाहेब फाल्के पुरस्कार समिति

DADASAHEB PHALKE AWARD COMMITTEE



लता मंगेशकर (Lata Mangeshkar)

हिन्दुस्तान की निर्विवाद रूप से सबसे महान प्लेबैक सिंगर, 'भारत कोकिला' लता मंगेशकर का जन्म नाट्य जगत के विख्यात गायक-अभिनेता दीनानाथ मंगेशकर के घर सन् 1929 में हुआ। उन्होंने मास्टर विनायक की फिल्मों से बाल कलाकार के रूप में सिनेमा जगत में प्रवेश किया और *महल* (1949) के सम्मोहित कर देने वाले गीत 'आयेगा आनेवाला' के साथ प्लेबैक गायक के रूप में अपना सिक्का जमा दिया। आगे आनेवाले साठ वर्ष हिन्दी सिनेमा में उनकी बेताज बादशाहत का दौर है। अन्य भाषाओं में भी उनके गीतों की धूम रही और 25,000 से ज्यादा गीत उनके खाते में दर्ज हैं। 1990 में उन्होंने गुलज़ार की *लेकिन* के निर्माण के साथ अपने प्रॉडक्शन हाउस की शुरुआत की और इसी फिल्म के लिए सर्वश्रेष्ठ फीमेल प्लेबैक सिंगर का राष्ट्रीय पुरस्कार भी जीता। उन्हें सिनेमा के सर्वोच्च सम्मान दादासाहेब फाल्के पुरस्कार तथा भारत रत्न से सम्मानित किया जा चुका है।

The voice of India, the greatest playback singer that India has produced, **Lata Mangeshkar** was born in 1929 to noted Sangeet Natak actor-singer Dinanath Mangeshkar. She started as a child artiste in Master Vinayak's films and broke through as a playback singer with the mesmerizing hit 'Aayega aanewala' in *Mahal* (1949). Over the next sixty years she was the undisputed queen of playback singing in Hindi cinema and also in a number of other languages, and is reputed to have sung over 25,000 songs across languages. In 1990, she launched her own production house, producing Gulzar's *Lekin*, which won her a National Film Award for Best Female Playback Singer. She is a recipient of the Bharat Ratna.



2

आशा भोंसले (Asha Bhosle)

आशा भोंसले भारतीय संगीत, विशेषकर हिन्दी फिल्म संगीत की महान हस्तियों में से एक हैं। 1943 में एक पार्श्व गायिका के तौर पर अपनी यात्रा की शुरुआत करते हुए उन्होंने अब तक एक हजार से भी अधिक फिल्मों के लिए गाने गाये हैं। आशाजी ने फिल्म संगीत, पॉप, ग़ज़ल, पारम्परिक भारतीय शास्त्रीय संगीत, लोकगीत आदि सभी विधाओं एवं शैलियों में गायन किया है। 2009 में वर्ल्ड रिकॉर्ड्स एकेडमी ने, जो विश्व रिकॉर्ड को प्रमाणित करने वाली एक अंतरराष्ट्रीय संस्था है, उन्हें 'मोस्ट रिकॉर्डेड आर्टिस्ट' के तौर पर मान्यता दी है। गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने भी संगीत के इतिहास में मोस्ट रिकॉर्डेड आर्टिस्ट के तौर पर आशाजी को आधिकारिक स्वीकृति दी है। उन्हें 2000 में दादासाहेब फाल्के पुरस्कार और 2008 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया जा चुका है।

Asha Bhosle is one of the legends of Indian music, particularly Hindi film music. Starting as a playback singer in 1943, she has sung for over a thousand films. Bhosle's work includes film music, pop, ghazals, traditional Indian classical music and folk songs. World Records Academy, an international organization which certifies world records, recognized her as the 'Most Recorded Artist' in the world in 2009. In 2011, she was acknowledged by the Guinness Book of World Records as the most recorded artist in music history. She is a recipient of the Dadasaheb Phalke Award in 2000 and the Padma Vibhushan in 2008.



3

नितिन मुकेश (Nitin Mukesh)

नितिन मुकेश महान गायक मुकेश के पुत्र हैं। अपने गुणी पिता के पदचिह्नों पर चलते हुए उन्होंने भी पार्श्व गायन के क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनाई। सत्तर के दशक के उत्तरार्ध में अपने करियर की शुरुआत करते हुए उन्होंने फिल्म नूरी के गीत 'ओ नूरी' के साथ अपनी कला की पहली छाप छोड़ी। अपने दौर के चर्चित संगीत निर्देशकों जैसे लक्ष्मीकान्त-प्यारेलाल, बप्पी लहरी, राजेश रौशन, नदीम श्रवण, खय्याम और आनंद-मिलिन्द के साथ काम करते हुए नितिन मुकेश ने कई प्रतिष्ठित पुरस्कार अपने नाम किए। इनमें मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रदान किया जानेवाला लता मंगेशकर सम्मान अलंकार प्रमुख है।

Nitin Mukesh is the son of the legendary singer Mukesh. He has followed in his father's footsteps and made a niche for himself in the world of playback singing. He started his career in the late 1970s and made a name with his song 'O Noorie' in the film *Noorie*. He has worked with notable music directors like Laxmikant Pyarelal, Bappi Lahiri, Rajesh Roshan, Nadeem Shrivani, Khayyam and Anand Milind. Among the numerous awards he has won is the prestigious Lata Mangeshkar Samman Alankar conferred by the Madhya Pradesh government.



अनूप जलोटा (Anup Jalota)

भजन गायकी के जानकार पुरुषोत्तम दास जलोटा के पुत्र **अनूप जलोटा** ने अपनी शुरुआती संगीत शिक्षा अपने संगीतज्ञ पिता से हासिल की। अपनी बहुमुखी प्रतिभा के लिए विख्यात लखनऊ के श्री जलोटा भजन, गज़ल, गीत एवं फ़िल्मी गानों को समान अधिकार के साथ गाते हैं। सन् 80 के दशक में उन्होंने आधुनिक भजन की नींव रखते हुए 100 से ज्यादा गोल्ड, प्लेटिनम और मल्टीप्लैटिनम डिस्क के साथ नया कीर्तिमान स्थापित किया। भक्ति संगीत के इस सबसे चमकते सितारे को विश्वस्तर पर विस्मयकारी संख्या में प्रशंसक हासिल हैं।

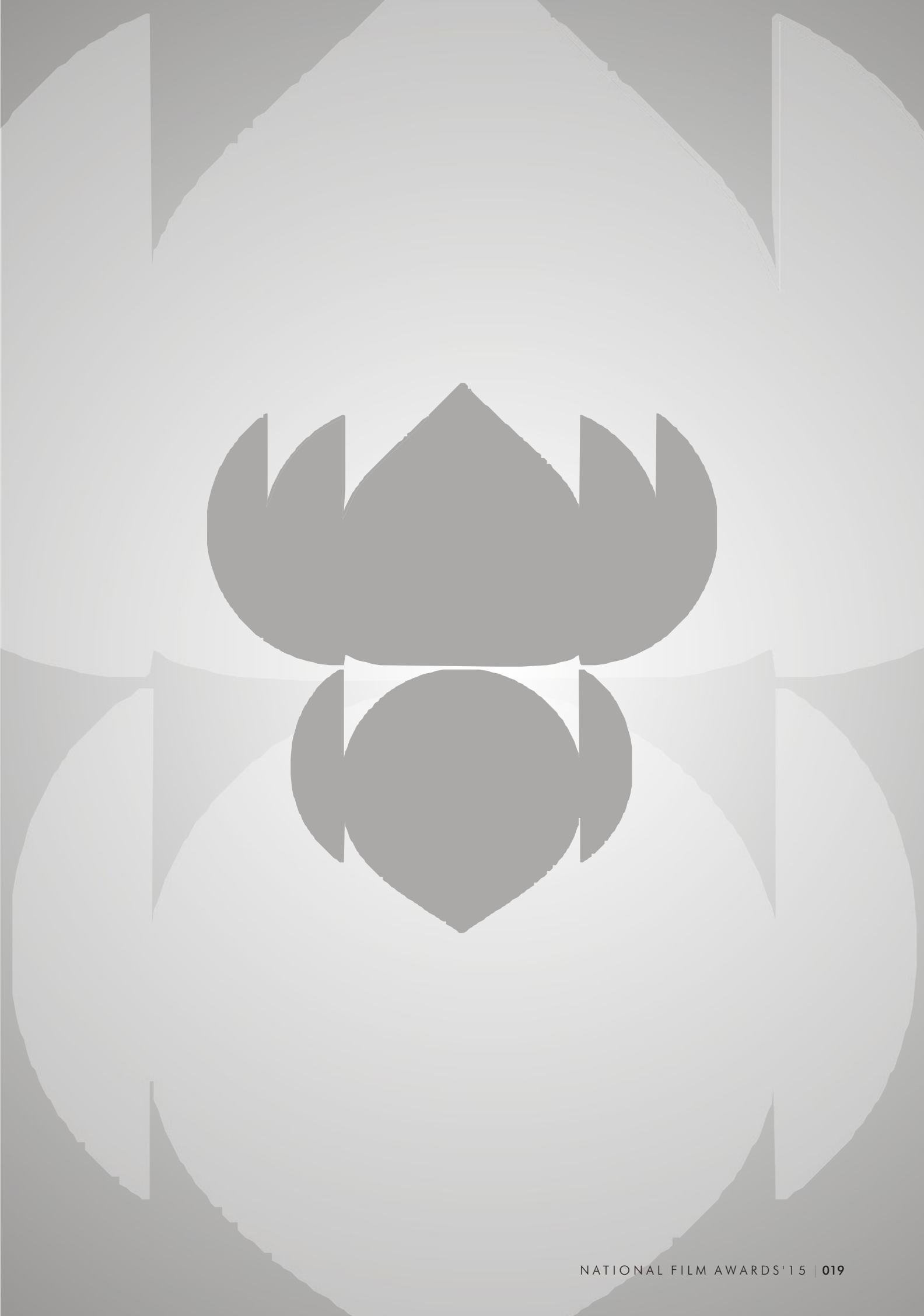
Son of Bhajan exponent Purshottam Das Jalota, **Anup Jalota** took his first lesson in music from his renowned father. Known for his versatility, this musician from Lucknow renders bhajan, ghazals, geets and film songs with equal grace and finesse. In the 1980s, he pioneered the modern bhajan, setting a new world record with more than 100 gold, platinum and multi-platinum discs. The superstar of devotional music enjoys an awesome global fan following.



सलीम खान (Salim Khan)

सलीम खान का सबसे खास परिचय ये है कि वे 'सलीम-जावेद' नामक लेखकीय जोड़ी, जिसे हिन्दी सिनेमा की 'सबसे सफल लेखक जोड़ी' होने का निर्विवाद तमगा हासिल है, के सलीम हैं। भारतीय सिनेमा जगत के पहले सितारा लेखक सलीम-जावेद के नाम *ज़ंजीर*, *दीवार* और *शोले* जैसी महानतम फिल्में दर्ज हैं। साल 1982 में इस जोड़ी के अलग होने के बाद सलीम खान ने *नाम*, *कब्ज़ा*, *तूफ़ान*, *जुर्म* तथा *अकेला* जैसी फिल्मों की पटकथाएं लिखीं लेकिन पुरानी सफलता से दूर रहे। उन्होंने देश के बड़े अखबारों में स्तम्भ भी लिखे और बाद के सालों में अपना बहुत सा समय 'बींग ह्यूमन' को दिया। 'बींग ह्यूमन' उनके तथा उनके बेटे सलमान खान द्वारा शुरु की गई स्वयंसेवी संस्था है।

Salim Khan is best known for being one half of the screen writing duo of Salim-Javed, described as 'the most successful scriptwriters of all-time'. They were the first scriptwriters in Indian cinema to achieve star status, with films like *Zanjeer*, *Deewaar* and *Sholay* to their credit. The duo split in 1982. After the split, Salim Khan wrote scripts for films like *Naam*, *Kabzaa*, *Toofan*, *Jurm* and *Akayla*, none of which worked the magic of his collaborations with Javed. Salim Khan writes columns in leading dailies and also devotes a large part of his time to 'Being Human', the NGO started by him and his son Salman Khan.





दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता परिचय
DADASAHEB PHALKE AWARD WINNER PROFILE

मनोज कुमार

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता, 2015

आधा दशक होने को आया उस फिल्म को जिसमें मनोज कुमार ने आज़ादी के मतवाले शहीद भगत सिंह की भूमिका को परदे के लिए लिखा था और अपने अभिनय से जिया था। शहीद देखने के बाद भगत सिंह की माताजी (स्वर्गीय श्रीमती विद्यावती) ने उनसे कहा, 'होगा तू मनोज कुमार दुनिया के लिए, मेरे लिए तो तू मेरा बेटा भगत सिंह है।' यह सुनकर मनोज कुमार का गला भर आया और वे उनके चरणों में गिर गए।



दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता परिचय

DADASAHEB PHALKE AWARD WINNER PROFILE



मनोज कुमार ने अपना फ़िल्मी सफरनामा 1957 में फ़िल्म *फ़ैशन* के साथ शुरू किया, जिसके निर्माता उनके भाई और उस्ताद स्वर्गीय श्री लेख राज भाखरी तथा उनके सहयोगी श्री कुलदीप सहगल थे। उन्नीस साल की उम्र में उन्होंने फ़िल्म में नब्बे साल के भिखारी की भूमिका निभाई थी। किस्मत उन पर तब मुस्कुराई जब विजय भट्ट की *हरियाली* और *रास्ता* सुपरहिट हो गई। मनोज कुमार अब सितारा थे।

जब पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने प्रीमियर पर *शहीद* देखी तो वे बहुत ही प्रभावित हुए और उन्होंने मनोज कुमार से अपने दिए नारे 'जय जवान, जय किसान' पर एक फ़िल्म बनाने का आग्रह किया। मनोज कुमार इस विचार से इतने प्रेरित हुए कि दिल्ली से वापस लौटते हुए रेलगाड़ी में ही उन्होंने अपनी पहली निर्देशकीय फ़िल्म *उपकार* की कहानी लिख डाली। स्वयं भारत के राष्ट्रपति डॉ. ज़ाकिर हुसैन ने डिलाइट सिनेमा हाल में फ़िल्म की स्क्रीनिंग देखी। *उपकार* ब्लॉकबस्टर हिट हुई और उसे क्लासिक का दर्जा मिला। इसके साथ ही 'भारत' का जन्म हुआ। मनोज कुमार को एक अभिनेता, निर्देशक, कहानी लेखक, पटकथा लेखक और उनकी विशेष फ़िल्म निर्माण शैली के लिए अलग से पहचाना जाने लगा। *शहीद* की तरह ही *उपकार* ने भी तीन राष्ट्रीय पुरस्कार जीते।

उनकी पत्नी शशि गोस्वामी ने उन्हें उनकी अगली फिल्म *पूरब और पश्चिम* का विचार सौंपा, जिसे उन्होंने संवारा। उन्होंने इसे ब्रेन डेन के मुद्दे और अनिवासी भारतीयों के अपनी धरती के प्रति फ़र्ज से जोड़ा। साठ और सत्तर के दशक में मनोज कुमार ने कई सफल फिल्मों में अभिनय किया, जैसे राज खोसला की *दो बदन* और *वो कौन थी*, राज कपूर की *मेरा नाम जोकर*, विजय भट्ट की *हिमालय की गोद में*। ये सभी गोल्डन जुबली हिट फिल्में थीं। इसके अलावा *पहचान*, *बेइमान*, *सन्यासी*, *गुमनाम*, *दस नम्बरी* जैसी अन्य सफल फिल्में भी थीं जिनमें उन्होंने शीर्षक भूमिका निभाई। इसके बाद उन्होंने *शोर*, *रोटी कपड़ा और मकान*, *क्रांति* जैसी फिल्में बनाई जो सभी ब्लॉकबस्टर हिट थीं।

मनोज कुमार ऐसे अकेले व्यक्ति हैं जिन्होंने छः भिन्न श्रेणियों में फिल्मफेयर पुरस्कार जीता है – अभिनेता, निर्देशक, कहानी लेखक, पटकथा लेखक, संवाद लेखक और संपादक। उन्हें वर्ष 1999 में फिल्मफेयर के लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें स्क्रीन तथा फिल्म प्रॉड्यूसर्स गिल्ड द्वारा भी लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

मनोज कुमार ने कई गीत लिखे हैं और अपनी फिल्मों में कई गीतों तथा एक्शन दृश्यों के संयोजन का श्रेय भी उन्हें जाता है। उनकी संगीत की समझ कमाल की है और इसकी झलक उनकी फिल्मों के अत्यन्त सफल – *शहीद* फिल्म के 'ऐ वतन ऐ वतन' तथा 'मेरा रंग दे बसन्ती चोला', *उपकार* के 'मेरे देश की धरती', *पूरब और पश्चिम* के 'भारत का रहने वाला हूँ', *शोर* के 'एक प्यार का नगमा है', *रोटी कपड़ा और मकान* के 'मैं ना भूलूंगा' तथा *क्रांति* के 'जिन्दगी की ना टूटे लड़ी' जैसे गीतों में मिलती है।

दशकों से मनोज कुमार आधुनिक भारत में देशभक्ति का चेहरा रहे हैं, और यह सफर आज तक जारी है। दादासाहब फाल्के पुरस्कार की खबर सुनते ही मनोज कुमार, जो फ़िलहाल पीठ और पैर की तकलीफ से परेशान हैं, ने निर्देशक के रूप में अपनी वापसी की घोषणा कर दी। उन्होंने कहा, 'मैं कभी सन्यास नहीं ले सकता। सैनिक हूँ, हमेशा मोर्चे पर रहूंगा।'



दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता परिचय
DADASAHEB PHALKE AWARD WINNER PROFILE

Manoj Kumar
Dadasaheb Phalke Award Winner, 2015

It's been half a century since Manoj Kumar wrote and lived the role of the great freedom fighter and martyr Bhagat Singh. After seeing the film, *Shaheed*, Bhagat Singh's mother, Late Smt. Vidyawati told him, 'You are Manoj Kumar for the world, but for me you are my son Bhagat Singh.' Manoj Kumar choked with emotions and fell at her feet.

Manoj Kumar started his career in 1957 when he first appeared in a film called *Fashion*, made by his cousin and mentor, Late Sh. Lekh Raj Bhakri, and his associate Shri Kuldeep Sehgal. At the age of nineteen he appeared as a ninety-year-old beggar in the film. Lady luck smiled on him with the release of Vijay Bhatt's film, *Haryali Aur Raasta*, which became a super hit. Manoj Kumar became a star.





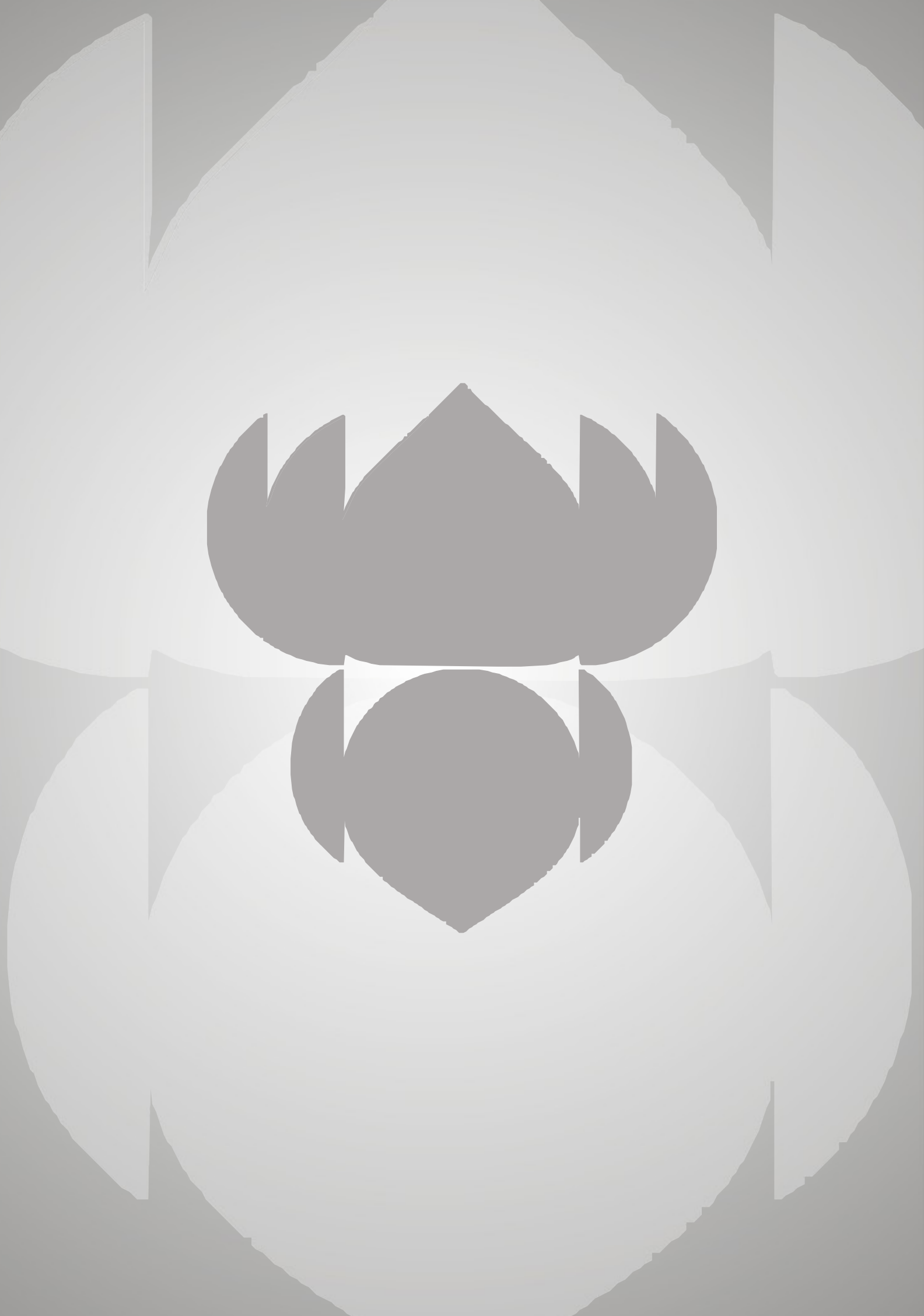
When former Prime Minister Lal Bahadur Shastri saw *Shaheed* at its premiere, he was highly impressed and asked Manoj to make a film on his slogan 'Jai Jawan Jai Kisan'. Manoj was so charged with this thought that on his way back from Delhi, in the train itself, he wrote the story of his first official directorial venture *Upkar*. The President of India, DrZakir Hussain, attended a screening of the film at Delite theatre. *Upkar* became a classic and also a blockbuster hit. And 'Bharat' was born. Manoj Kumar was recognized as an actor, director, storywriter, screenplay writer and for his unique film-making technique. Like *Shaheed*, *Upkar* also won three national awards.

His wife Shashi Goswami gave him the concept of his next film *Purab Aur Paschim*, which he developed. He incorporated in it the issue of brain drain and the duty of NRIs towards their motherland. In the 1960s and 1970s, Manoj Kumar starred in a number of successful films, including Raj Khosla's *Do Badan* and *Woh Kaun Thi*, Raj Kapoor's *Mera Naam Joker*, Vijay Bhatt's *Himalay ki Gode Mein*, all of which went on to be golden jubilee hits. Also films like *Pehchan*, *Baiman*, *Sanyasi*, *Gumnam*, *Dus Numbari* were great hits in which he played the lead role. Later he produced and made films like *Shor*, *Roti Kapada aur Makaan*, *Kranti*, all of which were blockbuster hits.

Manoj Kumar is the only person who has won Filmfare awards in six different categories, as actor, director, storywriter, screenplay writer, dialogue writer and editor. He received the Filmfare Lifetime Achievement Award in 1999. He also won the Lifetime Achievement award from Screen and Film Producers Guild, an association of the film industry.

He also wrote many songs and choreographed a lot of his songs and action sequences. He had a great music sense which led to great hits like 'Ae watan ae watan' and 'Mera rang de basanti chola' both from *Shaheed*, 'Mere desh ki dharti' from *Upkar*, 'Bharat ka rehene wala hun' from *Purab aur Paschim*, 'Ek pyaar ka nagma hai' from *Shor*, 'Main na bhoolunga' from *Roti Kapada aur Makaan*, 'Zindagi ki na toote ladi' from *Kranti*.

For decades, Manoj Kumar has remained the face of patriotism in modern India. The journey hasn't ended. On learning about the Dadasaheb Phalke Award, Manoj Kumar, who has been battling a bad back and a hurting hip, announced a return as a director soon, adding, 'I never retired, once a soldier, always a soldier.'



ज्युरी
JURY

63^{वें}
राष्ट्रीय
फ़िल्म
पुरस्कार
2015
NATIONAL FILM
AWARDS 2015

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार तीन वर्गों में दिये जाते हैं—फ़ीचर फ़िल्म, गैर-फ़ीचर फ़िल्म तथा सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन। प्रत्येक वर्ग के लिए अलग निर्णायक मण्डल होता है।

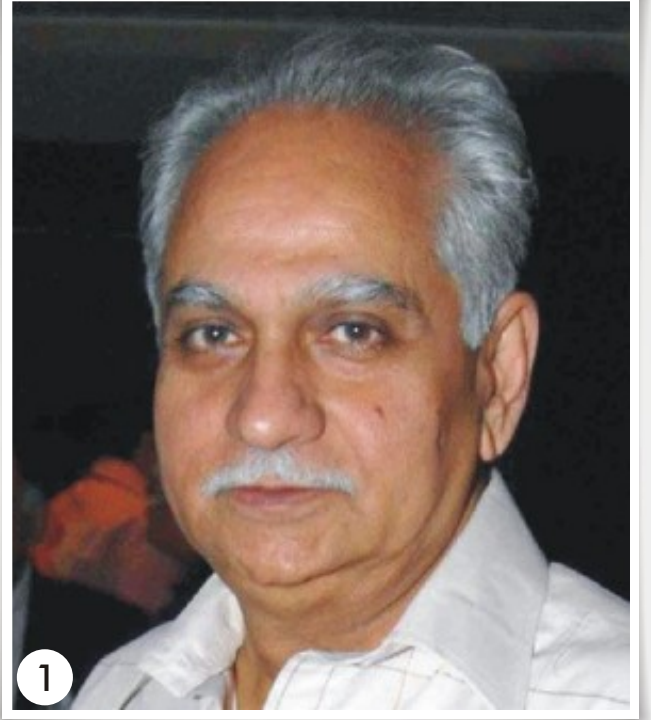
57वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कारों से फ़ीचर फ़िल्म श्रेणी में विजेताओं का चयन द्वि-स्तरीय समिति द्वारा किया जाता है। ये हैं पाँच प्रादेशिक समितियाँ और एक केन्द्रीय समिति। चयन समिति के सदस्य सिनेमा, संबद्ध क्षेत्रों और मानवीय शास्त्रों से जुड़े हुए प्रतिष्ठित लोग होते हैं। चयन प्रक्रिया के दौरान विचार-विमर्श पूर्ण रूप से गोपनीय होते हैं जिससे सदस्यों को बाहरी प्रभावों से दूर रखने में मदद मिलती है और पूरी स्वतन्त्रता, निष्पक्षता के साथ पुरस्कार विजेताओं का चयन किया जाता है।

The National Film Awards are given in three sections, viz., Feature Films, Non-Feature Films and Best Writing on Cinema. Each section has a different jury.

Since the 57th National Film Awards, the awards in feature film section are decided through a two-tier selection process comprising five regional panels and a central jury. The juries are distinguished persons in the field of cinema, other allied arts and humanities. The jury deliberations are confidential, which provides an enabling environment to insulate the jurors from external influences, and also facilitates selection with impartiality, freedom and fairness.

फीचर फिल्म केन्द्रीय ज्युरी (FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

अध्यक्ष (Chairman)



रमेश सिप्पी (Ramesh Sippy)

रमेश सिप्पी सत्तर के दशक के जानेमाने फिल्मकार हैं। निर्माता और वितरक जी.पी. सिप्पी की संतान रमेश सिप्पी ने *अन्दाज* (1971) के साथ अपना निर्देशकीय पदार्पण किया। इसके बाद आई *सीता और गीता* और *शोले* (1975) जिन्होंने हिन्दी सिनेमा में व्यावसायिक सफलता के नए मानदंड स्थापित किए। रमेश सिप्पी ने अस्सी के दशक के सबसे लोकप्रिय टेलिविजन धारावाहिकों में से एक, *बुनियाद* का निर्देशन भी किया है। सन् 2005 में उन्होंने आरएस एंटरटेनमेंट की स्थापना की और तब से इस बैनर तले कई फिल्मों का निर्माण कर चुके हैं। सन् 2010 में उन्हें फिल्म एंड टेलिविजन प्रॉड्यूसर्स गिल्ड का अध्यक्ष चुना गया। हाल ही में उन्हें पद्म श्री से सम्मानित किया गया है।

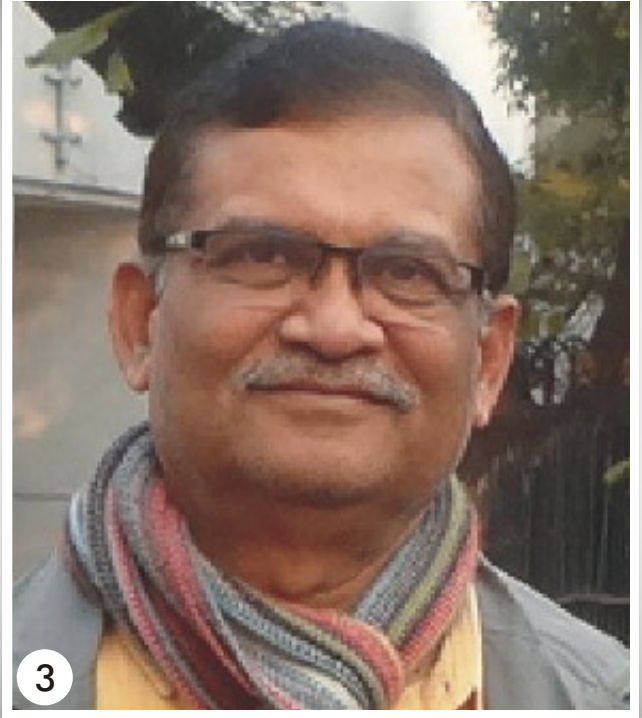
Ramesh Sippy is one of the major Hindi film-makers of the 1970s. Son of producer-distributor G.P. Sippy, Ramesh Sippy debuted as a director with *Andaz* (1971). He followed it up with the *Seeta Aur Geeta* and then *Sholay* (1975), which set the benchmark for commercial success in Hindi cinema. He also directed one of the most popular TV serials in India, *Buniyaad*. He established RS Entertainment in 2005 and has since produced a number of films under the banner. He was elected the president of the Film and Television Producers Guild of India in 2010. He has recently been conferred with the Padma Shri.

फीचर फिल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

संजीब दत्ता (Sanjib Dutta)

संजीब दत्ता फिल्म एवं टेलिविज़न संस्थान, पूना से 1990 में पढ़कर निकले। संपादक के रूप में उनके कार्य में *एक हसीना थी*, *इकबाल*, *तीन दीवारें*, *डोर* तथा *मर्दानी* जैसी फिल्में हैं। इसके अलावा वे कई बांग्ला फिल्मों पर भी काम कर चुके हैं जैसे *इति श्रीकांत*, *फालतू*, *कालपुरुष* तथा *जारा ब्रिश्चिते भिजेछिलो*।

Sanjib Datta passed out from FTII, Pune in 1990. His work as editor includes films like *Ek Hasina Thi*, *Iqbal*, *3 Deewarein*, *Dor* and *Mardaani*. He has worked in a number of Bengali films like *Iti Srikanta*, *Faltu*, *Kaalpurush* and *Jara Brishtite Bhijechhilo*.



ज्ञान सहाय (Gyan Sahay)

ज्ञान सहाय ने वर्ष 1975 में फिल्म और टेलिविज़न संस्थान पूना से सिनेमेटोग्राफी में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। गोविन्द निहलाणी के साथ कई फिल्मों में कार्य किया। टेलिविज़न पर उन्हें *इधर-उधर* तथा *देख भाई देख* जैसे धारावाहिकों तथा *अंताक्षरी* और *सारेगामापा* जैसे रियलिटी धारावाहिकों की वजह से जाना जाता है। उनकी फिल्म *बैरी पिया* को छायांकन का क्षेत्रीय पुरस्कार हासिल हुआ। दूरदर्शन के लिए उन्होंने कई धारावाहिकों का निर्माण किया है।

Gyan Sahay graduated from the FTII in 1975, specializing in cinematography. He worked with Govind Nihalani in a number of films. He is known for his work on television with shows like *Idhar Udhar*, *Dekh Bhai Dekh* and several reality TV shows, including *Antakshari* and *Saregamapa*. His feature film *Bairi Piya* received a regional award for best cinematography. He has produced and directed many fiction and non-fiction TV shows for Doordarshan.

फीचर फिल्म केन्द्रीय ज्युरी (FEATURE FILMS CENTRAL JURY)



4

धरम गुलाटी (Dharam Gulati)

धरम गुलाटी फिल्म एवं टेलिविज़न संस्थान, पूना से पढ़े हैं और फिल्म/विज्ञापन/टेलिविज़न जगत के लिए पिछले तीस सालों से फोटोग्राफी/निर्देशक/निर्माता की भूमिकाओं में काम कर रहे हैं। वे रमेश सिप्पी, विनोद चोपड़ा, केतन मेहता, पंकज पाराशर, कल्पना लाजमी और स्वर्गीय विजय तेंदुलकर जैसी हस्तियों के साथ काम कर चुके हैं। इससे पहले वे अन्तरराष्ट्रीय ऐमी पुरस्कार (एशिया क्षेत्र), इंडियन टेलि अवार्ड्स, आईडीपीए अवार्ड्स तथा आईटीए की ज्युरी में रह चुके हैं।

Dharam Gulati is an alumni of FTII, and has worked in the film/advertising/TV industry for more than thirty years as director of photography/director/producer. He has worked with film-makers like Ramesh Sippy, Vinod Chopra, Ketan Mehta, Pankuj Parashar, Kalpana Lajmi and the Late Vijay Tendulkar. He has been on the jury of International Emmy Awards (Asian Region), Indian Telly Awards, IDPA Awards and ITA.

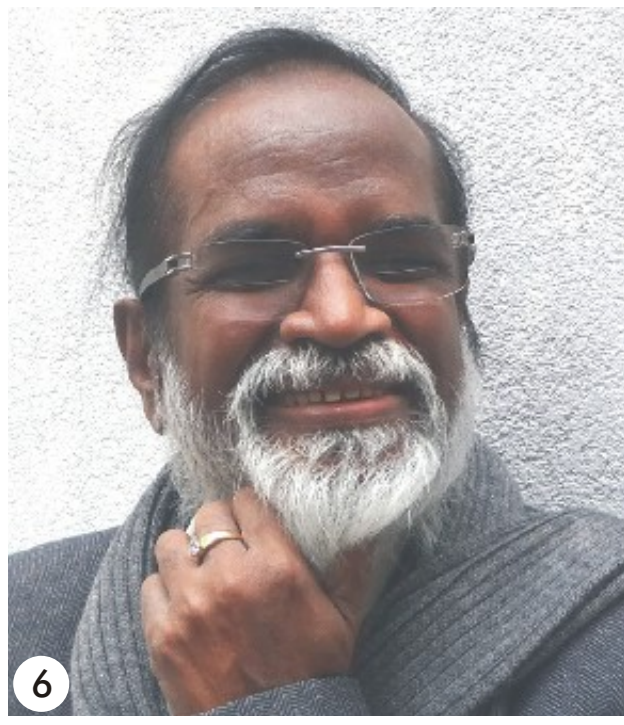


5

जॉन मथान (John Matthan)

जनसंचार में उपाधि हासिल करने के बाद **जॉन मैथ्यू मथान** ने विज्ञापन फिल्मों तथा वृत्तचित्र फिल्मों बनाकर खूब नाम कमाया और पुरस्कार जीते। साल 2000 में उन्हें अपनी पहली फिल्म *सरफरोश* के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार हासिल हुआ। उनकी दूसरी फिल्म *शिखर* पर्यावरणीय मुद्दों पर केन्द्रित है।

After his post-graduation in mass communication, **John Mathew Matthan** made advertising and documentary films which went on to win several awards. In 2000, he won the National Award for his debut film *Sarfarosh*. His second film *Shikhar* dealt with environmental issues.

फीचर फिल्म केन्द्रीय ज्युरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

6

गंगई अमेरन (Gangai Amaran)

गंगई अमेरन बहुप्रतिभाओं के धनी व्यक्तित्व हैं। गायक, संगीतकार, रचयिता, गीतकार, निर्माता/निर्देशक। उन्होंने 3000 से ज्यादा गीत लिखे हैं और वे तमिल, तेलुगु, कन्नड़ तथा मलयालम में 180 से अधिक फिल्मों के लिए संगीत तैयार कर चुके हैं। लोक संगीत को भारतीय सिनेमा में लेकर आने में उनकी महति भूमिका मानी जाती है। वे कई प्रतिष्ठित राज्य पुरस्कारों से सम्मानित हैं, जिनमें कलाईमामानी प्रमुख है।

Gangai Amaran is a multifaceted talent: vocalist, musician, composer, lyricist, producer/director of motion pictures. He has penned over 3000 songs and composed and directed music for over 180 films in Tamil, Telugu, Kannada and Malayalam. He is considered a pioneer in introducing folk music to movies. He is the winner of several state awards including the prestigious Kalaimamani.



7

के. वासु (K. Vasu)

के. वासु क्षेत्रीय सिनेमा में चालीस से ज्यादा साल का अनुभव रखने वाले फिल्मकार, लेखक, और निर्माता हैं। तीन भाषाओं में उन्होंने चालीस फिल्मों का निर्माण किया है, जिसमें हास्य, मार-धाड़ से लेकर धार्मिक फिल्मों जैसे विविध विषय शामिल हैं। उनके खाते अट्टारह सुपर हिट फिल्में दर्ज हैं और महानायक चिरंजीवी तथा गायक एस. पी. बालासुब्रमणियम को सिनेमा जगत में लाने का श्रेय भी उन्हें ही जाता है।

K. Vasu is a film-maker, writer and producer with over forty years of experience in regional cinema. He has made forty films in three languages in a wide variety of genres, such as comedy, action and devotional. He has had eighteen super-hit films to his credited and has the distinction of introducing superstar Chiranjeevi and singer S.P. Balasubramanyam to films.

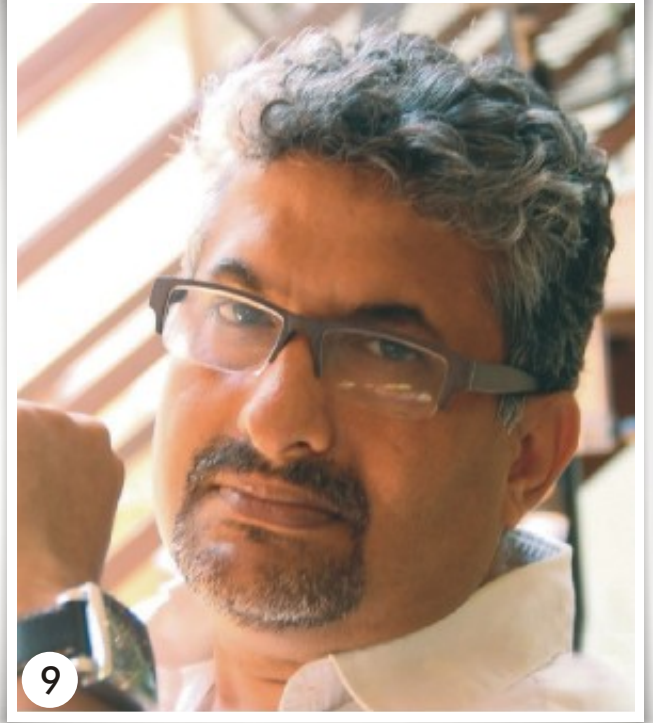
फीचर फिल्म केन्द्रीय ज्युरी (FEATURE FILMS CENTRAL JURY)



प्रोफेसर एस. आर. लीला (S.R. Leela)

प्रोफेसर एस. आर. लीला संस्कृत भाषा की अध्येता हैं जिन्होंने भारत वर्ष के आधारभूत साहित्यिक ग्रंथों का विशद अध्ययन किया है। संस्कृत में नाटक करने की चाह ले कर उन्होंने अभिनय भारती नामक समूह का निर्माण किया और आगे जाकर इस समूह ने भारतीय बौद्धिक परम्परा से परे जाकर नवीन विषयों पर वृत्तचित्रों का निर्माण किया। कन्नड, संस्कृत और अंग्रेजी मिला कर उन की कुल 20 से ज़्यादा किताबें प्रकाशित हैं। वे कन्नड भाषा की जानी मानी कॉलम लेखक भी रही हैं।

Prof. S.R. Leela is a Sanskrit scholar who passionately pursued the study of foundational literary marvels of India. With an urge to explore the potentiality of Sanskrit drama, she formed the Sanskrit theatre group Abhinaya Bharati, which has produced documentary films on topics unique to Indian intellectual and artistic tradition. She has authored about twenty books in Kannada, English and Sanskrit. She is also a columnist of repute in Kannada.



श्यामाप्रसाद (Shyamaprasad)

श्यामाप्रसाद को वर्ष 1989 में राष्ट्रमंडल छात्रवृत्ति से नवाजा गया और उन्होंने अपना स्नातकोत्तर फिल्म तथा मीडिया प्रॉडक्शन में *हॉल विश्वविद्यालय*, यूके से हासिल किया। उनकी फिल्मों ने उन्हें कई राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय पुरस्कार जिताए हैं। *अग्निसाक्षी*, *अकाले* और *कादल* सभी सर्वश्रेष्ठ मलयालम फिल्म पुरस्कार की क्रमशः वर्ष 1998, 2004 और 2007 में विजेता रही हैं। उनकी फिल्में कई प्रतिष्ठित फिल्म समारोहों का हिस्सा रही हैं। उनकी अन्य फिल्मों में *रितु*, *इलेक्ट्रा*, *अरीके*, *इंग्लिश*, *आर्टिस्ट* तथा *इविडे* शामिल हैं।

Shyamaprasad received the Commonwealth Scholarship in 1989 and did his master in film and media production at the Hull University, UK. His features have won him several national and state awards. *Agnisakshi*, *Akale* and *Ore Kadal* were adjudged the Best Malayalam film at the National Film Awards in 1998, 2004 and 2007. His films had been showcased in several prestigious film festivals. His other films include *Ritu*, *Elektra*, *Arike*, *English*, *Artist* and *Ivide*.

फीचर फिल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

10

सतीश कौशिक (Satish Kaushik)

बीते तीन दशकों में सतीश कौशिक ने एक अभिनेता – निर्देशक – निर्माता – लेखक की भूमिकाओं में काम करते हुए अपने लिए बॉलीवुड में एक खास जगह बना ली है। सौ से ज्यादा फिल्मों में विस्तारित उनका अभिनय कर्म कितने ही अमर किरदारों से समृद्ध है। सारा गैवरोन की ब्रिक लेन के साथ वे अन्तरराष्ट्रीय सिनेमा का भी पहचाना चेहरा बन गए हैं। निर्देशक के रूप में उनके खाते में *तेरे नाम*, *हम आपके दिल में रहते हैं*, *हमारा दिल आपके पास है*, *मुझे कुछ कहना है* जैसी सफल फिल्में दर्ज हैं।

Over the last three decades, **Satish Kaushik**, an alumnus of the NSD, has carved an undeniable niche for himself as a highly acclaimed actor-director-producer-writer in Bollywood, boasting a body of work that spans over a hundred films as an actor with cult characters which became hugely popular with Indian film audiences. He stepped into the international film circuit with Sarah Gavron's British film, *Brick Lane*. He is also a highly successful director with huge commercial entertainers such as *Tere Naam*, *Hum Aapke Dil Mein Rehte Hain*, *Hamara Dil Aap ke Paas Hai*, *Mujhe Kuch Kehna Hai* under his belt.



11

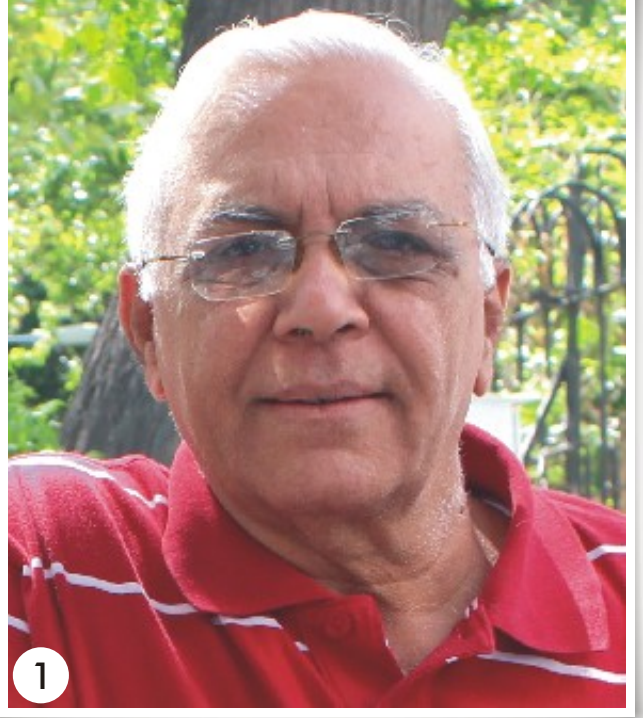
मुनिन बरुआ (Munin Barua)

मुनिन बरुआ असम के जाने माने नाटककार तथा राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्मकार हैं। सत्तर के दशक के उत्तरार्ध में एक पटकथा लेखक के रूप में अपना करियर शुरू करनेवाले बरुआ अब तक तकरीबन 35 फिल्में लिख चुके हैं, जिनमें से 13 का निर्देशन भी उन्होंने खुद किया है। इस समय वे एफएफए के अध्यक्ष हैं। यह संस्था असम से जुड़े कलाकारों, तकनीशियनों तथा संगीतकारों का समूह है।

Munin Barua is a noted playwright and National Award-winning film-maker from Assam. Starting his career as a scriptwriter in the late 1970s, he has so far written around thirty-five films, directing thirteen of those. He is now president of FFA, an association of artists, technicians and cine musicians of Assam.

गैर-फीचर फिल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(NON-FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

अध्यक्ष (Chairman)



विनोद गनात्रा (Vinod Ganatra)

विनोद गनात्रा ऐसे अकेले भारतीय हैं जिन्हें उनकी फिल्म *हरुण-अरुण* के लिए लिव उल्मान शांति पुरस्कार, शिकागो से सम्मानित किया जा चुका है। भारतीय फिल्म और टेलिविज़न जगत में 1982 से सक्रिय गनात्रा 400 से ज्यादा वृत्तचित्रों और न्यूज़रील का संपादन और निर्देशन कर चुके हैं। वे बाल चित्र समिति, भारत सरकार के लिए तीन बच्चों की फिल्मों भी बना चुके हैं, जिन्होंने अनेक राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार जीते। दुनिया घूम चुके श्री गनात्रा इससे पहले भी अनेक अन्तरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों और चयन समितियों के सदस्य रह चुके हैं।

Vinod Ganatra, the only Indian recipient of the Liv Ullmann Peace Prize, Chicago, for his film *Harun-Arun*, has been active in film and television from 1982. He has edited and directed about 400 documentaries and newsreels. He has also made three children's films for CFSI which have won a number of national and international awards. Widely travelled, he has also served on juries of several international film festivals and selection panels.

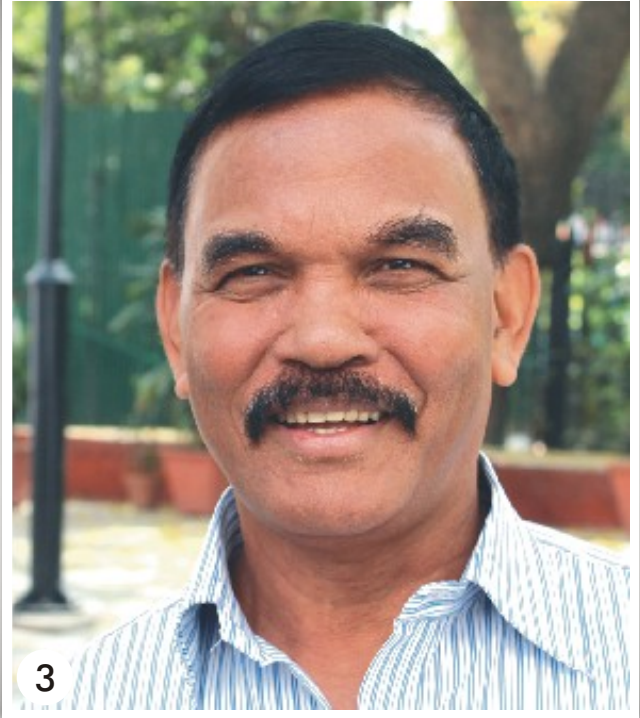
गैर-फीचर फिल्म केन्द्रीय ज्युरी (NON-FEATURE FILMS CENTRAL JURY)



पिंकी ब्रह्मा चौधरी (Pinky Brahma Choudhury)

पिंकी ब्रह्मा चौधरी ने फिल्म निर्देशन में डिप्लोमा फिल्म एवं टेलिविज़न संस्थान, पूना से हासिल किया है। वे एसपीएस सामुदायिक मीडिया की संस्थापक एवं वर्तमान निर्देशक हैं। यह संस्था सुदूर मध्य भारत के अकालग्रस्त आदिवासी इलाके में कार्यरत है। यह विकास का एक वैकल्पिक मॉडल खड़ा करने के लिए प्रयासरत है जहाँ समता, संरक्षण और जन सशक्तिकरण के सिद्धान्त आधारबिन्दु बनें। एसपीएस सामुदायिक मीडिया द्वारा निर्मित फिल्में समूचे विश्व में शिक्षा के क्षेत्र में एक टूल के तौर पर इस्तेमाल होती रही हैं और इन्हें कई राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में सराहा गया है।

Pinky Brahma Choudhury did her postgraduate diploma in film direction from the FTII. She is at present director and founder of SPS Community Media which has been working in one of the most remote, drought-prone, tribal areas of central India. It aims to develop an alternative model of development based on the principles of equity, sustainability and people's empowerment. Films produced by SPS Community Media are used as tools for learning across the world and have been appreciated in both national and international film festivals.



राजन राजखोवा (Rajan Rajkhowa)

राजन राजखोवा फिल्म एवं टेलिविज़न संस्थान, पुणे से स्नातक हैं। वे *गांधी*, *ऑक्टोपसी* और *ए पैसेज टू इंडिया* जैसी अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त फिल्मों के निर्माण से जुड़े रहे हैं और जानू बरुआ, मुकुल आनंद और कमल हासन जैसे फिल्मकारों के साथ काम कर चुके हैं। वे कई विज्ञापन फिल्में, वृत्तचित्र और कॉर्पोरेट फिल्में बना चुके हैं। इसके अलावा वे दूरदर्शन के गुवाहाटी, इटानगर और सिलचर केन्द्रों के लिए अनेक टेलिविज़न धारावाहिकों का निर्माण भी कर चुके हैं। वे बहुपुरस्कृत असमिया फिल्म *सपोन* के निर्माता-निर्देशक हैं।

Rajan Rajkhowa graduated from the FTII, Pune. He has been associated with international productions like *Gandhi*, *Octopussy* and *A Passage to India*, and has assisted film-makers like Jahnu Barua, Mukul Anand and Kamal Hassan. He has produced various advertisement films, documentaries and corporate films and many TV serials for Doordarshan Guwahati, Itanagar and Silchar. He also produced and directed the award-winning Assamese feature film *Sapon*.

गैर-फीचर फिल्म केन्द्रीय ज्युरी (NON-FEATURE FILMS CENTRAL JURY)



विजयकृष्णन (Vijaykrishnan)

आलोचक **विजयकृष्णन** के सिनेमा लेखन और गंभीर सिनेमा अध्ययन की मलयालम फिल्म जगत में विशिष्ट पहचान है। सन् 1981 में अपनी किताब *चलचित्र समीक्षा* के लिए वे सिनेमा पर लिखी सर्वश्रेष्ठ पुस्तक का राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुके हैं। उनकी पहली फिल्म *निधियुदे कथा* सन् 1986 में आई थी। पन्द्रह टेलिविजन धारावाहिक, उन्नीस टेलिफिल्म्स और नौ वृत्तचित्र उनके समृद्ध रचनाकर्म का हिस्सा हैं। सन् 2009 में उन्होंने *दलमारमारंगल* तथा 2011 में *उम्मा* फिल्मों का निर्देशन भी किया है।

Vijaykrishnan's critical writings on cinema and his studies based on it made him a well-known name in the Malayalam film industry. He won the National Award for Best Book on Cinema in 1981 for his book *Chalachitra Sameeksha*. He made his debut film *Nidhiyude Kadha* in 1986. He has made fifteen TV serials, nineteen tele-films and nine documentaries. He directed the feature film *Dalamarmarangal* in 2009 and *Umma* in 2011.



एस. एम. वसंत (वसंत साई) (MM Vasant / Vasanth Sai)

वसंत साई ने *इंडियन एक्सप्रेस* के साथ अपनी पत्रकारिता की शुरुआत की। वे 500 से ज्यादा लेख और 100 से ज्यादा लघुकथाएं लिख चुके हैं। उनके निर्देशकीय करियर की शुरुआत *केलदी कनमनी* से हुई, जिसे तमिल सिनेमा इतिहास की सर्वश्रेष्ठ दस फिल्मों की सूची में शामिल किया जाता है। पहली फिल्म की सफलता के बाद वे दस और फिल्मों निर्देशित कर चुके हैं, जिन सभी ने सफलता के झंडे गाड़े और जो आलोचकों द्वारा भी सराही गईं। फीचर फिल्मों से इतर वे लघु फिल्में, वृत्तचित्र, कॉर्पोरेट फिल्मों और विज्ञापन फिल्मों भी निर्देशित करते रहे हैं।

Vasanth Sai started his career as a journalist in the *Indian Express*. He has written 500 articles and 100 short stories. He debuted as director with *Keladi Kanmani*, regarded by many as one of the ten best Tamil films ever. Since then he has directed ten more films, which have all been blockbusters and won critical acclaim. Apart from feature films he has directed short films, documentaries, corporate films and advertisement films.

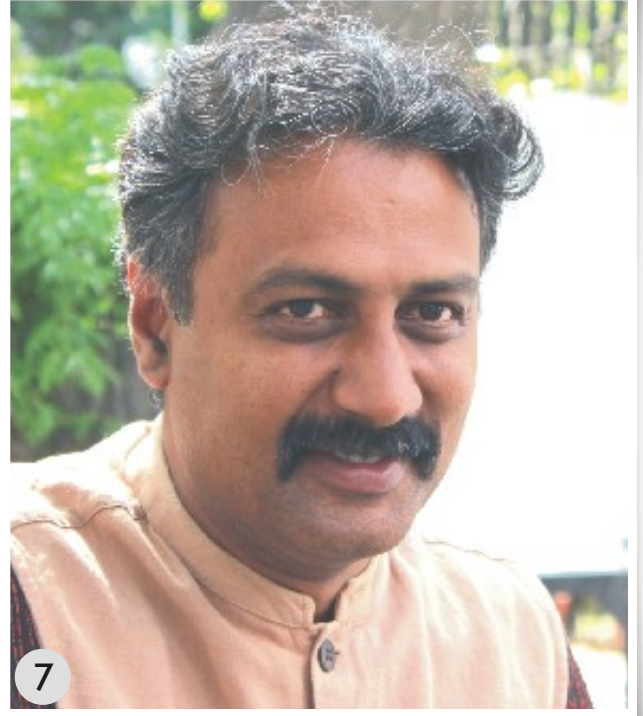
गैर-फीचर फिल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(NON-FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

6

नीलाभ कौल (Neelaabh Kaul)

फिल्म एवं टेलिविज़न संस्थान, पूना से पढ़े नीलाभ कौल बहुरंगी अनुभव कौशल से सम्पन्न सिनेमैटोग्राफर हैं, जिनका दायरा लघु फिल्मों और वृत्तचित्रों से भिन्न प्रकार की फीचर फिल्मों तक फैला है। वे राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त तारा (उड़िया) और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सराही गई आभास से लेकर मुख्यधारा के हिन्दी सिनेमा की आलोचकीय सराहना प्राप्त छल तथा लाहौर जैसी फिल्मों के सिनेमैटोग्राफर रहे हैं।

An alumnus of FTII, Pune, **Neelaabh Kaul** is a cinematographer with a wide range of experience from short films and documentaries to cinematography of feature films ranging from the National Award-winning *Tara* (Odiya) and the internationally acclaimed *Abhaas* to Hindi commercial mainstream cinema, like the critically acclaimed *Chhal* and the award-winning *Lahore*.



7

के. सुचेन्द्र प्रसाद (Suchendra Prasad)

के. सुचेन्द्र प्रसाद ने रंचमच पर निर्देशन की कमान संभाली है और फिल्म, टेलिविज़न, रेडियो के लिए संगीत निर्देशित किया है, कोरिओग्राफ़ किया है, रचा है। वे फिल्म मेकिंग सिखाते हैं और अन्तरराष्ट्रीय प्लेटफॉर्म (डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डॉट वॉइसिंग साइलेंस डॉट कॉम) भी चलाते हैं। वे रंगमंच, टेलिविज़न के निर्देशक हैं। कई वृत्तचित्र, व्यावसायिक प्रमोशनल फिल्में भी बना चुके हैं। नई पटकथाओं को ज़मीन पर लाना और उन्हें लिखना, टेलिविज़न के लिए लेखन उनके कामों का हिस्सा है। उन्हें एक एनजीओ की स्थापना का श्रेय भी जाता है। वे मंच के कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाते रहे हैं और रंगमंच तथा फिल्म फेस्टिवल से गहरे जुड़े हैं। साथ ही वे एक लोकप्रिय अभिनेता और चर्चित निर्देशक भी हैं।

K. Suchendra Prasad has worked in theatre and has directed, choreographed, composed music for films, television and radio, written plays. He has taught film-making, directed for the stage, television, made numerous documentaries, promotional films for corporate houses, conceptualized and written film scripts, television series, talk shows, founded an NGO, coordinated stage shows, and conducted theatre as well as film festivals. He is also an accomplished actor and acclaimed director.

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन ज्युरी BEST WRITING ON CINEMA JURY

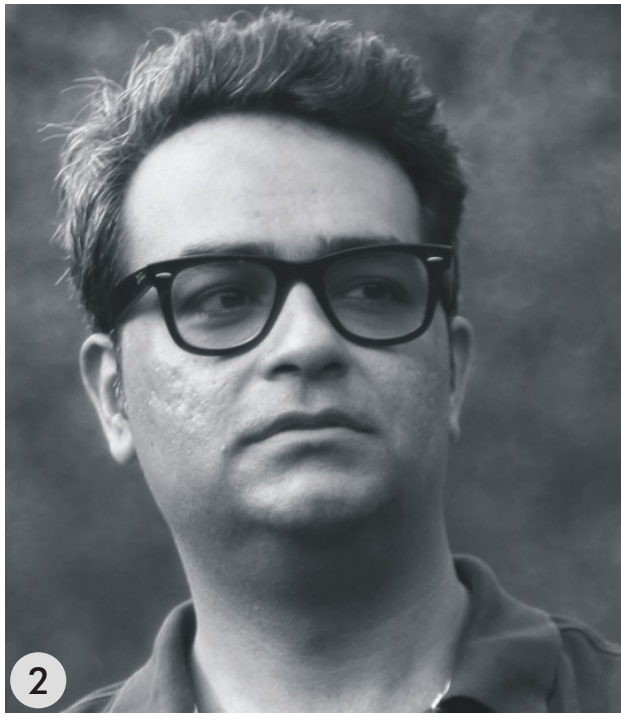
अध्यक्ष (Chairman)



अद्वैता काला (Advaita Kala)

अद्वैता काला पुरस्कृत पटकथा लेखक, अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित उपन्यासकार और जानी-पहचानी स्तम्भकार, टिप्पणीकार हैं। उनके खाते में *स्क्रीन अवार्ड*, *टाइम्स ऑफ इंडिया फिल्म अवार्ड*, *फेमिना पॉवरलिस्ट 2015 अवार्ड*, *जी सिने अवार्ड*, *फेसबुक एंड मिनिस्ट्री ऑफ चाइल्ड एंड विमन वेलफेयर 100 फीमेल अचीवर्स अवार्ड 2016* शामिल हैं। उनके पहले उपन्यास *ऑलमोस्ट सिंगल को वॉशिंगटन पोस्ट* ने 'फीमेल राइटिंग ब्रेकिंग शैकल्स' तथा *इंडिपेंडेंट* ने 'ब्रिजेट जॉस इन सारी' के प्रतिमानों से नवाजा। उनकी फिल्म *कहानी* स्त्री केन्द्रित फिल्मों में एक नए दौर की शुरुआत करनेवाली मानी जाती है।

Advaita Kala is an award-winning screenwriter, internationally published novelist and well-known columnist/commentator. Amongst the awards she has won are the Screen Award, Times of India Film Award, Femina Powerlist 2015 Award, Zee Cine Award, Facebook & Ministry of Child and Women Welfare 100 Female Achievers Award 2016. Her debut novel *Almost Single* was referred to as 'Female writing breaking shackles' by the *Washington Post* and 'Bridget Jones in a Saree' by the *Independent*. Her film *Kahaani* has been credited with ushering in a new phase in female-centric films.

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन ज्यूरी
BEST WRITING ON CINEMA JURY

गौतम चिंतामणि (Gautam Chintamani)

गौतम चिंतामणि पैदाइशी सिनेप्रेमी और *डार्क स्टार: दि लोनलीनेस ऑफ बींग राजेश खन्ना* (हार्पर कॉलिंस 2014) के लेखक हैं। आलोचकीय तारीफें प्राप्त यह पुस्तक हिन्दी सिनेमा के पहले सुपरस्टार राजेश खन्ना पर लिखी गई प्रथम सम्पूर्ण जीवनी है। उनका लेखन *इंडिया टुडे*, *आउटलुक*, *दि इंडियन क्वाटरली*, *दि पायोनियर*, *दि ट्रिब्यून*, *दि एशियन एज*, *दि टाइम्स ऑफ इंडिया*, *डेक्कन क्रॉनिकल*, *स्कॉल* तथा *डेली ओ* पर प्रकाशित होता रहा है। वे फिल्मकार भी हैं और कई वृत्तचित्र बना चुके हैं।

Gautam Chintamani is a born cinephile and the author of *Dark Star: The Loneliness of Being Rajesh Khanna* (HarperCollins, 2014), the first full-length biography of the original superstar of Hindi cinema which garnered rave reviews. His writing has appeared in *India Today*, *Outlook*, *The Indian Quarterly*, *The Pioneer*, *The Tribune*, *The Asian Age*, *The Times of India*, *Deccan Chronicle*, *Scroll* and *Daily O* amongst others. He is also a film-maker with a number of documentaries to his credit.



मनोज बोरपुजारी (Manoj Barpujari)

मनोज बोरपुजारी को राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2012 में सर्वश्रेष्ठ फिल्म आलोचक का पुरस्कार प्रदान करते हुए स्वर्ण कमल से सम्मानित किया गया। वे असम राज्य फिल्म पुरस्कार 2015 में भी सर्वश्रेष्ठ फिल्म आलोचक चुने गए हैं। उनके द्वारा लिखी और सम्पादित की बारह पुस्तकों में तीन सिनेमा से संबंधित हैं। वे एक सम्मानीय असमिया कवि हैं और गुवाहाटी में रहकर पत्रकारिता करते हैं।

Manoj Barpujari received the Swarna Kamal for the best film critic at the National Film Awards 2012. He was also adjudged the best film critic at Assam State Film Awards 2015. He has written and edited twelve books including three titles on cinema. He is an accomplished Assamese poet and a journalist based in Guwahati.

फीचर फिल्म ज्यूरी | पूर्व पैनल

FEATURE FILMS JURY | EAST PANEL

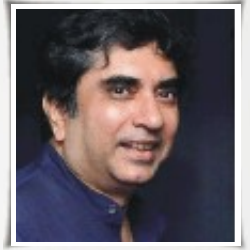


ज्ञान सहाय (अध्यक्ष) Gyan Sahay (Chairperson)

ज्ञान सहाय ने वर्ष 1975 में फिल्म और टेलिविज़न संस्थान पूना से सिनेमेटोग्राफी में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। गोविन्द निहलाणी के साथ कई फिल्मों में कार्य किया। टेलिविज़न पर उन्हें *इधर-उधर* तथा *देख भाई देख* जैसे धारावाहिकों तथा *अंताक्षरी* और *सारेगामापा* जैसे रियलिटी धारावाहिकों की वजह से जाना जाता है। उनकी फिल्म *बैरी पिया* को छायांकन का क्षेत्रीय पुरस्कार हासिल हुआ। दूरदर्शन के लिए उन्होंने कई धारावाहिकों का निर्माण किया है।

Gyan Sahay graduated from the FTII in 1975, specializing in cinematography. He worked with Govind Nihalani in a number of films. He is known for his work on television with shows like *Idhar Udhar*, *Dekh Bhai Dekh* and several reality TV shows, including *Antakshari* and *Saregamapa*. His feature film *Bairi Piya* received a regional award for best cinematography. He has produced and directed many fiction and non-fiction TV shows for Doordarshan.

अनीक दत्ता (Anik Dutta)



अनीक दत्ता ने सन् 2012 में चर्चित फिल्म *भूतेर भाभिष्यात* के साथ अपने निर्देशकीय करियर की शुरुआत की। इससे पहले हिन्दुस्तान थॉम्पसन एसोसिएट्स के ऑडियो-विजुअल विभाग में काम करते हुए उन्होंने फिल्मकारी के गुरु सीखे। पिछले बीस सालों से अनीक अपने खुद की निर्माण कम्पनियों, पहले *बाइस्कोप* और बाद में *फिल्मशॉप* के साथ स्वतंत्र फिल्मकार के रूप में काम कर रहे हैं। वे अनेक कॉर्पोरेट वीडियो, वृत्तचित्रों, प्रमोज का निर्माण और निर्देशन कर चुके हैं। उनके खाते में 400 से ज्यादा टेलिविज़न विज्ञापन भी दर्ज हैं।

Anik Dutta made his directorial debut in 2012 with the Bengali film *Bhooter Bhabishyat*. He honed his skills as a film-maker while working at the audio visual department of Hindusthan Thompson Associates. For the last twenty years, Anik has worked as an independent film-maker with his own production companies, Bioscope, and later, Filmshop. He has produced and directed several corporate videos, documentaries, promos and other software for TV channels and nearly 400 television commercials.



माखोंमोनी मोंगसाबा (Makhonmoni Mongsaba)

डॉ माखोंमोनी मोंगसाबा स्वतंत्र संस्कृतिकर्मी, लेखक, प्रकाशक, फिल्मकार तथा मणिपुरी संस्कृति के गंभीर शोधकर्ता हैं। उनका शोध मणिपुरी साहित्य पर है। सन् 2001 में उन्होंने निर्माता और निर्देशक की भूमिका में दो राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीते। अपनी फिल्मों और पुस्तकों के लिए वे मणिपुर राज्य के कई प्रतिष्ठित पुरस्कार हासिल कर चुके हैं और उन्हें लेखन के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला है।

Dr. Makhonmani Mongsatabam is a freelance cultural activist, writer, publisher, film-maker and research scholar on Manipuri culture. He has a PhD in Manipuri literature. He won two National Awards as a producer and director in 2001. He has won a number of Manipur state awards for his films and books and also a Sahitya Akademi Award.

शारोदी सैकिया (Sharodi Saikia)



असम के पारंपरिक नृत्य *सात्त्रिया* को आगे बढ़ानेवाली सबसे जानी मानी हस्ती **शारोदी सैकिया** बीते चार दशकों से इस नृत्य कला में किसी तपस्या की तरह लीन हैं। हाल ही में असम के शिक्षा विभाग से वरिष्ठ कार्यकारी पद से सेवानिवृत्त हुई सैकिया शैक्षिक योजना और प्रबंधन में डिप्लोमा हैं। उनका अध्यापन और शोध दोनों से ही गहरा जुड़ाव रहा है। वे संगीत नाटक अकादमी की सामान्य परिषद में अपने राज्य की प्रतिनिधि के रूप में कार्य कर चुकी हैं।

Acclaimed as a leading exponent of Sattriya tradition today, **Sharodi Saikia** has been pursuing this dance form for more than four decades with untiring devotion and exemplary zeal. Recently retired as a senior executive in the Education Department of Assam, with a diploma in Educational Planning and Administration, Sharodi has both teaching as well as educational research experiences. She has represented her state in the Sangeet Natak Akademi as a member of the General Council.



मयंक शेखर (Mayank Shekhar)

मयंक शेखर सिनेमा के चर्चित आलोचक और पहचाना चेहरा हैं। बीते एक दशक में *बीबीसी*, *एनडीटीवी*, *हिन्दुस्तान टाइम्स*, *दैनिक भास्कर*, *मुम्बई मिरर* तथा *मिड डे* जैसे स्थापित मीडिया प्लेटफॉर्म से उनका जुड़ाव रहा है। उनकी नई किताब – *नेम प्लेस एनिमल थिंग्स* हिन्दुस्तान को लोकप्रिय संस्कृति की खुर्दबीन से देखती है और बेस्टसेलर है। वे प्रतिष्ठित *रामनाथ गोयंका पुरस्कार* में फिल्म और टेलिविज़न पत्रकारिता के लिए सम्मानित होनेवाले प्रथम व्यक्ति हैं। आजकल वे पॉप कल्चर वेबसाइट *TheW14.com* संभालते हैं।

Mayank Shekhar has been a film critic for much over a decade with major media platforms such as BBC, NDTV, *Hindustan Times*, *Dainik Bhaskar*, *Mumbai Mirror* and *Mid Day*. His latest book *Name Place Animal Thing*, looking at India through popular culture, is a national bestseller. He is the first recipient of the Ramnath Goenka Award for films and television journalism. He runs the pop-culture website *TheW14.com*.

फीचर फिल्म ज्युरी | उत्तर पैनल
FEATURE FILMS JURY | NORTH PANEL**संजीब दत्ता (अध्यक्ष)** Sanjib Dutta (Chairperson)

संजीब दत्ता फिल्म एवं टेलिविज़न संस्थान, पूना से 1990 में पढ़कर निकले। संपादक के रूप में उनके कार्य में *एक हसीना थी, इकबाल, तीन दीवारें, डोर* तथा *मर्दाना* जैसी फिल्में हैं। इसके अलावा वे कई बांग्ला फिल्मों पर भी काम कर चुके हैं जैसे *इति श्रीकांत, फालतू, कालपुरुष* तथा *जरा ब्रिशिते भिजेछिलो*।

Sanjib Dutta passed out from FTII, Pune in 1990. His work as editor includes films like *Ek Hasina Thi, Iqbal, 3 Deewarein, Dor* and *Mardaani*. He has worked in a number of Bengali films like *Ii Srikanta, Faltu, Kaalpurush* and *Jara Brishtite Bhijechhilo*.

संजय पूरण सिंह (Sanjay Puran Singh)

राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित **संजय पूरण सिंह चौहान** ने आलोचकीय सम्मान प्राप्त फिल्म *लाहोर* से अपने निर्देशकीय करियर की शुरुआत की। *लाहोर* को भारत ही नहीं, विश्वस्तर पर सराहा गया और निर्देशक ने दर्शकों और आलोचकों की तारीफें बटोरीं। इसे दो राष्ट्रीय पुरस्कार हासिल हुए, निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ पहली फिल्म का पुरस्कार और सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता का पुरस्कार। इन दिनों वे अपनी आनेवाली फिल्म, जिसका शीर्षक *1983* होगा, की निर्माण पूर्व तैयारियों में व्यस्त हैं।

National Award-winning director **Sanjay Puran Singh Chauhan** made his debut with the critically acclaimed film *Lahore*, which opened to rave reviews not only in India but got applauds across the globe. It won two National Awards: for best debut director and for best supporting actor. He is now busy with the pre-production of his next film, titled *1983*.

**सुष्मिता दास** (Susmita Das)

सुष्मिता दास अमर साहित्यिक कृतियों को गीत की शकल देकर प्रस्तुत करने के लिए जानी जाती हैं। उनके नाम 300 से ज्यादा लाइव परफॉर्मंस दर्ज हैं। सुगम संगीत से लेकर सेमी-क्लासिकल, भक्ति संगीत से लेकर लोक संगीत, पारंपरिक गायन और साधना के स्वर सभी कुछ उनके रचनाकार का हिस्सा है। वे हिन्दी और उड़िया भाषा में बारह संगीत एलबम का निर्माण कर चुकी हैं। वे *सेंट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेशन (सीबीएफसी)* की सदस्य भी हैं।

Susmita Das has been a pioneer in presenting classic literary creations as songs. She has more than 300 live performances to her credit. Her range includes light musicals, semi-classical, devotional, folk, traditional, and even mystic and mesmeric. She has cut twelve original music albums in Odiya and Hindi. She is also a member of the Central Board of Film Certification (CBFC).

अश्विनी चौधरी (Ashwini Choudhary)

अश्विनी चौधरी पत्रकार से फिल्मकार बने और फिल्म *लाडो* का निर्देशन कर निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ पहली फिल्म के लिए मिलनेवाला इंदिरा गांधी पुरस्कार जीता। आगे चलकर उन्होंने आलोचकीय तारीफें बटोरने वाली फिल्म *धूप*, जिसकी कथा कारगिल युद्ध के हीरो कैप्टन अनुज नैयर से जुड़ी थी, का निर्देशन किया। वे अपनी फिल्मों में ईमानदारी से भरे और चुनौतीपूर्ण मुद्दों को उठाने के लिए जाने जाते हैं, ऐसे मुद्दे जो समकालीन समाज की जटिलताओं को सामने लाते हैं और आम आदमी के रोजमर्रा के जीवन में बढ़ते जा रहे भ्रष्टाचार के प्रकोप को सामने रखते हैं।

Ashwini Chaudhary is a journalist turned film-maker who won the Indira Gandhi Award for Best First Film of a Director for *Laado*. He later went on to direct the critically acclaimed and lauded film, *Dhoop*, based on the Kargil war hero Captain Anuj Nayyar. He is known for his honest and hard-hitting concepts which bring out the complexities in today's society and highlights the influence of corruption in day-to-day life of a common man.

**मीता मिश्रा** (Meeta Mishra)

मीता मिश्रा मैग्ना प्रकाशन संस्थान की स्थायी सम्पादक (उत्तर क्षेत्र) हैं और समूह की तमाम पत्रिकाओं जैसे *सोसाइटी, सैवी, सोसाइटी इंटीरियर्स, स्टारडस्ट, हेल्थ एंड न्यूट्रिशन* की जिम्मेदारी उन्हीं के कंधों पर है। इससे पहले वे *हिन्दुस्तान टाइम्स* को अपनी सेवाएं दे चुकी हैं। वे राजनीति, जीवनशैली, सेहत, सिनेमा जैसे विविध विषयों पर लेखन करती रही हैं और उन्हीं जीवन के हर क्षेत्र से आनेवाले सफल व्यक्तियों का साक्षात्कार किया है।

Meeta Mishra is resident editor (north) of Magna Publishing Company in charge of all magazines published by Magna, viz., *Society, Savvy, Society Interiors, Stardust, Health & Nutrition*. Prior to this she worked with *Hindustan Times*. She writes on a wide array of topics such as politics, lifestyle, health, films and interviews of stalwarts from all walks of life

फीचर फिल्म ज्यूरी | दक्षिण - I पैनल

FEATURE FILMS JURY | SOUTH-1 PANEL



धरम गुलाटी (अध्यक्ष) Dharam Gulati (Chairperson)

धरम गुलाटी फिल्म एवं टेलिविज़न संस्थान, पूना से पढ़े हैं और फिल्म/विज्ञापन/टेलिविज़न जगत के लिए पिछले तीस सालों से फोटोग्राफी/निर्देशक/निर्माता की भूमिकाओं में काम कर रहे हैं। वे रमेश सिप्पी, विनोद चोपड़ा, केतन मेहता, पंकज पाराशर, कल्पना लाजमी और स्वर्गीय विजय तेंदुलकर जैसी हस्तियों के साथ काम कर चुके हैं। इससे पहले वे अन्तरराष्ट्रीय एमी पुरस्कार (एशिया क्षेत्र), इंडियन टेलि अवार्ड्स, आईडीपीए अवार्ड्स तथा आईटीए की ज्यूसी में रह चुके हैं।

Dharam Gulati is an alumni of FTII, and has worked in the film/advertising/TV industry for more than thirty years as director of photography/director/producer. He has worked with film-makers like Ramesh Sippy, Vinod Chopra, Ketan Mehta, Pankuj Parashar, Kalpana Lajmi and the Late Vijay Tendulkar. He has been on the jury of International Emmy Awards (Asian Region), Indian Telly Awards, IDPA Awards and ITA.

ब्रह्मा जी. (Bramma G.)

ब्रह्मा जी. ने कुड्डाराम कोडिथाल के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार जीता। वे तमिलनाडू सरकार तथा यूनीसेफ को वैकासिक संचार के क्षेत्र में अपनी सेवाएं दे चुके हैं और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ संपन्न अन्तरराष्ट्रीय लीडरशिप एक्सचेंज प्रोग्राम में भारत के प्रतिनिधि भी रहे हैं। ब्रह्मा वर्ष 1999 और 2000 में मूक अभिनय की राष्ट्रीय प्रतियोगिता के विजेता रहे हैं।

Bramma G. won the National Award for *Kuttram Kadithal*. He has served the Government of Tamil Nadu and UNICEF in the development communication sector and has been the representative of India for International Visitors Leadership Exchange Programme with the United States. Bramma won the national championship for mime and skit in 1999 and 2000.



लीनस कानोथ (Leenus Kannoth)

लीनस एल.के. फिल्मकार और संचार विशेषज्ञ हैं जिन्हें सिनेमा, टेलिविज़न तथा संचार क्षेत्र में कार्य का पच्चीस साल से ज्यादा लम्बा अनुभव प्राप्त है। एक निर्माता/निर्देशक की भूमिका में वे विभिन्न संस्थानों जैसे फिल्मस डिविज़न (भारत सरकार), सी-डीआईटी, केरल राज्य फिल्म विकास निगम, दूरदर्शन तथा कई अन्य निजी संस्थानों के लिए फिल्मों का निर्माण और निर्देशन कर चुके हैं। इसके साथ ही वह सिनेमा शिक्षण से भी जुड़े रहे हैं। फिलहाल वे केरल इंस्टिट्यूट ऑफ डिजाइन के विभाग स्कूल ऑफ इंटरैक्टिव कम्यूनिकेशन के अध्यक्ष तथा सहायक परियोजना निर्देशक के पद पर कार्यरत हैं।

Leenus L.K. is a film-maker and communication designer with more than twenty-five years of experience in films, television and communication design. As a producer/director he has made numerous films for various organizations like Films Division (Govt. of India), C-DIT, Kerala State Film Development Corporation, Doordarshan (Govt. of India) and for many other private producers. He has also been engaged in the academics of cinema. Currently he works as the assistant project director and head of Department of School of Interactive Communication at Kerala State Institute of Design.



एस. सूरजकवी (S. Surajkavee)

एस. सूरजकवी ने फिल्म एवं टेलिविज़न संस्थान, तमिलनाडू से सम्पादन की शिक्षा हासिल की है। 1999 में पढ़कर निकलने के बाद उन्होंने कमल हासन के बैनर तले सहायक सम्पादक के तौर पर अपना करियर शुरू किया। वे तमिल, तेलुगु तथा मलयालम भाषा में बीस से ज्यादा फीचर फिल्म, लघु फिल्म, वीडियो एल्बम, फिल्म ट्रेलर, वृत्तचित्र, विज्ञापन फिल्म, कॉर्पोरेट फिल्म का सम्पादन कर चुके हैं।

S. Surajkavee is a film editor who completed the course at the Film and Television Institute of Tamil Nadu in 1999. He started out as assistant editor in the home banner of Kamal Hassan. He has worked as editor in over twenty feature films, short films, video albums, film trailers, documentaries, ad films and corporate films in Tamil, Telugu and Malayalam.



रवि केम्मू (Ravi Kemmu)

रवि शंकर केम्मू ने कश्मीर विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री हासिल करने के बाद नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा से अभिनय की पढ़ाई की। मलयालम फिल्म फुटबॉल (1982) से उन्होंने अपनी अभिनेता पारी की शुरुआत की। वे एक निर्देशक, लेखक तथा निर्माता के तौर पर सिनेमा और टेलिविज़न से जुड़े रहे हैं। निर्देशक श्याम बेनेगल के साथ कई फिल्मों में सहायक निर्देशक के तौर पर काम करने का श्रेय भी उन्हें हासिल है।

Ravi Shankar Kemmu did his diploma in dramatic arts from the National School of Drama after graduating from Kashmir University. He started his career as an actor in *Football* (Malayalam) in 1982. He has been associated with films and television as a director, writer, actor and producer, including as associate director with Shyam Benegal in a number of films.



फीचर फिल्म ज्यूरी | दक्षिण- II पैनल

FEATURE FILMS JURY | SOUTH-II PANEL



जॉन मथान (अध्यक्ष) John Matthan (Chairperson)

जनसंचार में उपाधि हासिल करने के बाद जॉन मैथ्यू मथान ने विज्ञापन फिल्मों तथा वृत्तचित्र फिल्मों बनाकर खूब नाम कमाया और पुरस्कार जीते। साल 2000 में उन्हें अपनी पहली फिल्म *सरफरोश* के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार हासिल हुआ। उनकी दूसरी फिल्म *शिखर* पर्यावरणीय मुद्दों पर केन्द्रित है।

After his post-graduation in mass communication, **John Mathew Matthan** made advertising and documentary films which went on to win several awards. In 2000, he won the National Award for his debut film *Sarfarosh*. His second film *Shikhar* dealt with environmental issues.

कृष्णा सेट्टी (Krishna Shetty)

कृष्णा सेट्टी जाने माने कलाकार, कला-समीक्षक, वृत्तचित्र निर्माता तथा ललित कला अकादमी, कर्नाटक के पूर्व अध्यक्ष हैं। वे अनेक धारावाहिकों, वृत्तचित्रों का निर्माण तथा निर्देशन कर चुके हैं और इसके अलावा कई राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय सेमीनारों में पर्चा प्रस्तुत कर चुके हैं। वे कई सम्माननीय पुरस्कारों से सम्मानित हैं। फिलहाल वे *राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय* के भारत सरकार द्वारा नियुक्त सदस्य हैं।

Krishna Setty is a well-known artist, art critic, documentary film-maker and former chairman of the Lalit Kala Academy, Karnataka. He has produced and directed many serials, documentaries and also presented papers in many national and international seminars. He has been conferred with many prestigious awards. At present he is advisory member, National Gallery of Modern Art, nominated by the Government of India.



रमन चावला (Raman Chawla)

रमन चावला सिनेमा के क्षेत्र में बीते तीन दशक से सक्रिय हैं। उन्होंने 85 से 95 के मध्य फ्रांस दूतावास में उप-सचिव, फिल्म तथा टेलिविज़न के रूप में कार्य संपन्न किया। इसके साथ ही वे पंकज बुटालिया की फिल्म *शैडोज़ इन दि डार्क* तथा जहर कानूनगो की फीचर फिल्म *रीचिंग साइलेंस* के प्रबंध निर्माता भी रहे हैं। ओसियान सिने फेन फिल्म समारोह के वरिष्ठ उप-अध्यक्ष की भूमिका में रमन ने सिनेमा जगत को महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

Raman Chawla has been working in the field of cinema for more than three decades. He served as deputy attaché, film and television, at the Embassy of France between 1985 and 1995. He has also been executive producer for Pankaj Butalia's *Shadows in the Dark* and Jahar Kanungo's award-winning feature film *Reaching Silence*. As senior vice president, Osian's-Cinefan Festival of Asian and Arab Cinema, Raman has made a significant contribution to

the festival's succes

सुनील पुराणिक (Suneel Puranik)

केएचके इंस्टिट्यूट ऑफ धारवाड़ से साल 1985 में मैकेनिकल इंजिनियरिंग में डिप्लोमा करने के बाद सुनील पुराणिक ने *आदर्श फिल्म इंस्टिट्यूट* से फिल्म अभिनय और निर्देशन में डिप्लोमा हासिल किया। फिल्म *गुरुकुला* (2010) के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का कर्नाटक राज्य पुरस्कार मिला। इसके साथ ही फिल्म को बच्चों के लिए बनाई सर्वश्रेष्ठ फिल्म का राज्य पुरस्कार भी हासिल हुआ। सुनील पुराणिक दक्षिण भारत की कई फिल्मों में अभिनय कर चुके हैं और उनके खाते में पचास से ज्यादा कन्नड़ धारावाहिकों में अभिनय भी दर्ज है। वे कई टेलिविज़न धारावाहिकों के निर्देशक भी रहे हैं।

After his diploma in mechanical engineering from KHK Institute of Dharwad in 1985, **Suneel Puranik** did a diploma in film acting and direction from Adarsha Film Institute (1986). He won the Karnataka State Award for best director for his film *Gurukula* (2010), which also won the Karnataka State Children Movie of the year award. He has acted in a number of films in the south and in over fifty Kannada serials. He has also directed a number of TV serials.



विनाय वर्मा (Vinay Varma)

विनाय वर्मा रंगमंच के क्षेत्र में अभिनेता और निर्देशक तथा सिनेमा के क्षेत्र में अभिनेता तथा पटकथा लेखक के रूप में जाने जाते हैं। इसके अलावा डबिंग और वॉइस ओवर आर्टिस्ट के रूप में सक्रिय विनाय वर्मा अभिनेताओं को वॉइस ट्रेनिंग भी देते हैं तथा कॉर्पोरेट जगत के लिए हाव-भाव तथा आवाज पर नियंत्रण संबंधी कार्यशालाएं आयोजित करते हैं। वे नाट्य समूह *सूत्रधार* के निर्देशक हैं। रंगमंच पर वे पचास से ज्यादा नाटकों में अभिनय कर चुके हैं और तकरीबन चालीस नाटकों का निर्देशन कर चुके हैं। भारत भर में अपनी प्रतिभा का जलवा बिखेरने के अलावा उन्होंने लंदन और आबूधाबी में भी अभिनय की धाक जमाई है। वे कुछ हिन्दी तथा तेलुगु फिल्मों में अभिनय भी कर चुके हैं। उनके खाते एक हॉलीवुड फिल्म भी दर्ज है।

Vinay Varma is a theatre and film actor, theatre director, dubbing and voice-over artiste and scriptwriter. He also trains actors and voices; and organizes workshops for corporates in body-language and voice. He is the director of *Sutradhar*, a theatre group and a casting house. He has acted in more than fifty plays and directed about forty plays and has performed in London and Abu Dhabi and all over India. Vinay has acted in a few Hindi and Telugu films, and also a Hollywood flick.

फ़ीचर फ़िल्म ज्युरी | पश्चिम पैनल

FEATURE FILMS JURY | WEST PANEL



गंगई अमेरन (अध्यक्ष) Gangai Amaran (Chairperson)

गंगई अमेरन बहुप्रतिभाओं के धनी व्यक्तित्व हैं: गायक, संगीतकार, रचयिता, गीतकार, निर्माता-निर्देशक। उन्होंने 3000 से ज्यादा गीत लिखे हैं और वे तमिल, तेलुगु, कन्नड़ तथा मलयालम में 180 से अधिक फिल्मों के लिए संगीत तैयार कर चुके हैं। लोक संगीत को भारतीय सिनेमा में लेकर आने में उनकी महति भूमिका मानी जाती है। वे कई प्रतिष्ठित राज्य पुरस्कारों से सम्मानित हैं, जिनमें *कलाईमामानी* प्रमुख है।

Gangai Amaran is a multifaceted talent: vocalist, musician, composer, lyricist, producer/director of motion pictures. He has penned over 3000 songs and composed and directed music for over 180 films in Tamil, Telugu, Kannada and Malayalam. He is considered a pioneer in introducing folk music to movies. He is the winner of several state awards including the prestigious Kalaimamani.

पराग चापेकर (Parag Chhapekar)

पराग चापेकर *लाइव इंडिया न्यूज* और *मी मराठी* में वरिष्ठ सम्पादक (मनोरंजन) के पद पर कार्यरत हैं। फ़िल्म पत्रकारिता में उनका उन्नीस साल लम्बा अनुभव है। वे *जी न्यूज*, *स्टार न्यूज*, *इंडिया टीवी* तथा *टीवी 18* के साथ काम कर चुके हैं। *जी न्यूज* के लिए कुछ लघु फिल्मों के निर्देशक के अलावा उन्होंने *संयुक्त राष्ट्र संघ* और *आईजीएनओयू* के लिए वृत्तचित्रों का निर्देशन भी किया है। इसके अलावा वे *सीबीएफसी* के सदस्य भी हैं।

Parag Chhapekar is senior editor, entertainment, of Live India News and Mee Marathi. Parag has experience of nineteen years in film journalism. He has worked with Zee News, Star News, India TV and TV 18. He has directed a few short films for Zee and documentaries for United Nations and IGNOU. He is also a member of the CBFC.



अनिल दामले (Anil Damle)

अनिल दामले फिल्मकारों और फिल्म वितरकों की परंपरा वाले समृद्ध परिवार से ताल्लुक रखते हैं। उनके दादा *प्रभात फिल्म कम्पनी* के संस्थापक सदस्यों में से एक थे। वे स्वयं दो राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त वृत्तचित्रों का निर्माण कर चुके हैं, जिनके नाम हैं *इट्स प्रभात* और *वी. जी. दामले : दि अनसंग हीरो ऑफ इंडियन सिनेमा*। इसके अलावा अनिल राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त पुस्तक *मराठी चित्रपट संगीताची वाचाल* के प्रकाशक भी हैं। पक्षी प्रेमी तथा नेचर वीडियोग्राफर अनिल ने प्रकृति और वन्यजीव पर्यटन पर छः किताबें भी लिखी हैं।

Anil Damle comes from an illustrious family of film-makers and exhibitors. His grandfather was the founder partner of Prabhat Film Company. He has produced two National Award-winning documentaries, *It's Prabhat* and *V.G. Damle: The Unsung Hero of Indian Cinema*. Anil is also the publisher of the National Award-winning book *Marathi Chitrapat Sangeetachi Watchal*. He is an avid birder and nature videographer as well as author of six books on nature and wildlife tourism.

दिलीप घोष (Dilip Ghosh)

दिलीप घोष फिल्म एवं टेलिविज़न संस्थान से पढ़कर निकले हैं। फिल्म निर्देशन तथा पटकथा लेखन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा हासिल करने के बाद दिलीप ने *एक्विनॉक्स*, तथा बाद में *जेड फिल्मस* के बेनर तले विज्ञापन फिल्में बनाना पसन्द किया। उनकी वृत्तचित्र-फ़ीचर फिल्म *चिल्ड्रन ऑफ़ सिल्वर स्क्रीन इंडस्ट्री* में काम कर रहे व्यावसायिक बाल कलाकारों की जीवनचर्या और दुनिया की पड़ताल करती थी, जिसने उन्हें सम्मान और पहचान दिलाई। पच्चीस साल तक विज्ञापन फिल्में तथा वृत्तचित्र फिल्में बनाने के बाद उन्होंने हिन्दी मनोरंजन चैनल *नाइन एक्स* का शुभारंभ किया। हाल ही में उनकी पहली हिन्दी फ़ीचर फिल्म आई है, जिसका शीर्षक है *कमांडो : ए वन मैन आर्मी*।

Dilip Ghosh is a product of the FTII. After his postgraduate diploma in film direction and screenplay writing, he decided to make advertising films under the banner of Equinox and later Z Films. His docu-feature film titled *Children of the Silver Screen* was a unique exploration into the world of professional child actors and fetched him a lot of honours and recognition. After making advertising and documentary films for over twenty-five years, he went on to launch the Hindi entertainment TV channel 9X. He recently released his debut Hindi feature film titled *Commando: A One Man Army*.



डॉ बलवंत शांतिलाल जानी (Balvant Shantilal Jani)

डॉ बलवंत शांतिलाल जानी *सौराष्ट्र विश्वविद्यालय*, राजकोट में गुजराती साहित्य विभाग में प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं। इसके अलावा वे *सौराष्ट्र विश्वविद्यालय* के कला विभाग के डीन भी हैं। कुल मिलाकर उनके पीछे तीस साल का अध्यापन का अनुभव है और वे हिन्दुस्तानी अकादमिक जगत का जानामाना नाम हैं।

Dr Balvant Shantilal Jani is professor and head, Department of Gujarati Literature, Saurashtra University, Rajkot. He is also dean, Arts Faculty, Saurashtra University. He has a total teaching experience of thirty years and has been a stalwart in the academic world in India.

फिल्म अनुकूल प्रदेश निर्णायक समिति

FILM FRIENDLY STATE JURY COMMITTEE



सुधीर मिश्रा (Sudhir Mishra)

सुधीर मिश्रा भारतीय सिनेमा में वैकल्पिक और स्वतंत्र सिनेमा आन्दोलन के आधार स्तम्भ रहे हैं। सन् 1987 में उन्होंने *ये वो मंज़िल तो नहीं* के साथ निर्देशकीय पदार्पण किया। इसे निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ फिल्म का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार हासिल हुआ। *धारावी*, उनकी सबसे सफल फिल्म, ने उन्हें सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फिल्म, सर्वश्रेष्ठ सम्पादन तथा सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का राष्ट्रीय पुरस्कार जिताया। हाल के सालों में उनकी *हज़ारों ख़्वाहिशें ऐसी* को अद्भुत आलोचकीय सम्मान प्राप्त हुआ है और इस फिल्म ने बारह फिल्म समारोहों की यात्राएं कीं। उन्हें फ्रांसीसी सरकार का प्रतिष्ठित ऑर्डर डेस आर्टज एट डेस लेटर्स सम्मान मिल चुका है।

Sudhir Mishra is one of the pioneers of alternative independent cinema movement in India. He made his directorial debut with *Yeh Woh Manzil Toh Nahin* in 1987. It won the National Film Award for Best First Film of a Director. *Dharavi*, his most successful film, won the National Award for Best Hindi Film, Best Editing and Best Music

Director. In recent times *Hazaaroon Khwaishein Aisi* has been one of the most critically acclaimed films from India, having travelled to twelve film festivals. He has won the Ordre des Artes et des Lettres from the French government.

अश्विनी लोहानी (Ashwani Lohani)

अश्विनी लोहानी वर्तमान में एयर इंडिया के अध्यक्ष और प्रबंध निर्देशक हैं। इससे पहले वे प्रबंध निर्देशक एवं कमिश्नर पर्यटन विभाग, मध्य प्रदेश सरकार, सीएओआईआरओएफ, सीएमई उत्तर रेलवे, डीआरएम दिल्ली, निर्देशक राष्ट्रीय रेल संग्रहालय, नई दिल्ली, भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय में निर्देशक, भारतीय पर्यटन विकास निगम में अध्यक्ष और प्रबंध निर्देशक जैसे पदों पर कार्य कर चुके हैं। वे कार्य में गुणवत्तापूर्ण प्रदर्शन के लिए कई राष्ट्रीय तथा राज्य पुरस्कार हासिल कर चुके हैं। भारतीय पर्यटन विकास निगम तथा मध्य प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम के पुनरुद्धार का श्रेय उन्हें ही दिया जाता है।

Ashwani Lohani is presently the chairman and managing director of Air India. He earlier worked as the managing director and commissioner tourism, Government of Madhya Pradesh, CAO/IROAF, CME Northern Railway, DRM Delhi, director, National Rail Museum, New Delhi, director in the Ministry of Tourism, Government of India, chairman and managing director of India Tourism Development Corporation. He is the winner of a number of national and state awards for outstanding performance. He is credited with the turnaround of the India Tourism Development Corporation and Madhya Pradesh State Tourism Development Corporation.



भारतबाला (Bharatbala)

भारतबाला पिछले पच्चीस सालों में सिनेमा संचार माध्यम की विभिन्न शैलियों में सक्रिय रहे हैं। वे 500 से ज्यादा टेलिविज़न विज्ञापन निर्देशित कर चुके हैं। वे भारत की आजादी की पचासवीं वर्षगांठ का जश्न मनाती *वंदे मातरम* श्रृंखला की फिल्मों तथा भारत के गणतंत्र की पचासवीं वर्षगांठ का जश्न मनाती *जण गण मन* जैसी मानक श्रृंखलाओं के संकल्पनाकार तथा निर्देशक हैं। वे दो फीचर फिल्मों के निर्देशक भी हैं, *हरी ओम* तथा *मार्यन*। अपनी विज्ञापन फिल्मों के लिए वे अनेक पुरस्कार जीत चुके हैं।

Bharatbala has worked with different genres of film communication in his twenty-year career. He has directed more than 500 TV commercials in India. He conceived and directed flagships projects like the *Vande Mataram* series of films celebrating fifty years of India's independence and the *Jana Gana Mana* series celebrating fifty years of India's Republic to name a few. He is the director of two feature films, *Hari Om* and *Maryan*. Bharatbala has won

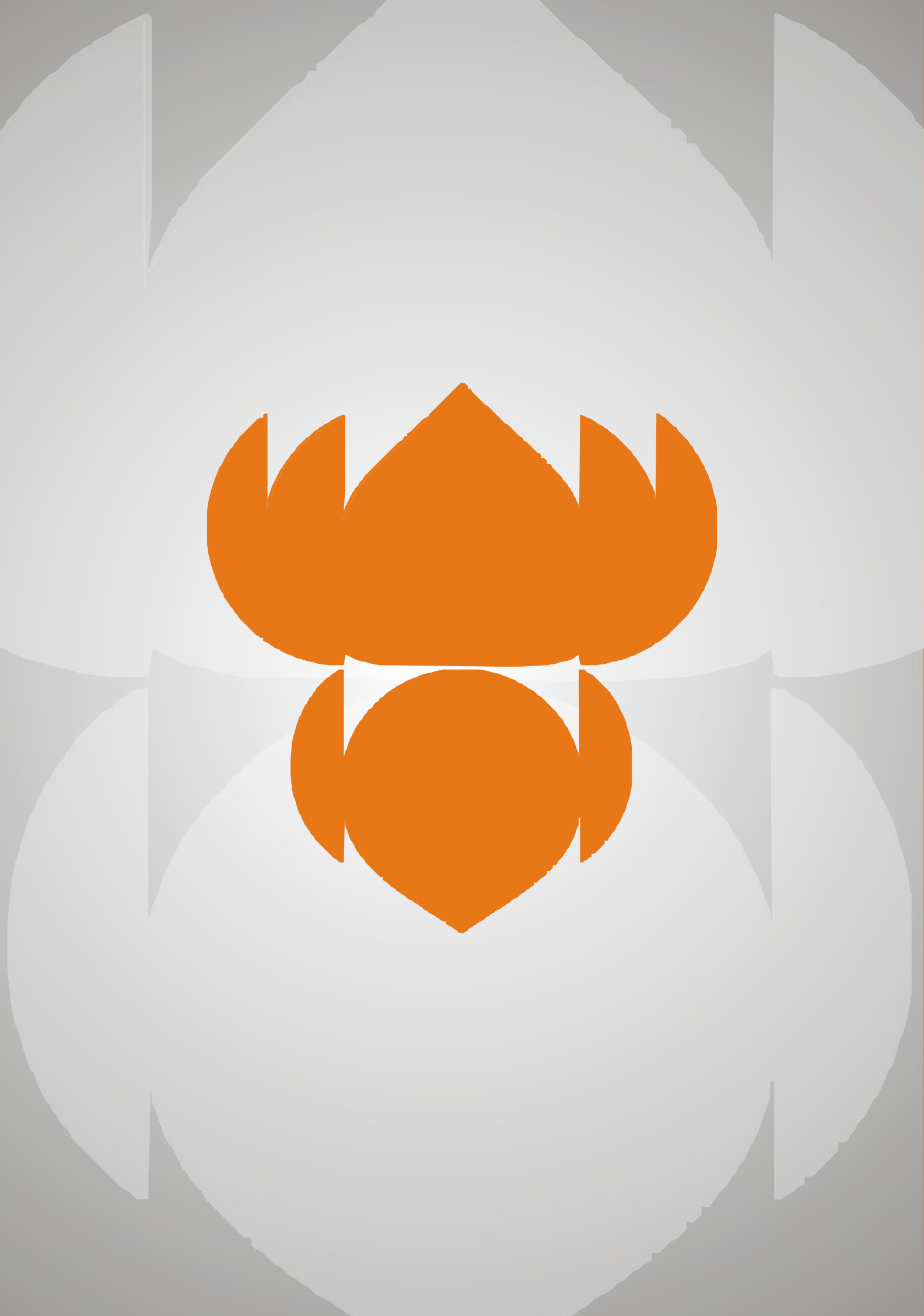
several awards for his advertising films.

प्रवेश साहनी (Pravesh Sahni)

भारत में होनेवाली तमाम विदेशी फिल्मों की शूटिंग में प्रवेश साहनी का नाम सबसे सम्मानित लाइन प्रोड्यूसर के रूप में लिया जाता है। वे विश्वप्रसिद्ध निर्देशकों जैसे एंग ली, डेनी बॉयल, ऑलिवर स्टोन तथा गुरिन्दर चड्ढा के साथ काम कर चुके हैं। वे निर्माण सेवाएं देनेवाली कंपनी इंडिया टेक वन प्रॉडक्शन्स (आईटीओपी) के सह-संस्थापक हैं, जिसकी स्थापना भारत में सन् 1999 में हुई थी। इसके ग्राहकों में *वार्नर ब्रदर्स*, *फॉक्स स्टार स्टूडियोज*, *एमटीवी फिल्म्स*, *सोनी पिक्चर्स*, *वॉल्ट डिज़नी* तथा *पैरामाउंट फिल्म्स* जैसी कम्पनियाँ शामिल हैं। इसके अलावा प्रवेश साहनी *स्लमडॉग मिलेनियर*, *ईट प्रे लव*, *दि बेस्ट एक्जाटिक मैरीगोल्ड होटल*, *मिशन इंपॉसिबल 4 - दि ग्लोस्ट प्रोटोकॉल*, *जीरो डार्क थर्टी* तथा *लाइफ ऑफ पाई* जैसी फिल्मों के निर्माण से घनिष्ठता से जुड़े रहे हैं।

Pravesh Sahni is considered to be one of the most respected line producers for foreign film shootings in India. He has worked with acclaimed international directors, including Ang Lee, Danny Boyle, Oliver Stone and Gurinder Chadha. He co-founded India Take One Productions (ITOP), a production services company based in India in 1999. Its client portfolio includes Warner Bros., Fox Star Studios, MTV Films, Sony Pictures, Walt Disney and Paramount Films. Additionally, he has been core to the production of films like *Slumdog Millionaire*, *Eat Pray Love*, *The Best Exotic Marigold Hotel*, *Mission Impossible 4 - The Ghost Protocol*, *Zero Dark Thirty* and *Life of Pi*.





फीचर फ़िल्में
FEATURE FILMS

63^{वें}
राष्ट्रीय
फ़िल्म
पुरस्कार
2015
NATIONAL FILM
AWARDS 2015

35 मि.मि. या बड़े गेज या डिजिटल प्रारूप में बनी किन्तु फ़िल्म प्रारूप अथवा वीडियो / डिजिटल प्रारूप में जारी किसी भी भारतीय भाषा में बनी और केन्द्रीय फ़िल्म प्रमाणन बोर्ड द्वारा फीचर या फीचरेट के रूप में प्रमाणीकृत फ़िल्म फीचर फ़िल्म श्रेणी के लिए पात्र है।

Films made in any Indian language, shot on 35 mm or in a wider gauge or digital format but released on a film format or video/digital format and certified by the Central Board of Film Certification as a feature film or featurette are eligible for feature film section.

फीचर फिल्में | एक नज़र में

FEATURE FILMS | AT A GLANCE



- **बाहुबली** (हिंदी)
 सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म
 सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफेक्ट
 वी. श्रीनिवास मोहन

Baahubali (Hindi)
 Best Feature Film
 Best Special Effect
 V. Srinivas Mohan
- **बाजीराव मस्तानी**
 सर्वश्रेष्ठ निर्देशक
 संजय लीला भंसाली
 सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री
 तन्वी आजमी
 सर्वश्रेष्ठ छायांकन
 सुदीप चटर्जी
 सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन (साउंड डिजाइनर)
 बिस्वदीप चटर्जी
 सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन (फाइनल मिक्स्ड ट्रैक के रि-रिकॉर्डिस्ट)
 जस्टिन जोस
 सर्वश्रेष्ठ प्रॉडक्शन डिजाइन
 सुजीत सावंत, सलोनी धत्रक, श्रीराम आर्यंगार
 सर्वश्रेष्ठ नृत्य संयोजन
 रेमो डी'सूजा

Bajirao Mastani
 Best Direction
 Sanjay Leela Bhansali
 Best Supporting Actress
 Tanvi Azmi
 Best Cinematography
 Sudeep Chatterjee
 Best Audiography (Sound Designer)
 Bishwadeep Chatterjee
 Best Audiography (Re-recordist of the final mixed track)
 Justin Jose
 Best Production Design
 Sujeet Sawant, Saloni Dhattrak, Sriram Iyengar
 Best Choreography
 Remo D'Souza
- **बजरंगी भाईजान** (हिंदी)
 सम्पूर्ण मनोरंजन प्रदान करनेवाली सर्वश्रेष्ठ फिल्म

Bajranji Bhaijaan (Hindi)
 Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
- **बेन**
 सर्वश्रेष्ठ बाल अभिनेता
 गौरव मेनन

Ben
 Best Child Artist
 Gaurav Menon
- **चौथी कूट**
 सर्वश्रेष्ठ पंजाबी फिल्म

Chauthi Koot
 Best Punjabi Film
- **दाउ हुडुनी मेथाई**
 सर्वश्रेष्ठ बोडो फिल्म

Dau Huduni Methai
 Best Bodo Film
- **दम लगा के हइशा**
 सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फिल्म
 सर्वश्रेष्ठ गायिका
 मोनाली ठाकुर
 सर्वश्रेष्ठ गीत
 वरुण ग्रोवर

Dum Laga Ke Haisha
 Best Hindi Film
 Best Female Playback Singer
 Monali Thakur
 Best Lyrics
 Varun Grover
- **दूरंतो** (हिंदी)
 बच्चों की सर्वश्रेष्ठ फिल्म

Duronto (Hindi)
 Best Children's Film
- **यिबुसू योहंबियु**
 सर्वश्रेष्ठ मणिपुरी फिल्म

Eibusu Yaohanbiyu
 Best Manipuri Film
- **एनिमी**
 सर्वश्रेष्ठ कोंकणी फिल्म

Enemy
 Best Konkani Film
- **एन्नु निन्ते मोइडीन**
 सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक (गीत)
 एम जयवंद्रन

Ennu Ninte Moideen
 Best Music Direction (Songs)
 M. Jayachandran
- **इरुधी सुत्तूरु**
 विशेष उल्लेख
 ऋतिका सिंह

Irudhi Suttru
 Special Mention
 Ritika Singh
- **कंचे**
 सर्वश्रेष्ठ तेलुगु फिल्म

Kanche
 Best Telugu Film
- **कट्यार कालजात घुसली**
 सर्वश्रेष्ठ गायक
 महेश काले

Katyar Kaljat Ghusli
 Best Male Playback Singer
 Mahesh Kale
- **किमा'स लोड – बियाँन्ड दि क्लास**
 सर्वश्रेष्ठ मीज़ो फिल्म

Kima's Lode – Beyond the Class
 Best Mizo Film
- **कोथानोदी**
 सर्वश्रेष्ठ असमिया फिल्म

Kothanodi
 Best Assamese Film
- **लुकका छुप्पी**
 विशेष उल्लेख
 जयसूर्या

Lukka Chuppi
 Special Mention
 Jayasurya
- **मार्गरिता विथ ए स्ट्रॉ**
 निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार
 कल्कि कोचलीन

Margarita With a Straw
 Special Jury Award
 Kalki Koechlin
- **मसान** (हिंदी)
 निर्देशक की पहली फिल्म के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

Masaan (Hindi)
 Indira Gandhi Award for Best Debut Film of a Director
- **मिथिला मखान**
 सर्वश्रेष्ठ मैथिली फिल्म

Mithila Makhaan
 Best Maithili Film



- **नानक शाह फ़कीर** (हिंदी)
राष्ट्रीय सद्भाव और एकता के लिए सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का नर्गिस दत्त पुरस्कार
सर्वश्रेष्ठ वेषभूषाकार
पायल सलूजा
सर्वश्रेष्ठ रूपसज्जाकार
क्लोवर वूट्टन, प्रीतिशील सिंह

Nanak Shah Fakir (Hindi)

Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
Best Costume Designer

Payal Saluja

Best Make-up Artist

Clover Wootton, Preetisheel Singh

- **निर्णायकम** (मलयालम)
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म

Nirnayakam (Malayalam)

Best Film on Social Issues

- **ओनाटा**

सर्वश्रेष्ठ खासी फिल्म

Onaatah

Best Khasi Film

- **पहाड़ा रा लुहा**

सर्वश्रेष्ठ उड़िया फिल्म

Pahada Ra Luha

Best Odiya Film

- **पाथेमारी**

सर्वश्रेष्ठ मलयालम फिल्म

Pathemari

Best Malayalam Film

- **पीकू**

सर्वश्रेष्ठ अभिनेता

अमिताभ बच्चन

सर्वश्रेष्ठ मौलिक पटकथा

जूही चतुर्वेदी

सर्वश्रेष्ठ संवाद

जूही चतुर्वेदी

Piku

Best Actor

Amitabh Bachchan

Best Original Screenplay

Juhi Chaturvedi

Best Dialogue

Juhi Chaturvedi

- **प्रियमानसम**

सर्वश्रेष्ठ संस्कृत फिल्म

Priyamanasam

Best Sanskrit Film

- **रिंगन**

सर्वश्रेष्ठ मराठी फिल्म

Ringan

Best Marathi Film

- **सैरत**

विशेष उल्लेख

रिंकू राजगुरु

Sairat

Special Mention

Rinku Rajguru

- **सतरंगी**

सर्वश्रेष्ठ हरियाणवी फिल्म

Satransi

Best Haryana Film

- **शंखोचिल**

सर्वश्रेष्ठ बांग्ला फिल्म

Shankhachil

Best Bengali Film

- **सु सु सुद्धि वत्मीकम**

विशेष उल्लेख

जयसूर्या

Su Su Sudhi Vathmeekam

Special Mention

Jayasurya

- **तलवार**

सर्वश्रेष्ठ रूपांतरित पटकथा

विशाल भारद्वाज

सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन (लोकेशन साउंड रिकॉर्डिस्ट)

संजय कूरियन

Talvar

Best Adapted Screenplay

Vishal Bhardwaj

Best Audiography, Location Sound Recordist

Sanjay Kurian

- **तनु वेडस मनु रिटर्न्स**

सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री

कंगना रनोट

सर्वश्रेष्ठ पटकथा लेखक (मौलिक)

हिमांशु शर्मा

सर्वश्रेष्ठ संवाद

हिमांशु शर्मा

Tanu Weds Manu Returns

Best Actress

Kangana Ranaut

Best Original Screenplay

Himanshu Sharma

Best Dialogue

Himanshu Sharma

- **तारई तप्पत्तई**

सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक

इलयराजा

Thaarai Thappattai

Best Music Direction (Background Score)

Ilaiyaraaja

- **दि हेड हंटर**

सर्वश्रेष्ठ वांचो फिल्म

The Head Hunter

Best Wancho Film

- **तिथि**

सर्वश्रेष्ठ कन्नड़ फिल्म

Thithi

Best Kannada Film

- **वालिया चिराकुला पक्षीकाल** (मलयालम,

अंग्रेजी, फ्रेंच)

सर्वश्रेष्ठ फिल्म पर्यावरणीय संरक्षण पर

Valiya Chirakulla Pakshikal

(Malayalam, English, French)

Best Film on Environment

Conservation/Preservation

- **विसारणै**

सर्वश्रेष्ठ तमिल फिल्म

सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता

पी. समुद्रकनी

सर्वश्रेष्ठ संपादक

किशोर टी. ई.

Visaaranai

Best Tamil Film

Best Supporting Actor

P. Samuthirakani

Best Editing

Kishore T.E.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



बाहुबली Baahubali

सर्वश्रेष्ठ फीचर फ़िल्म
Best Feature Film

स्वर्ण कमल
SWARNA KAMAL
₹ 2,50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

कल्पनाशील फिल्म, निर्माण की गज़ब की भव्यता और सिनेमा के परदे पर विलक्षण कल्पनालोक रचने का अद्भुत सिनेमाई दुस्साहस।

An imaginative film and monumental by its production values and cinematic brilliance in creating a fantasy world on screen.

बाहुबली | Baahubali

2015 | तेलुगु | डिजिटल | रंगीन | 159 मिनट

निर्देशक-पटकथा: एस एस राजामौली निर्माता: आर्का मीडियावर्क्स (प) लि. छायांकन: के के सेंथिल कुमार संपादक: के वेंकटेश्वर राव कला निर्देशक: साबू सिरील दृश्यात्मक प्रभाव: वी श्रीनिवास मोहन संगीत: एम एम कीरावनी अभिनेता: प्रभास, राणा डुगुबाती, अनुष्का शेटी और तमन्ना

2015 | Telugu | Digital | Colour | 159 minutes

Director-Screenplay: S.S. Rajamouli Producer: Arka Mediaworks (P) Ltd Cinematographer: K.K. Senthil Kumar Editor: K. Venkateswara Rao Art Director: Sabu Cyril Visual Effects: V. Srinivas Mohan Music: M.M. Keeravani Cast: Prabhas, Rana Daggubati, Anushka Shetty & Tamannah

कथासार (Synopsis)

सुदूर आदिवासी गांव में पला-बढ़ा शिवुदु अपने दिल की सुननेवाला बेपरवाह नौजवान है। उसका यह साहस उसे एक नितान्त अनजाने प्रदेश, अनजानी दुनिया में ले जाता है। इस यात्रा में उसे सिर्फ प्रेम ही नहीं हासिल होता, बल्कि एक ऐसा सच मालूम होता है जो उसकी किस्मत को किसी अन्य ही दिशा में ले चलता है।

Raised in a remote tribal village, Shivudu grows up a carefree young man who relentlessly pursues his heart's desire. This leads him on an adventure to a completely unfamiliar territory. On this journey, he not only finds love, but uncovers a truth that steers his destiny in a different direction.

परिचय (Profile)



एस एस राजामौली (S.S. Rajamouli)

एस एस राजामौली तेलुगु सिनेमा के जानेमाने फिल्मकार और पटकथा लेखक हैं। वे ब्लॉकबस्टर हिट फिल्मों जैसे *मागाधीरा* और *ईगा* के निर्देशक हैं। इसके अलावा वे खेल आधारित फिल्म *साय* तथा सामाजिक मुद्दे पर *विक्रमार्कुडु* का निर्माण भी कर चुके हैं।

S.S. Rajamouli is a film-maker and screenwriter known for his works mainly in Telugu cinema. He is known for directing blockbuster films such as *Magadheera* and *Eega*. His other notable works include the sports drama film *Sye* and the social film *Vikramarkudu*.



आर्का मीडियावर्क्स (Arka Mediaworks)

शोबू यार्लागेड्डा ने प्रसाद डेविनेनी के साथ मिलकर साल 2001 में सिर्फ एक टेलिविज़न शो के साथ आर्का मीडियावर्क्स की स्थापना की। आज आर्का मीडियावर्क्स मोशन पिक्चर्स निर्माण, टेलिविज़न और सिंडीकेशन में एक अग्रणी नाम है और डिजिटल कंटेंट का डिस्ट्रिब्यूटर भी है।

Shobu Yarlagadda, along with Prasad Devineni, founded **Arka Mediaworks** in 2001 with just one television show. Today, Arka Mediaworks is a leading name in motion picture production, television programming and syndication, and digital content distribution.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



मसान

Masaan

निर्देशक की पहली फिल्म
के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

Indira Gandhi Award for
Best Debut Film of a Director

स्वर्ण कमल

SWARNA KAMAL

₹ 1,25,000/-

प्रशस्ति (Citation)

सामाजिक कायदों और नैतिक मान्यताओं के बदलते समीकरणों की उलझी परतों के मध्य फंसे चंद लोगों की कहानी इस तन्मयता और बारीकी से सुनाने के लिए।

For his perceptive approach to film-making in handling a layered story of people caught up in changing social and moral values.

मसान | Masaan

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 109 मिनट

निर्देशक: नीरज घेवान **निर्माता:** फैंटम फिल्मस, दृश्यम फिल्मस, मकासर प्रोडक्शंस और सिख्या इंटरटेनमेंट **पटकथा-गीत:** वरुण ग्रोवर **छायांकन:** अविनाश अरुण **संपादक:** नितिन बैद **ध्वनि:** संजय मौर्य-एलव्यन रेगो **संगीत:** ब्रूनो कोलाइस एवं इंडियन ओशन **अभिनय:** रिचा चड्ढा, संजय मिश्रा, विकी कौशल और श्वेता त्रिपाठी

2015 | Hindi | Digital | Colour | 109 minutes

Director: Neeraj Ghaywan **Producer:** Phantom Films, Drishyam Films, Macassar Productions & Sikhya Entertainment **Screenplay-Lyrics:** Varun Grover **Cinematographer:** Avinash Arun **Editor:** Nitin Baid **Sound:** Sanjay Maurya-Allwyn Rego **Music:** Bruno Coulais & Indian Ocean **Cast:** Richa Chadha, Sanjay Mishra, Vicky Kaushal & Shweta Tripathi

कथासार (Synopsis)

गंगा के किनारे चार जिन्दगियाँ, एक तथाकथित नीची जाति का लड़का जिसे प्रेम हो गया है, पहले ही यौन संबंध के त्रासद अन्त के अपराधबोध में डूबी एक बेटी, नैतिकता की जमीन खोता एक निस्सहाय पिता, और परिवार के लिए तड़पता एक जीवंत बच्चा, और ये सभी एक छोटे शहर के नैतिक बंधनों से आजादी के लिए जूझते हुए।

Four lives intersect along the Ganga: a low-caste boy hopelessly in love, a daughter ridden with guilt of a sexual encounter ending in a tragedy, a hapless father with fading morality, and a spirited child yearning for a family, long to escape the moral constructs of a small town.

परिचय (Profile)



नीरज घेवान (Neeraj Ghaywan)

नीरज घेवान वर्ष 2010 में अपने कॉर्पोरेट करियर को फिल्मों की दुनिया में नाम बनाने के लिए छोड़ आए थे। वे अनुराग कश्यप के *गैंग्स ऑफ वासेपुर* में सहयोगी थे और फिल्म *अग्ली* में उन्होंने सेकेंड यूनिट डायरेक्टर के तौर पर कार्य किया। उन्होंने दो लघु फिल्में भी बनाई हैं जिनके शीर्षक *दि एपिफेनी* और *शोर* हैं।

Neeraj Ghaywan moved on from a corporate career in 2010 to pursue film-making. He assisted Anurag Kashyap on the *Gangs of Wasseypur* series and was the second unit director for *Ugly*. He has also made two short films *The Epiphany* and *Shor*.



फैंटम फिल्मस, दृश्यम फिल्मस, मकासर प्रोडक्शंस, सिख्या इंटरटेनमेंट

(Phantom Films, Drishyam Films, Macassar Productions Sikhya Entertainment)

फैंटम फिल्मस चार निर्देशकों के द्वारा स्थापित एक जानीमानी फिल्म निर्माण कंपनी है; **दृश्यम फिल्मस** एक ग्लोबल मोशन पिक्चर स्टूडियो है; **मकासर प्रोडक्शंस** पेरिस स्थित कम्पनी है जो पिछले छः वर्ष से फिल्म निर्माण में सक्रिय है; **सिख्या इंटरटेनमेंट** नए फिल्मकारों के लिए एक रचनात्मक मंच है।

Phantom Films is India's first 'Directors-Company' with many acclaimed films; **Drishyam Films** is a global motion-picture studio; **Macassar Productions** is a Paris-based company which has been active in the production of films for six years; **Sikhya Entertainment** is a platform for creative minds, which has

always given a chance to debutant film-makers.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



बजरंगी भाईजान

Bajranji Bhaijaan

सम्पूर्ण मनोरंजन

प्रदान करनेवाली सर्वश्रेष्ठ फिल्म

Best Popular Film

Providing Wholesome Entertainment

स्वर्ण कमल

SWARNA KAMAL

₹ 2,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

एक महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दे को दिल को छू लेने वाली मनोरंजक कहानी में पिरोने के लिए।

Tackling an important social issue in a simple, heart-warming and entertaining format.

बजरंगी भाईजान | Bajranji Bhaijaan

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 159 मिनट

निर्देशक: कबीर खान **निर्माता:** सलमा खान, सलमान खान और रॉकलाईन वेंकटेश **पटकथा:** कबीर खान, परवेज शेख और वी विजेन्द्र प्रसाद
छायांकन: असीम मिश्रा **संपादक:** रामेश्वर भगत **संगीत:** प्रीतम **अभिनय:** समलान खान, करीना कपूर, नवाजुद्दीन सिद्दीकी और हर्षाली मल्होत्रा

2015 | Hindi | Digital | Colour | 159 minutes

Director: Kabir Khan **Producer:** Salma Khan, Salman Khan & Rockline Venkatesh **Screenplay:** Kabir Khan, Parveez Shaikh, V. Vijayendra Prasad **Cinematographer:** Aseem Mishra **Editor:** Rameshwar Bhagat **Music:** Pritam **Cast:** Salman Khan, Kareena Kapoor Khan, Nawazuddin Siddiqui & Harshaali Malhotra

कथासार (Synopsis)

पांच साल की एक पाकिस्तानी लड़की जो बोल नहीं सकती, एक भारतीय रेलवे स्टेशन पर अपनी माँ से बिछड़ जाती है। भूखे भटकते हुए उसे शरण मिलती है बजरंग बली के भक्त पवन के घर में। यह पवन की कहानी है जो दिखाती है कि कैसे वो तमाम मुसीबतों का सामना करते हुए भी बच्ची को उसके माता-पिता से मिलवाता है।

A five-year-old mute Pakistani girl is separated from her mother at an Indian railway station. Lost and hungry, she finds shelter in the house of Pavan, a devotee of Lord Hanuman. This is the story of Pavan's efforts to unite the child with her parents against all odds.

परिचय (Profile)



कबीर खान (Kabir Khan)

कबीर खान समकालीन हिन्दी सिनेमा के सबसे सफल फिल्मकारों में से एक हैं। उनके खाते *काबुल एक्सप्रेस*, *न्यू यॉर्क* तथा *एक था टाइगर* जैसी फिल्में दर्ज हैं। वे शौकीन फोटोग्राफर भी हैं और उनके काम को कई अन्तरराष्ट्रीय सम्मान मिले हैं। फीचर फिल्मों की दुनिया में आने से पहले वे एक चर्चित वृत्तचित्र फिल्मकार रहे हैं।

Kabir Khan is one of the most successful contemporary Hindi film-makers. His credits include *Kabul Express*, *New York* and *Ek Tha Tiger*. He is an avid photographer and his work has won a number of international awards. He was a well-regarded documentary film-maker before he ventured into feature films.



सलमान खान, सलमा खान, रॉकलाईन वेंकटेश

(Salma Khan, Salman Khan, Rockline Venkatesh)

सलमान खान और उनकी माँ **सलमा खान** एसकेएफ कंपनी की संस्थापक हैं जो कि एक भारतीय फिल्म और टेलिविज़न निर्माता कंपनी है जिसकी स्थापना सन् 2014 में हुई थी।

रॉकलाईन वेंकटेश रॉकलाईन प्रा. लि. के कार्यकारी निदेशक हैं। उन्होंने करीब तीस तमिल, तेलुगू, कन्नड़ व हिंदी फिल्मों का निर्माण किया है। वह कर्नाटक चलचित्र समिति के उपाध्यक्ष भी रहें हैं।

Salman Khan & his mother **Salma Khan** are the founders of Salman Khan Films more commonly known as 'SKF', which is an Indian film and television production company set up in 2014. **Rockline Venkatesh** is the managing director of Rockline Entertainments Pvt Ltd. He has produced thirty films in Telegu, Tamil, Kannada and Hindi and has also served as vice president of the Karnataka Film Chamber of Commerce.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



नानक शाह फ़कीर

Nanak Shah Fakir

राष्ट्रीय सद्भाव और एकता
के लिए सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का
नर्गिस दत्त पुरस्कार

Nargis Dutt Award for Best Feature Film
on National Integration

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 1,50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

उस महान आध्यात्मिक गुरु की जीवन कथा
जिसने सदा शान्ति और सद्भाव की अलख
जगाई।

The saga on the life of the great
spiritual master advocating the values
of peace and harmony.

नानक शाह फकीर | Nanak Shah Fakir

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 146 मिनट

निर्माता: गुरबानी मीडिया प्रा. लि. (हरिन्दर एस सिक्का) **पटकथा:** हरिन्दर एस सिक्का और ए के बीर **छायांकन:** ए के बीर और संदीप पाटिल
संपादक: अर्चित रस्तोगी **ध्वनि:** रेसुल फुकुटी **संगीत:** उत्तम सिंह **वस्त्र सज्जा:** पायल सलूजा **मेक-अप:** प्रीतिशील जी सिंह एवं क्लॉवर वूड्टॉन
अभिनय: आरिफ जकारिया, पुनीत सिक्का, अनुराग अरोड़ा और श्रद्धा कौल

2015 | Hindi | Digital | Colour | 146 minutes

Producer: Gurbani Media Private Limited (Harinder S. Sikka) **Screenplay:** Harinder S. Sikka, A.K. Bir **Cinematographer:** A.K. Bir, Sandeep Patil **Editor:** Archit Rastogi **Sound:** Resul Pookutty **Music:** Uttam Singh **Costume Designer:** Payal Saluja **Make-Up:** Preetisheel G. Singh and Clover Wootton **Cast:** Arif Zakaria, Puneet Sikka, Anurag Arora & Shraddha Kaul

कथासार (Synopsis)

यह फिल्म गुरु नानक के जीवन पर आधारित है जिन्होंने समता, शांति और ईश्वर एक है का संदेश दुनिया भर में घूम घूमकर लोगों को सिखाया। यह फिल्म इस महान यात्रा में इस संत के साथ साथ चलती है। यह सिख इतिहास को दिखाने वाली अपनी तरह की पहली फिल्म है जिसकी कथा गुरु नानक के मित्र, साथी और शिष्य भाई मर्दाना, जो स्वयं एक मुस्लिम संत थे, के नजरिए से सुनाई गई है।

The film is based on the life of Guru Nanak who travelled the world teaching equality, peace and that there's but One God. It follows the great saint on this epic journey. It is a first-of-its-kind film on Sikh history and is depicted through his friend, companion and disciple, Bhai Mardana, a Muslim fakir.

परिचय (Profile)

**हरिन्दर एस सिक्का** (Harinder S. Sikka)

गुरबानी मीडिया प्रा. लि. 2011 में शुरू की गई एक निजी कंपनी है। यह वित्तीय, तकनीकी, कला संबंधी, कानूनी और प्रबंधन गतिविधियों से जुड़ी है और **हरिन्दर एस सिक्का** इसके निर्देशक हैं। हरिन्दर एस सिक्का वर्ष 1979 में दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद शीघ्र ही भारतीय नौसेना में शामिल हो गए। उन्होंने वर्ष 1993 में नौसेना से जल्द रिटायरमेंट लिया और वे बड़ी दवा निर्माता कंपनी **निकॉल्स पीरामल इंडिया लिमिटेड** में शामिल हो गए, जहाँ वे आजकल निर्देशक, कॉर्पोरेट मामले के पद पर कार्यरत हैं।

Gurbani Media Private Limited is a private company incorporated in 2011. It is involved in publishing financial, technical, artistic, legal and marketing activities, with **Harinder S. Sikka** as a director. Harinder S. Sikka was commissioned in the Indian Navy soon after graduating from Delhi University in 1979. He took premature retirement in 1993 and joined the pharmaceutical giant Nicholas Piramal India Ltd. He is currently serving as Director, Corporate Affairs, with the same group.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



निर्णायकम

Nirnayakam

सामाजिक मुद्दों पर
सर्वश्रेष्ठ फिल्म

Best Film on Social Issues

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 1,50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

हड़तालों और प्रदर्शनों से बाधित होती आम आदमी की जीवनचर्या और आज़ादी के प्रासंगिक लेकिन अनछुए विषय को उठाने के लिए।

For tackling a relevant and unaddressed issue of curtailing freedom of movement for the common man due to hartals and processions.

निर्णायकम | Nirnayakam

2015 | मलयालम | डिजिटल | रंगीन | 113 मिनट

निर्देशक: वी के प्रकाश निर्माता: जयरज फिल्मस पटकथा: बॉबी और संजय छायांकन: शेहनाड जलाल संपादक: महेश नारायणन संगीत: एम जयचन्द्रन अभिनय: मालविका मोहनन, प्रेम प्रकाश, टिस्का चोपड़ा और गौरव मेनन

2015 | Malayalam | Digital | Colour | 113 minutes

Director: V.K. Prakash Producer: Jairaj Films Screenplay: Bobby, Sanjay Cinematographer: Shehnad Jalal Editor: Mahesh Narayanan Music: M. Jayachandran Cast: Malavika Mohanan, Prem Prakash, Tisca Chopra & Gaurav Menon

कथासार (Synopsis)

राष्ट्रीय सुरक्षा अकादमी में अजय अपना प्रशिक्षण कार्यक्रम अधूरा छोड़ देता है। पीछे घर पर उसके नाराज पिता उससे वापस कोचीन लौटने को कहते हैं। लेकिन जब उसे यह मालूम होता है कि उसके पिता बहुत बीमार हैं और उससे बोनमैरो का दान चाहते हैं, अजय खतरा भांप लेता है और इस मदद के बदले पैसे की मांग करता है।

Ajay quits his training program at the National Defence Academy. Back home, his long-estranged dad requests him to join him at Cochin. When Ajay discovers that his dad is seriously ill and expects him to donate his bone marrow, the youngster sees red and demands that he be paid money for it.

परिचय (Profile)



वी.के. प्रकाश (V.K. Prakash)

वी.के. प्रकाश ने अपनी थिएटर पृष्ठभूमि और विज्ञापन में वर्षों के अनुभव के साथ फिल्म निर्देशन में रास्ता बना लिया। वीके प्रकाश की दक्षता आयोजन में निहित है। उन्हें सन् 2000 में अपनी पहली फिल्म *पुनर्दिवासम* के लिए सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

With his theatre background and years in advertising, **V.K. Prakash** has made his way into ad film direction. His debut film *Punaradhivaasam* won the National Award in 2000 for best direction.

जयरज फिल्म्स (Jairaj Films)

जोस सिमन और राजेश जॉर्ज ने 2013 में **जयरज फिल्म्स** की स्थापना की, उनकी पहली फिल्म *जयसूर्या* और अनूप मेनन के साथ *होटल कैलिफोर्निया* थी। सन् 2015 में उन्होंने दिग्गज फिल्मकार वी.के प्रकाश के साथ *निर्णायकम* का निर्माण किया।

Jose Simon and Rajesh George formed **Jairaj Films** in 2013 with their first Film *Hotel California* with Jaysurya and Anoop Menon in the lead. In 2015, they joined hands with veteran film-maker V.K. Prakash to produce *Nirnayakam*.

JAIRAJ FILMS

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



वालिया चिराकुला पक्षीकाल

Valiya Chirakulla Pakshikal

सर्वश्रेष्ठ फिल्म

पर्यावरणीय संरक्षण पर

Best Film on Environment
Conservation/Preservation

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 1,50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

उत्तरी केरल में कीटनाशकों के इस्तेमाल के
दुष्परिणामों का हिला देनेवाला नाटकीय चित्रण।

A dramatically disturbing exposition of
the ill effects of pesticides in north
Kerala.

वालिया चिराकुला पक्षीकाल | Valiya Chirakulla Pakshikal

2015 | मलयालम, अंग्रेजी, फ्रेंच | डिजिटल | रंगीन | 115 मिनट

निर्देशक: डॉ बीजू निर्माता: माया मूवीज़ (डॉ ए के पिल्लई) पटकथा: डॉ बीजू छायांकन: एम जे राधाकृष्णन संपादक: कार्तिक जोगेश संगीत: संतोष चंद्रन अभिनय: कुंचाको बोबान, नेडुमुडी वेणू, सूरज वेंजारामूडू, सलीम कुमार और प्रकाश बारे

2015 | Malayalam, English, French | Digital | Colour | 115 minutes

Director-Screenplay: Dr Biju Producer: Maya Movies (Dr A.K. Pillai) Cinematographer: M.J. Radhakrishnan Editor: Karthik Jogesh Music: Santhosh Chandran Cast: Kunchacko Boban, Nedumudi Venu, Suraj Venjaramoodu, Salim Kumar & Prakash Bare

कथासार (Synopsis)

यह फिल्म केरल के कारागोड जिले में घटी वास्तविक त्रासदी का कल्पित विवरण है, जहाँ काजू की फसल पर खतरनाक कीटनाशक एंडोसल्फन के छिड़काव के दुष्परिणाम देखे गए। फिल्म इन कीटनाशकों के प्रभावों को एक फोटोग्राफर की नज़र से देखती है।

The film is a partly fictionalized presentation of the tragedy that has actually occurred in Ksaragod District of Kerala, thanks to aerial spraying of Endosulfan, a highly toxic pesticide, on cashew plantations. The film depicts the after-effects of the pesticide spraying through the eyes of a photographer.

परिचय (Profile)



डॉ बीजू (Dr Biju)

डॉ बीजू कई राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कारों के विजेता हैं। वे पेशे से होमियोपैथ होने के साथ ही स्व-प्रशिक्षित फिल्मकार हैं। वे भारत के राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के तीन बार विजेता रहे हैं। वे 2012 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों की ज्यूरी के सदस्य भी रहे हैं।

Dr Biju has won multiple national and international awards. He is a homoeopath by profession and a self-taught film-maker. He won India's National Film Award three times. He also served as jury member for India's National Film Awards 2012.



माया मूवीज़ (Maya Movies)

माया मूवीज़ एक भारतीय फिल्म निर्माण कंपनी है जो अन्तरराष्ट्रीय स्तर की कलात्मक और सामाजिक रूप से प्रासंगिक फिल्मों के निर्माण के लिए जानी जाती है।

Maya Movies is an Indian film production house producing artistic and socially relevant movies with international standards.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



दूरंतो
Duronto

बच्चों की सर्वश्रेष्ठ फिल्म
Best Children's Film

स्वर्ण कमल
SWARNA KAMAL
₹ 1,50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

उस विलक्षण बालक की कथा जिसने अपने दुर्दम्य साहस के बल पर असंभव की कामना की।

Story of a child prodigy with an undying spirit to achieve the impossible.

दूरंतो | Duronto

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 112 मिनट

निर्देशक: सुमेन्द्र पाढी निर्माता: कोड रेड फिल्मस पटकथा: सुभाष साहू छायांकन: मनोज खटोई संपादक: शिव कुमार पणिकर संगीत: सिद्धान्त माथुर अभिनय: मनोज बाजपई और मयूर महेन्द्र पटोले

2015 | Hindi | Digital | Colour | 112 minutes

Director: Soumendra Padhi Producers: Code Red Films Screenplay: Subhash Sahoo Cinematographer: Manoj Khato Editor: Shiv Kumar Panicker Music: Sidhant Mathur Cast: Manoj Bajpayee & Mayur Mahendra Patole

कथासार (Synopsis)

बुधिया सिंह को चार साल की उमर में ही उसकी निर्धन माँ ने बेच दिया था। बाद में उसे स्थानीय जूडो कोच और झोपड़पट्टी के बच्चों के लिए अनाथालय चलाने वाले बिरंची सिंह ने बचाया। बुधिया की दौड़ने की प्रतिभा को देखकर बिरंची ने उसे चमत्कारी धावक में बदलने को मिशन बना लिया, लेकिन इसके त्रासद परिणाम हुए।

Budhia Singh is sold at the age of four by his impoverished mother. He is then rescued by a concerned local judo coach, Biranchi, who runs an orphanage for slum children. Discovering Budhia's talent for running, Biranchi embarks on a mission to turn Budhia into a running phenomenon, with tragic consequences.

परिचय (Profile)



सुमेन्द्र पाढी (Soumendra Padhi)

सुमेन्द्र पाढी ने फिल्ममेकिंग और एनिमेशन मुम्बई के एक संस्थान से सीखा। फिर उन्होंने 200 से ज्यादा टेलिविज़न विज्ञापनों में सहयोगी के बतौर काम किया। दूरन्तो उनकी पहली फिल्म है।

Soumendra Padhi studied film-making and animation from a film institute in Mumbai. He then worked as an assistant on more than 200 TV commercials. Duronto is his debut film.



कोड रेड फिल्मस (Code Red Films)

2003 में आरंभ करनेवाली कोड रेड फिल्मस ने 650 से ज्यादा टेलिविज़न विज्ञापन बनाए हैं जिनकी रचना में देश के सबसे उर्वर मस्तिष्क और नामचीन ब्रांड शामिल रहे। उनकी बनाई विज्ञापन फिल्में कई राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुकी हैं।

Starting in 2003 Code Red Films has made over 650 TV commercials, engaging with the best creative minds and some of the finest brands in the country. Its ad films have picked up many national and international awards.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



कोथानोदी

Kothanodi

सर्वश्रेष्ठ असमिया फ़िल्म
Best Assamese Film

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 1,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

लोकगाथाओं से बुनी काव्यात्मक फ़िल्म, जो लोक मिथकों में मौजूद इंसानी मस्तिष्क के अंधेरे हिस्सों को जीवित कर देती है।

A stylized, poetic film interweaving four folk stories, evoking the terrifying undercurrents of human mind as depicted in folk mythology.

कोथानोदी | Kothanodi

2015 | असमिया | डिजिटल | रंगीन | 117 मिनट

निर्देशक: भास्कर हज़ारिका निर्माता: मेटानॉर्मल मोशन पिक्चर्स पटकथा: भास्कर हज़ारिका और अरुप पतंगिया-कलिता छायांकन: विजय कुट्टी
संपादक: सुरेश पाई अभिनय: आदिल हुसैन, सीमा विस्वास, कोपिल बोरा, ज़ेरीफा वाहीद और कास्वी शर्मा

2015 | Assamese | Digital | Colour | 117 minutes

Director: Bhaskar Hazarika Producer: Metanormal Motion Pictures Screenplay: Bhaskar Hazarika & Arupa Patangia-Kalita
Cinematographer: Vijay Kutty Editor: Suresh Pai Cast: Adil Hussain, Seema Biswas, Kopil Bora, Zerifa Wahid & Kasvi Sharma

कथासार (Synopsis)

कोथानोदी असम के साहित्यिक विद्वान लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ द्वारा 1911 में संग्रहित असमिया लोककथा संग्रह *बुरी अरि साधु* की चार लोककथाओं में आई घटनाओं और किरदारों को अपनी कथावस्तु बनाती है। जैसे यह दादीअम्मा की कहानियाँ सदा से बच्चों की कथाएं बताकर सुनाई जाती रही हैं लेकिन कोथानोदी इन्हें गैरपरंपरागत और ज्यादा स्याह दिशाओं में ले जाती है।

Kothanodi adapts its story from events and characters in four stories in the Assamese folktales compendium *Buri Ai'r Xadhu*, compiled by Assam's foremost literary luminary Laxminath Bezbarua in 1911. While the stories in *Grandma's Tales* have traditionally been presented as tales for children, *Kothanodi* tries to push them towards darker, unorthodox directions.

परिचय (Profile)



भास्कर हज़ारिका (Bhaskar Hazarika)

भास्कर हज़ारिका दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से इतिहास में स्नातक हैं। उन्होंने भारतीय सिनेमा और टेलिविज़न के लिए खूब लिखा है। अब्बास-मुस्तान की *प्लेयर्स* (2012) के वे सह-लेखक हैं और फिल्म *पीपली लाइव* के निर्माण पर बने वृत्तचित्र *लाइव फ्रॉम पीपली* (2010) के वे सह-निर्देशक हैं।

Bhaskar Hazarika graduated in history from St. Stephen's College, University of Delhi. He has worked extensively in Indian film and television, writing for television shows as well as films. He has co-written the screenplay for Abbas-Mustan's *Players* (2012) and co-directed the documentary *Live From Peepli* (2010), a film on the making of *Peepli Live*.

मेटानॉर्मल मोशन पिक्चर्स (Metanormal Motion Pictures)

मेटानॉर्मल मोशन पिक्चर्स की स्थापना सन् 2013 हुई थी। इस कंपनी का उद्देश्य भारत के उत्तर पूर्वी हिस्से से विश्व स्तरीय फिल्मों का निर्माण करना है। यह कंपनी वृत्तचित्रों और कॉरपोरेट फिल्मों का भी निर्माण करती है।

Metanormal Motion Pictures was founded in 2013. The company's vision is to produce world-class films from India's north east. The company also produces documentaries and corporate features.



63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



शंखोचिल

Shankhachil

सर्वश्रेष्ठ बांग्ला फिल्म
Best Bengali Film

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 1,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

विचारोत्तेजक फिल्म जिसकी कथा राष्ट्र की सीमाओं में बंधी मानवता की तड़प को रेखांकित करती है।

An evocative story that highlights the theme of suffering humanity, divided by national borders.

शंखोचिल | Shankhachil

2105 | बांग्ला | डिजिटल | रंगीन | 134 मिनट

निर्देशक—पटकथा—संगीत: गौतम घोष निर्माता: निडास क्रियेशंस एंड प्रॉडक्शन प्रा लि छायांकन: ईशान घोष संपादक: बैशाली दासगुप्ता भौमिक, अभिनय: प्रसेनजीत चटर्जी, कुशुम सिकदर, दीपांकर डे और सजबती

2105 | Bengali | Digital | Colour | 134 minutes

Director-Screenplay-Music: Goutam Ghose Producer: Nideas Creations & Productions Pvt Ltd Cinematographer: Ishaan Ghose

Editor: Baishali Dasgupta Bhowmik Cast: Prosenjit Chatterjee, Kushum Shikder, Dipankar Dey & Sajbati

कथासार (Synopsis)

मुंतासिर बादल चौधरी बांग्लादेश के अध्यापक हैं जिन्हें वहाँ बहुत पसन्द किया जाता है। वे भारतीय सीमा किनारे बसे एक गाँव में रहते हैं। उनका एक सुन्दर संसार है जिसमें उनकी पत्नी और बेटी है। कंटिले तार बस एक भौगोलिक सच्चाई है और कभी कभी उन्हें उनका अतीत याद दिलाते हैं। लेकिन एक दिन उन्हें इस अतीत का सामना करना पड़ता है। यह फिल्म खंडित भू-भागों की कहानी है जहाँ लोग अपना भाग्य दोबारा लिखने की कोशिश कर रहे हैं।

Muntasir Badal Choudhury is a respected and much loved teacher in Bangladesh, residing in a village close to the Indian border. He has created a beautiful world with his wife and daughter. The barbwire is but a mere part of their geography and an occasional reminder of a not-so-distant past. Only till they are forced to face it. The film is a human saga of a truncated land and how people are trying to relive their destiny.

परिचय (Profile)



गौतम घोष (Goutam Ghose)

गौतम घोष भारत के सबसे जाने-माने फिल्मकारों, संगीतज्ञों और चलचित्रकारों में से एक हैं। उनके नाम सोलह राष्ट्रीय पुरस्कार दर्ज हैं और कई अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार भी जिनमें *सिल्वर बलून*, *नंतेस फिल्म फेस्टिवल*, *यूनेस्को पुरस्कार*, *कान फिल्म समारोह*, *रेड क्रॉस सम्मान* शामिल हैं।

Goutam Ghose is one of India's most acclaimed film-makers, composers and cinematographers. He has won sixteen National Awards and many international awards like Silver Balloon Award, the Nantes Film Festival, the UNESCO Award, the Cannes Film Festival, Red Cross Award and many more.

निडास क्रियेशंस एंड प्रॉडक्शंस प्रा लि

(Nideas Creations and Productions Pvt Ltd)

निडास क्रियेशंस एंड प्रॉडक्शंस प्रा लि एक फिल्म और टेलिविजन निर्माण कंपनी है। जिसका पूर्वनाम *आइडियाज* रहा है। यह मनोरंजन के सम्पूर्ण दायरों को शामिल करती कंपनी राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता और आधुनिक बांग्ला सिनेमा के नायक प्रसेनजीत चटर्जी द्वारा 3 जून 2004 में शुरु की गई है।

Nideas Creations and Productions Pvt Ltd is a film and television production house which was earlier known as Ideas, a 360° entertainment company under the aegis of the National Award winning actor, Prosenjit Chatterjee, the doyen of modern Bengali cinema. The journey began on 3 June 2004.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



दम लगा के हइशा

Dum Laga Ke Haisha

सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फिल्म

Best Hindi Film

रजत कमल

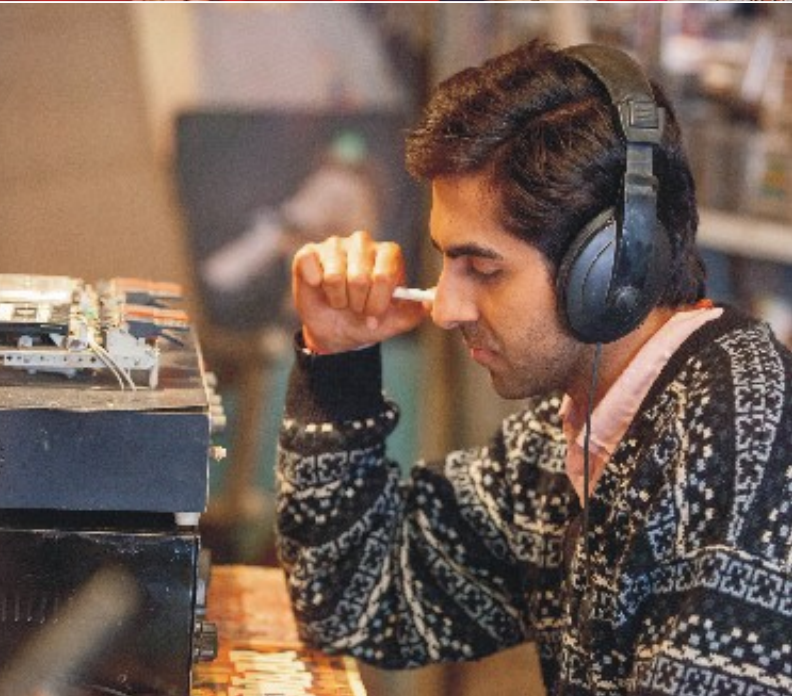
RAJAT KAMAL

₹ 1,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

हरिद्वार के गंगा घाट पर बसी एक प्यारी और प्रभावी फिल्म जो मध्यमवर्गीय पूर्वाग्रहों को चुनौती देती है, खासकर दुल्हन के चयन में।

A sweet and resonant film set in Haridwar and challenges the middle-class prejudices in choosing a bride.



दम लगा के हइशा | Dum Laga Ke Haisha

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 111 मिनट

निर्देशक—पटकथा: शरत कटारिया निर्माता: मनीष शर्मा छायांकन: मनु आनंद संपादक: नम्रता राव संगीत: अनु मलिक गीत: वरुण ग्रोवर अभिनय: आयुष्मान खुराना, भूमि पेडनेकर और संजय मिश्रा

2015 | Hindi | Digital | Colour | 111 minutes

Director-Screenplay: Sharat Katariya Producer: Maneesh Sharma Cinematographer: Manu Anand Editor: Namrata Rao Music: Anu Malik Lyrics: Varun Grover Cast: Ayushmann Khurrana, Bhumi Pednekar & Sanjay Mishra

कथासार (Synopsis)

प्रेम ऑडियो कैसेट रिकॉर्ड करने की दुकान चलाता है। लेकिन उनकी निजी जिन्दगी में झटका आने वाला है, उसकी शादी संध्या से होनेवाली है। संध्या, जिसे अपनी ही शादी में नाचने में कोई शर्म नहीं। संध्या वो सबकुछ है जो वो खुद नहीं है, वजन मिलाकर। जब वो अपने पूर्वनिर्मित 'आदर्श बीवी' के ख्यालों से जूझ रहा है, उसे समझ आता है कि उसकी यही भारी वजन बीवी दरअसल उसे किसी बेहतर दिशा में ले जाने आई है।

Prem bootlegs music cassettes. His personal life is in for a major bump: he is about to be married off to Sandhya, who likes to dance to band tunes even at her own wedding. She is everything he isn't, including her size. While he is still fighting his own preconceived notions of a model bride he dreamt of, he discovers that his oversized wife, who he thought was a spanner in his pool, will actually lead him to something quite fulfilling.

परिचय (Profile)



शरत कटारिया (Sharat Katariya)

शरत कटारिया जामिया मिल्लिया इस्लामिया से पढ़े हैं। उन्होंने अपना करियर रजत कपूर के सहायक के बतौर शुरू किया। उनके लेखकीय करियर में *भेजा फ्राई* जैसी सुपरहिट फिल्म शामिल है।

Sharat Katariya is an alumnus of Jamia Milia Islamia. He started his film career as an assistant to Rajat Kapoor. His writing credits include the super-hit *Bheja Fry*.



मनीष शर्मा (Maneesh Sharma)

मनीष शर्मा यशराज फिल्मस के बैनर तले इस फिल्म के साथ ही स्वतंत्र निर्माता बने हैं। उनके पूर्व निर्देशकीय कार्यों में *बैंड बाजा बरात*, *लेडीज वर्सेस रिक्की बहल* तथा *शुद्ध देसी रोमांस* शामिल हैं। हाल ही में उन्होंने शाहरुख खान अभिनीत *फैन* का निर्देशन किया।

Maneesh Sharma turned independent producer with this film made under the banner of Yash Raj Films. His earlier credits as director include *Band Baaja Baaraat*, *Ladies Vs Ricky Bahl* and *Shuddh Desi Romance*. He has recently directed the Shah Rukh Khan starrer, *Fan*.

63^{वें}

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



तिथि

Thithi

सर्वश्रेष्ठ कन्नड़ फ़िल्म
Best Kannada Film

रजत कमल
RAJAT KAMAL
₹ 1,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

ग्रामीण जीवन का मोहक, अतिथार्थवादी लेकिन मार्मिक चित्रण जिसे हास्य और व्यंग्य के स्वर में सुनाया गया है।

A striking and realistically charming portrayal of life in a village, told in the idiom of comedy and surrealism.

तिथि | Thithi

2015 | कन्नड़ | डिजिटल | रंगीन | 123 मिनट

निर्देशक: राम रेड्डी **निर्माता:** पीआरएसपीसीटीवीएस प्रॉडक्शन्स प्रा लि **पटकथा:** राम रेड्डी और इरेगौड़ा **छायांकन:** दोरोन टेम्पर्ट **संपादक:** जॉन जिमरमैन और राम रेड्डी **अभिनय:** थम्मगेगौड़ा, चन्नेगौड़ा, अभिषेक एच एन, पूजा एस एम और सिंगरी गौड़ा

2015 | Kannada | Digital | Colour | 123 minutes

Director: Raam Reddy **Producer:** PRSPCTVS Productions Pvt. Ltd **Screenplay:** Raam Reddy & Eregowda **Cinematographer:** Doron Tempert **Editor:** John Zimmermann & Raam Reddy **Cast:** Thammegowda, Channegowda, Abhishek H.N., Pooja S.M. & Singri Gowda

कथासार (Synopsis)

तिथि एक नाटकीय व्यंग्य कथा है जहाँ तीन अलग पीढ़ियों से नाता रखते पुत्र अपने खानदान के सबसे वृद्ध व्यक्ति और स्थानीय लोगों में 101 साला झगड़ालू बुढ़े के तौर पर मशहूर *सेंचुरी गौड़ा* की मृत्यु पर भिन्न प्रतिक्रियाएं देते हैं। दक्षिण भारत के एक सुदूर गांव की इस कहानी में तीन अन्तरकथाएं हैं और वे अन्त में जाकर सेंचुरी गौड़ा की मृत्यु के ग्यारह दिन पश्चात होनेवाले संस्कार 'तिथि' पर टकराती हैं।

Thithi is a dramatic comedy about how three generations of sons react to the death of the oldest in their clan, a man named Century Gowda: a locally renowned, highly cantankerous 101-year-old man. Set in a remote village in South India, the three storylines intertwine before converging at Century Gowda's 'thithi', the final funeral celebration, 11 days after a death.

परिचय (Profile)

**राम रेड्डी** (Raam Reddy)

राम रेड्डी सेंट स्टीफेंस कॉलेज, दिल्ली से स्नातक हैं और प्राग फिल्म स्कूल के छात्र रहे हैं। उन्होंने अपना पहला उपन्यास *इट्स रैनिंग इन माया* 2011 में लिखा। वे अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सराही गई लघु फिल्म *इका* (2011) और चेक लघु फिल्म *जारो* (2012) के निर्देशक हैं। *तिथि* उनकी पहली फीचर फिल्म है।

Raam Reddy is a graduate of St. Stephen's College, Delhi, and Prague Film School. He wrote his debut novel *It's Raining in Maya* in 2011. He is the director of the internationally acclaimed short film *Ika* in 2011 and Czech short film *Jaro* in 2012. *Thithi* is his debut feature film.

**पीआरएसपीसीटीवीएस प्रॉडक्शन्स प्रा लि** (PRSPCTVS Productions Pvt. Ltd)

प्रताप रेड्डी ने 2012 में **पीआरएसपीसीटीवीएस प्रॉडक्शन्स प्रा लि** की शुरुआत के साथ सिनेमा जगत में प्रवेश किया और *तिथि* उनका पहला निर्माण है।

Pratap Reddy promoted **PRSPCTVS Productions Pvt. Ltd** in 2012 to enter the cinema industry and *Thithi* is its debut production.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



एनिमी

Enemy

सर्वश्रेष्ठ कोंकणी फिल्म
Best Konkani Film

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 1,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

एक सैनिक का दर्द बयान करती फिल्म, जो अपनी संपत्ति बचाने की कोशिश में कानूनी झमेले में उलझ गया है।

A powerful film about a soldier's plight, caught up in the legal entanglement trying to safeguard his property.

एनिमी | Enemy

2015 | कोंकणी | डिजिटल | रंगीन | 93 मिनट

निर्देशक: दिनेश पी भोंसले निर्माता: प्रसाद क्रियेशन्स पटकथा: दिनेश पी भोंसले छायांकन: विक्रमकुमार अमलादि संपादक: वीरेन्द्र हरि घारसे संगीत: कोट्टा अभिनय: सलिल नायक, मीनाक्षी मार्टिन्स, एंटोनियो क्रुस्टो और समीक्षा देसाई

2015 | Konkani | Digital | Colour | 93 minutes

Director: Dinesh P. Bhonsle Producer: Prasad Creations Screenplay: Dinesh P. Bhonsle Cinematographer: Vikramkumar Amladi Editor: Virendra Hari Gharse Music: Schubert Cotta Cast: Salil Naik, Meenacshi Martins, Antonio Crusto & Samiksha Desai

कथासार (Synopsis)

उत्सव के माहौल में अचानक एक दिन गोवा के कैथोलिक परिवार को पता चलता है कि उनकी संपत्ति सरकार ने हड़प ली है और उनके परिवार की इज्जत भी खतरे में है। संजीत, सैनिक पुत्र को एक अलग ही लड़ाई लड़नी है। जैसे जैसे तनाव बढ़ता है संजीत स्वयं को किनारे पर खड़ा पाता है। उसकी प्रतिक्रिया एक रोचक अन्त रचती है।

In the midst of the festive season, a Goan Catholic family discovers that they have lost their property to the government and their family honour is at stake. Sanjit, the soldier son, has to fight a different battle. As the tension and drama builds up, Sanjit finds himself pushed to the edge. His reaction leads to a gripping climax.

परिचय (Profile)



दिनेश पी. भोंसले (Dinesh P. Bhonsle)

दिनेश पी. भोंसले गोवा में पैदा हुए और वहीं बड़े हुए। विज्ञान में स्नातक के बाद उन्होंने नाट्यकला में डिप्लोमा किया। उन्होंने सम्मानीय फिल्म संपादक वामन भोंसले के अधीन काम किया है। उन्होंने पुरस्कृत मराठी फिल्म *मर्मबंध* तथा हिन्दी फीचर फिल्म *कालपोर* का निर्देशन किया है।

Dinesh P. Bhonsle was born and brought up in Goa. After graduating in science, he completed his diploma in theatre art. He worked under renowned film editor Waman Bhonsle. He has directed an award-winning Marathi feature film *Marmabandh* and a Hindi feature film *Calapor*.



प्रसाद क्रियेशन्स (Prasad Creations)

ए दुर्गा प्रसाद प्रसाद क्रियेशन्स के मालिक हैं और गोवा के उद्यमी व्यापारी हैं। प्रसाद क्रियेशन्स अच्छे सिनेमा के निर्माण का पक्षधर है जो वर्तमान समय के लिए उपयोगी हो।

A. Durga Prasad, proprietor of **Prasad Creations**, is an enterprising businessman of Goa. Prasad Creations intends to make good cinema meaningful to contemporary times.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



पाथेमारी

Pathemari

सर्वश्रेष्ठ मलयालम फिल्म
Best Malayalam Film

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 1,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

एक व्यक्ति की कहानी के माध्यम से सुनाई गई दो पीढ़ियों के मलयाली कामगारों की कथा, जो अरब देशों में काम की तलाश में जाते हैं।

Artistically narrated saga of two generations of Malayali workers who migrated to the gulf for livelihood, told through the poignant story of one man.

पाथेमारी | Pathemari

2015 | मलयालम | डिजिटल | रंगीन | 110 मिनट

निर्देशक: सलीम अहमद निर्माता: एलेंस मीडिया पटकथा: सलीम अहमद छायांकन: मधु अंबट ध्वनि: रेसुल फुकुडी और अमृत प्रीतम अभिनय: ममूटी, श्रीनिवास, सिद्दीकी और जॉय मैथ्यू

2015 | Malayalam | Digital | Colour | 110 minutes

Director: Salim Ahamed Producer: Allens Media Screenplay: Salim Ahamed Cinematographer: Madhu Ambat Sound: Resul Pookuty & Amrit Pritam Cast: Mammooty, Srinivasan, Siddique & Joy Mathew

कथासार (Synopsis)

यह फिल्म उन लोगों की कहानी है जिन्होंने केरल के समन्दर किनारों से लेकर मध्यपूर्व के अनन्त रेगिस्तानों तक तमाम अकल्पनीय मुसीबतें सही, बस एक उम्मीद में कि घर में उनके पीछे छोटे लोगों का जीवन और भविष्य सुधर जाए। फिल्म का कथासूत्र पांच दशकों में फैले केरल से खाड़ी देशों में पलायन को केन्द्र बनाता है और इसकी बारीकियाँ हम केरल के ग्रामीण नारायणन के जीवन के माध्यम से देखते हैं।

The film is a broad, earthy, sweep of the life and times of the desperate from Kerala's shores who braved overwhelming odds in the endless deserts of the Middle East for much of their lives, hoping to carve out a future for their dear ones back home. The film's core thread runs through five distinctly different decades of the gulf migration phenomenon and its nuances spelt out through the life and times of Narayanan, a typical Keralite villager.

परिचय (Profile)



सलीम अहमद (Salim Ahamed)

सलीम अहमद की पहली निर्देशकीय फिल्म *एदमिन्ते माकन अबु* (2011) ने बहुत तारीफें बटोरें और कई मामलों में ट्रेंडसेटर बनी। यह 84वें अकादमी पुरस्कारों में भारत की अधिकृत प्रतिष्ठि भी थी। सलीम की दूसरी फिल्म *कुंजन्थांते काडा* (2013) भी बराबरी से सराही गई।

Salim Ahamed's directorial debut *Adaminte Makan Abu* (2011) was critically acclaimed as a trendsetter and fetched him numerous accolades. It was also India's official entry in the best foreign film category for the 84th Academy Awards. Salim's second project *Kunjananthante Kada* (2013) was equally applauded.



एलेन्स मीडिया (Allens Media)

एलेन्स मीडिया केरला स्थित एक फिल्म प्रोडक्शन कंपनी है जो कि मुख्यतः मलयालम फिल्मों का निर्माण करती है। इसके मालिक सलीम अहमद हैं।

Allens Media is a Kerala-based film production house, which primarily produces Malayalam Films. It is owned by Salim Ahamed.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



रिंगन

Ringan

सर्वश्रेष्ठ मराठी फिल्म
Best Marathi Film

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 1,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

पिता-पुत्र की दिल को छू लेनेवाली कहानी, जो महाराष्ट्र में किसान आत्महत्या के समय मृत्यु को नहीं, जीवन को चुनते हैं और उसके लिए संघर्ष करते हैं।

A heart-rending survival story of a father-son duo, who decide to fight and live rather than end their lives, in the background of farmer suicides in Maharashtra.

रिंगन | Ringan

2015 | मराठी | डिजिटल | 109 मिनट

निर्देशक: मकरंद माने **निर्माता:** माई रोल मोशन पिक्चर्स **पटकथा:** मकरंद माने **छायांकन:** अभिजीत डी अबडे **संपादक:** सुचित्रा साठे **संगीत:** रोहित नागभ **अभिनय:** शशांक शेंदे, साहिल जोशी, सुहास सिरसात, कल्याणी मुले, उमेश जगताप और अभय महाजन

2015 | Marathi | Digital | Colour | 109 minutes

Director: Makarand Mane **Producer:** My Role Motion Pictures **Screenplay:** Makarand Mane **Cinematographer:** Abhijit D. Abde **Editor:** Suchitra Sathe **Music:** Rohit Nagbh **Cast:** Shashank Shende, Sahil Joshi, Suhas Sirsat, Kalyanee Mulay, Umesh Jagtap & Abhay Mahajan

कथासार (Synopsis)

यह पिता पुत्र के मध्य संबंधों की कहानी है। किसानों और उनके परिवारों की हृदय विदारक कथा भी इसके माध्यम से दर्शायी गई है। पिता अर्जुन के मन में कर्ज के चलते आत्महत्या का विचार आने लगा है। लेकिन अपने हठीले और जिद्दी बेटे अभिमन्यु की चिंता और उसके प्रति प्यार उन्हें ऐसा करने से रोकता है। यही प्यार उन्हें अपनी जमीन को कर्ज से छुड़ाने के लिए ज़रूरी पैसे कमाने को प्रेरित करता है।

This is a story about relationship between father and son. It is a heart-wrenching tale which depicts the harsh reality confronting the farmers and their families. Arjun, the father, develops suicidal tendencies due to debts. But his love and concern for his self-willed, stubborn son, Abhimanyu, motivates him to earn the money needed to buy back his ancestral land.

परिचय (Profile)

**मकरंद माने** (Makarand Mane)

मकरंद माने ने ललित कला केन्द्र अकादमी, पुणे से परफॉर्मिंग आर्ट में स्नातक किया है। उन्होंने मराठी चैनल साम के लिए *भाईरोबा* नामक धारावाहिक निर्देशित किया है। उन्होंने कई मराठी फिल्मों में सह निर्देशक के तौर पर काम किया है। *रिंगन* उनकी पहली फीचर फिल्म है।

Makarand Mane holds a BA in Performing Arts from Lalit Kala Kendra Academy, Pune. He directed a TV serial, *Bhairoba*, for Marathi channel Saam TV, and worked as an associate director for several Marathi feature films. *Ringan* is his first feature film.

**माई रोल मोशन पिक्चर्स** (My Role Motion Pictures)

माई रोल मोशन पिक्चर्स 2014 फिल्म उद्योग में विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय पांच सहयोगियों द्वारा शुरू की गई – विठ्ठल पाटिल, गणेश फूके, महेश येवाले, मकरंद माने, योगेश निकम। यह इनकी पहली फिल्म है।

My Role Motion Pictures was started in 2014 by five partners – Vitthal Patil, Ganesh Phuke, Mahesh Yewale, Makarand Mane, Yogesh Nikam – working in different departments in the film industry. This is its first film.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



पहाड़ा रा लुहा

Pahada Ra Luha

सर्वश्रेष्ठ उड़िया फिल्म

Best Odiya Film

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 1,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

गंभीर राजनैतिक बदलावों और माओवादी उग्रवाद के दौर में उड़ीसा के आदिवासियों के पच्चीस साला जीवन चक्र को अभिलेखित करती फिल्म।

Chronicles 25 years of the life of innocent tribals of Odisha, in the backdrop of the massive political transformations and Maoist insurgency.

पहाड़ा रा लुहा | Pahada Ra Luha

2015 | उड़िया | डिजिटल | रंगीन | 106 मिनट

निर्देशक-पटकथा: सब्यसाची मोहापात्रा **निर्माता:** मोहापात्रा मूवी मैजिक प्रा लि **छायांकन:** कुमार सी देव मोहापात्रा और देबेन मिश्रा **संपादक:** कुमार सी देव मोहापात्रा और बी सतीश **अभिनय:** सोमेन पुजारी, स्वाति रॉय, सरत पुजारी और अश्रुमिचान

2015 | Odiya | Digital | Colour | 106 minutes

Director-Screenplay: Sabyasachi Mohapatra **Producer:** Mohapatra Movie Magic Pvt. Ltd **Cinematographer:** Kumar C. Dev Mohapatra & Deben Mishra **Editor:** Kumar C. Dev Mohapatra & B. Satish **Cast:** Soumen Pujari, Swati Roy, Sarat Pujari & Ashrumichan

कथासार (Synopsis)

समीर दास एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं और पश्चिमी उड़ीसा की घाटियों में आदिवासी विस्थापन और उससे उपजे माओवादी नक्सल आन्दोलन के हत्यारे संघर्ष का समाधान तलाश करने के लिए भटकते रहते हैं। वे अपनी यादों के गलियारे में वापस लौटते हैं जब वे रोमांचक पर्वतीय आदिवासी गाँव घुमा की अपनी पच्चीस साल पुरानी यात्रा के बारे में बताते हैं।

Sameer Das, a social activist, travels across the blood-splattered valleys of western Odisha in search of a solution to the seemingly never-ending problem of tribal displacement and the resulting violence of the Mao Naxal movement. He travels down memory lane to the time he had visited the fascinating mountain tribal village of Ghuma twenty-five years ago.

परिचय (Profile)



name as producer, director and writer.

सब्यसाची मोहापात्रा (Sabyasachi Mohapatra)

सब्यसाची मोहापात्रा उड़ीसा के संभवतः सबसे जानीमाने फिल्मकार हैं। उनकी फिल्में ज्यादातर आदिवादी और ग्रामीण पृष्ठभूमि वाली होती हैं। उन्हें 1990 में उड़ीसा सरकार द्वारा उड़िया सिनेमा में महत्वपूर्ण योगदान के लिए सम्मानित किया गया। उनके नाम एक लेखक, निर्माता और निर्देशक के तौर पर कई सफल और आलोचकीय तारीफें प्राप्त फिल्में हैं।

Sabyasachi Mohapatra is probably the best-known film-maker from Odisha. His films mostly revolve around tribal and rural themes. He was recognized and felicitated by the Government of Odisha for his contribution to Odiya cinema in 1990. Mohapatra has many big-grossing, critically acclaimed credits to his



मोहापात्रा मूवी मैजिक प्रा लि (Mohapatra Movie Magic Pvt. Ltd)

मोहापात्रा मूवी मैजिक प्रा लि के मालिक सुशांत मोहापात्रा हैं। उड़िया फिल्मोद्योग के सबसे सम्मानित फिल्म निर्माताओं में से एक। निर्माता के रूप में उनके खाते कई सम्मान हैं जिसमें राष्ट्रीय पुरस्कार भी शामिल है।

Mohapatra Movie Magic Pvt. Ltd is a production company owned by Sushanta Mohapatra, one of the most respected and known producers in Odiya film industry. He has many critical acclaims to his name as a producer, including National Awards.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



चौथी कूट Chauthi Koot

सर्वश्रेष्ठ पंजाबी फिल्म
Best Punjabi Film

रजत कमल
RAJAT KAMAL
₹ 1,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

पंजाब में उग्रवाद के दौर के डर और तनाव को प्रभावी रूप से दर्ज करती फिल्म।

Effectively captures the sense of fear psychosis and tension during the times of insurgency in Punjab.

चौथी कूट | Chauthi Koot

2015 | पंजाबी | डिजिटल | रंगीन | 116 मिनट

निर्देशक: गुरविंदर सिंह **निर्माता:** राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम एवं दि फिल्म कैफे एंटरटेनमेंट प्रा लि **पटकथा:** गुरविंदर सिंह, वरयाम सिंह संधू और जसदीप सिंह **छायांकन:** सत्य राय नागपाल **संपादक:** भूपेन मिक्की शर्मा **संगीत:** मार्क मर्डर **अभिनय:** सुविंदर विककी, राजबीर कौर, गुरप्रीत कौर भंगू और तरनजीत सिंह

2015 | Punjabi | Digital | Colour | 116 minutes

Director: Gurvinder Singh **Producer:** National Film Development Corporation & The Film Cafe Entertainment Pvt. Ltd **Screenplay:** Gurvinder Singh, Waryam Singh Sandhu & Jasdeep Singh **Cinematographer:** Satya Rai Nagpaul **Editor:** Bhupesh Micky Sharma **Music:** Marc Marder **Cast:** Suvinder Vikky, Rajbir Kaur, Gurpreet Kaur Bhangu & Taranjeet Singh

कथासार (Synopsis)

चौथी कूट अस्सी के दशक में पंजाब के वातावरण में फैले डर, संदेह और उन्माद को ज़िन्दा करती है। कथा के केन्द्र में हैं दो भिन्न घटनाएं, पहली जिसमें दो हिन्दू दोस्त अमृतसर जाने की कोशिश कर रहे हैं, और दूसरी उसके कुछ महीने पहले की घटना जहाँ एक किसान को बताया गया है कि उसे अपने पालतू कुत्ते को मारना होगा। अगर कुछ दोनों कहानियों में समान है तो वो है आम इंसान की बंधनकारी अवस्था जिसमें वो एक ओर सेना के अतिवाद और दूसरी ओर पृथक सिख राष्ट्र के लिए चलाए जा रहे हथियारबन्द आन्दोलन के मध्य फंस गया है।

Chauthi Koot evokes the atmosphere of suspicion, fear and paranoia of the Punjab in 1980s. It considers two loosely connected incidents: two Hindu friends trying to get to Amritsar and, some months earlier, a farmer who is told he has to kill the family dog. What binds the two is the condition of the common man trapped between the excesses of the military on one side and the militant movement for a separate Sikh nation on the other.

परिचय (Profile)



गुरविंदर सिंह (Gurvinder Singh)

गुरविंदर सिंह फिल्म एवं टेलिविज़न संस्थान, पुणे से पढ़े हैं। उनके बनाए वृत्तचित्रों में *पाला*, *लेग्स अबाउ माई फीट*, *एन अनटाइटल्ड फिल्म* और *कावलम* शामिल हैं। उन्हें 59वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में उनकी पहली फिल्म *अन्हे घोड़े दा दान* के लिए सर्वश्रेष्ठ निर्देशक के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

Gurvinder Singh is an alumni of FTII, Pune. His documentaries include *Pala*, *Legs Above My Feet*, *An Untitled Film* and *Kavalam*. Gurvinder Singh received the Best Director Award in 59th National Film Award for his debut film *Anhey Ghorhey da Daan*.

राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम (एनएफडीसी), दि फिल्म कैफे एंट. (The National Film Development Corporation of India (NFDC), The Film Café Entertainment)

राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम (एनएफडीसी) की स्थापना 1975 में उच्च गुणवत्तापरक सिनेमा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हुई। यह फिल्म निर्माण में वित्तीय मदद, निर्माण और वितरण जैसे क्षेत्रों में सक्रिय है और सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन आता है। दि फिल्म कैफे मुम्बई की निर्माण संस्था है, जिसके मालिक कार्तिकेय सिंह हैं। कार्तिकेय भारतीय सिनेमा में नई उभरती तथा वैकल्पिक आवाज़ों में बहुत दिलचस्पी रखते हैं।

The National Film Development Corporation of India (NFDC) was established in 1975, to encourage high quality Indian cinema. It functions in the areas of film financing, production and distribution under Ministry of

Information and Broadcasting, Government of India. **The Film Café** is a Mumbai-based production house, which is owned by Kartikeya Singh, who is deeply interested in the emerging and alternative voices of Indian cinema.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



विसारणै

Visaaranai

सर्वश्रेष्ठ तमिल फिल्म
Best Tamil Film

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 1,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

एक सच्ची घटना पर आधारित, आम निरपराध नागरिकों पर पुलिस द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों की कथा का प्रभावपूर्ण चित्रण।

A gripping drama about the atrocities thrust on by the police on innocent citizens, based on a true story.

विसारणै | Visaaranai

2015 | तमिल | डिजिटल | रंगीन | 109 मिनट

निर्देशक: वेत्री मारन **निर्माता:** वंडरबार फिल्मस **पटकथा:** वेत्री मारन और चंद्रकुमार **छायांकन:** रामा लिंगम **संपादक:** किशोर टी. ई. **अभिनय:** दिनेश रवि, पी. समुद्रकनी, किशोर कुमार और मुरुगादास पेरियसमय

2015 | Tamil | Digital | Colour | 109 minutes

Director: Vetri Maaran **Producer:** Wunderbar Films **Screenplay:** Vetri Maaran & Chandrakumar **Cinematographer:** Rama Lingam **Editor:** Kishore T.E. **Cast:** Dinesh Ravi, P. Samuthrakani, Kishore Kumar & Murugadas Periyasamy

कथासार (Synopsis)

यह फिल्म अप्रवासियों के समूह के निर्णायक अंतिम दिनों के बारे में है। ये लोग एक ऐसे अपराध के लिए पकड़ लिए गए हैं जिसकी इन्हें जानकारी भी नहीं। जब अंतिम उम्मीद भी खोने लगती है, उनके इलाके का एक पुलिसवाला उनके पक्ष में बोलता है और उन्हें छोड़वाता है। लेकिन पुलिसवाला उनसे बदले में कुछ मांगता है और ये लड़के उसे पूरा करते हैं, बिना यह जाने की इसका परिणाम कितना बुरा होने वाला है।

The film follows the fateful last days of a group of immigrants arrested for a crime they have no knowledge of. When all hope seems lost, a policeman from their hometown speaks on their behalf, setting them free. The policeman asks for a return favour and the boys oblige, oblivious to the ill fate that awaits them.

परिचय (Profile)



वेत्री मारन (Vetri Maaran)

वेत्री मारन पटकथा लेखन की पढ़ाई करने के बाद बालू महेन्द्रा के सहयोगी के तौर पर काम करने लगे। बालू महेन्द्रा के फिल्म शूट पर ही उनकी मुलाकात धनुष से हुई और बाद में धनुष ने ही उन्हें उनकी पहली फिल्म *पोल्लाथावन* के निर्माता से मिलवाया। उनकी दूसरी फिल्म ने छः राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीते जिसमें धनुष के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार तथा वेत्री मारन के लिए सर्वश्रेष्ठ पटकथा लेखक और निर्देशक का पुरस्कार शामिल था।

Vetri Maaran did a course on scriptwriting and went on to assist Balu Mahendra. During Balu Mahendra's film shoot, Vetri Maaran met Dhanush who would later introduce him to the producer of his debut film *Pollathavan*. His second feature got six Indian National Film Awards including best actor for

Dhanush and best scriptwriter and director for Vetri Maaran.



वंडरबार फिल्मस (Wunderbar Films)

फिल्म निर्माण कंपनी वंडरबार फिल्मस के मालिक धनुष हैं, समकालीन तमिल सिनेमा के सबसे बड़े सितारे।

Wunderbar Films is a production company owned by Dhanush, one of the biggest contemporary stars in Tamil cinema.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



कंचे

Kanche

सर्वश्रेष्ठ तेलुगु फिल्म
Best Telugu Film

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 1,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

जाति और मान्यताओं के सारे बंधन टूट जाते हैं जब यह अतीत में स्थित प्रेम कहानी अपना जादू बिखेरती है।

Barriers of caste and conventions break down as this romantic period drama unveils its magic.

कंचे | Kanche

2015 | तेलुगु | डिजिटल | रंगीन | 126 मिनट

निर्देशक-पटकथा: राधा कृष्ण जगरलामुदि निर्माता: फर्स्ट फ्रेम एंटरटेनमेंट्स प्रा. लि. छायांकन: ग्नाना शेकर वी. एस. संपादक: सूरज जगताप अभिनय: वरुण तेज, प्रज्ञा जायसवाल, निकितिन धीर, अनूप पुरी, गोल्लापुडी मारुथि राव और सोवकर जानकी

2015 | Telugu | Digital | Colour | 126 minutes

Director-Screenplay: Radha Krishna Jagarlamudi Producer: First Frame Entertainments Pvt. Ltd Cinematographer: Gnana Shekar V.S. Editor: Suraj Jagtap Cast: Varun Tej, Pragna Jaiswal, Nikitin Dheer, Anoop Puri, Gollapudi Maruthi Rao & Sowkar Janaki

कथासार (Synopsis)

यह 1930 का दशक है। धूपति हरिबाबू एक व्यवहारशील युवा है जो तथाकथित नीची जाति के एक मध्यवर्गीय परिवार से आता है। उसके और शाही परिवार की सीता देवी के मध्य प्यार होता है। जाति भेद की वजह से ईश्वर इस विवाह के विरुद्ध है। लेकिन फिर परिस्थितियाँ हरिबाबू और ईश्वर दोनों को ब्रिटिश सेना के झंडे तले जर्मनी के खिलाफ लड़ने को मजबूर करती हैं।

It is the 1930s. Dhooapati Haribabu is a well-behaved youth in a middle-class family and belongs to a lower caste. Love blossoms between him and Seetha Devi who is from a royal family. Just due to caste equations, Eeshwar is against their marriage. Situations prompt Haribabu and Eshwar to fight on behalf of the British Army against Germany.

परिचय (Profile)



राधा कृष्ण जगरलामुदि (Radha Krishna Jagarlamudi)

राधा कृष्ण जगरलामुदि ने अपना निर्देशकीय पदार्पण 2008 में *गम्यम* के साथ किया और 2010 में *वेदम* निर्देशित की। दोनों ही फिल्मों को आलोचकीय तारीफें मिलीं और उन्हें नंदी पुरस्कार एवं फिल्मफेयर पुरस्कार हासिल हुआ।

Radha Krishna Jagarlamudi made his directorial debut in 2008 with *Gamyam* and followed it up with *Vedam* in 2010. Both films garnered widespread critical acclaim, fetching him the Nandi Award and the Filmfare Award for Best Director.



फर्स्ट फ्रेम एंटरटेनमेंट्स प्रा. लि. (First Frame Entertainments Pvt Ltd)

फर्स्ट फ्रेम एंटरटेनमेंट्स प्रा. लि. एक स्वतंत्र फिल्म निर्माण कंपनी है, जिसका उद्देश्य चुनौतीपूर्ण और अद्वितीय फिल्मों का निर्माण करना है।

First Frame Entertainments Pvt. Ltd is an independent production company, whose aim is the production of challenging and unique films of artistic value.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



प्रियमानसम

Priyamanasam

सर्वश्रेष्ठ संस्कृत फिल्म
Best Sanskrit Film

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 1,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

अपनी सर्वोत्कृष्ट कृति *नलचरितम* की रचना के दौरान कवि के मन मस्तिष्क में उठ रहे भावों का कलात्मक और उन्नत सांस्कृतिक चित्रण।

An artistic and culturally vibrant portrayal of the mind of a poet during the time he creates his masterpiece *Nalacharitam*.

प्रियमानसम | Priyamanasam

2015 | संस्कृत | डिजिटल | रंगीन | 110 मिनट

निर्देशक-पटकथा: विनोद मंकारा **निर्माता:** सोमा क्रियेशंस **छायांकन:** संभू सर्मा **संपादक:** हाशिम **अभिनय:** राजेश हेब्बर, प्रतीक्षा काशी, मीरा श्रीनारायण, रचना नारायणकुट्टी, देवन, कोचू प्रेमन, कलामंडलम ईश्वरन उन्नी और बीजू

2015 | Sanskrit | Digital | Colour | 110 minutes

Direction & Screenplay: Vinod Mankara **Production:** Soma Creations **Cinematographer:** Sambu Sarma **Editing:** Hashim **Cast:** Rajesh Hebbar, Pratheksha Kashi, Meera Sreenarayan, Rachana Narayankutty, Devan, Kochu Preman, Kalamandalam Eswaran Unni & Biju

कथासार (Synopsis)

सत्रहवीं सदी के केरल में स्थित प्रियमानसम अद्वितीय कवि उन्नाई वारियर के अन्तिम दिनों को चित्रित करती है। उन्नाई अपने महाकाव्य *नलचरितम* के लेखन में संघर्षरत हैं और फिल्म उनके जीवन के अन्तिम वर्ष को उनकी जवानी के दिनों के समक्ष रख एक अद्भुत वातावरण कायम करती है।

Set in seventeenth-century Kerala, the film traces the last days in the life of poet extraordinaire Unnayi Varier as he struggles to complete his magnum opus *Nalacharitham*. It juxtaposes events of his final year with that of his youth to present a fascinating world.

परिचय (Profile)



विनोद मंकारा (Vinod Mankara)

विनोद मंकारा पत्रकार, लेखक, गीतकार और फिल्मकार हैं। उनके नाम 650 वृत्तचित्र और तीन फीचर फिल्म दर्ज हैं। वे राष्ट्रीय पुरस्कार और सात राज्य पुरस्कार जीत चुके हैं।

Vinod Mankara is a writer, journalist, lyricist, film-maker and orator. He has more than 600 documentaries and three feature films to his credit and is the recipient of one National Award and seven state awards.



सोमा क्रियेशंस (Soma Creations)

सोमा क्रियेशंस के मालिक बेबी मेथ्यू सोमाथीराम हैं। इसने कई फिल्मों और वृत्तचित्र का निर्माण किया है। इसकी फिल्म *ब्लैक फॉरेस्ट* को राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

Soma Creations is the production house of Baby Mathew Somatheeram. It has produced many films and documentaries and its film *Black Forest* won the prestigious National Film Award.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



मिथिला मखान

Mithila Makhaan

सर्वश्रेष्ठ मैथिली फिल्म

Best Maithili Film

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 1,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

बिहार में उत्थान के लिए हो रहे साहसिक युवा प्रयासों को अभिव्यक्त करती पुनरागमन कथा।

A back-to-the-roots story told with great sincerity, about a courageous youthful rescue effort happening in Bihar.

मिथिला मखान | Mithila Makhaan

2015 | मैथिली | डिजिटल | रंगीन | 130 मिनट

निर्देशक: नितिन चन्द्रा निर्माता: चंपारण टाकीज़ और अश्वथ ट्री पटकथा: नितिन चन्द्रा छायांकन: संजय पी. खांजोड़े संपादक: अर्चित डी. रस्तोगी अभिनय: क्रान्ति प्रकाश झा और अरुणीता झा

2015 | Maithili | Digital | Colour | 130 minutes

Director-Screenplay: Nitin Chandra Producer: Champaran Talkies & Aswatha Tree Cinematographer: Sanjay P. Khazode Editor: Archit D Rastogi Cast: Kranti Prakash Jha & Arunita Jha

कथासार (Synopsis)

यह क्रांति प्रकाश की रोमांचकारी यात्रा है, जो अपने दादाजी की पैंतीस साल पहले बन्द हुई कंपनी को दोबारा खड़ा करने के लिए संघर्षरत है। वो मुसीबतों से लड़ता है, माफिया से लोहा लेता है। *मिथिला मखान* इसानी जज़्बे की रौंगटे खड़े कर देनेवाली कहानी है।

This is an emotional and thrilling journey of Kranti Prakash, who fights for establishing his grandfather's company which was closed down thirty-five years ago. He fights against odds and especially the mafia. *Mithila Makhaan* is a riveting story of the triumph of human spirit.

परिचय (Profile)



नितिन चन्द्रा (Nitin Chandra)

नितिन चन्द्रा ने अपनी पहली लघु फिल्म *दि आउटसाइडर* बनाई जब वे विश्वविद्यालय में थे। 2008 में उन्होंने अपनी कंपनी चम्पारन टाकीज़ की शुरुआत की। उनका पहला वृत्तचित्र *ब्रिंग बैक बिहार : मोमेंट्स ऑफ़ अवेकनिंग* भारत और भारत से बाहर कई जगह दिखाया गया। वे एक सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षाशास्त्री भी हैं।

Nitin Chandra made his first short film *The Outsider* while at the university. In 2008 he started his company Champaran Talkies. His first documentary *Bring Back Bihar: Moment of Awakening* was screened at various places in India and abroad. He is also a social activist and educationalist.



चंपारण टाकीज़, अश्वथ ट्री (Champaran Talkies, Ashwatha Tree)

चंपारण टाकीज़ मुम्बई और पटना स्थित एक फिल्म निर्माण कंपनी है, जो कि फिल्म, टेलिविज़न, वृत्तचित्र और लघु फिल्मों के निर्माण से जुड़ी है। अश्वथ ट्री सिंगापुर स्थित विशिष्ट मनोरंजन तथा शैक्षिक सामग्री निर्माण से जुड़ी है। *मिथिला मखान* उनकी पहली फीचर फिल्म है।

Champaran Talkies is a Mumbai and Patna-based film production house, which produces mainstream feature films, television programs, documentaries and short films. Ashwatha Tree is a Singapore-based production house and service provider of quality entertainment and educational content. *Mithila Makhaan* is its first feature film.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



किमा'स लोड – बियाँन्ड दि क्लास

Kima's Lode – Beyond the Class

सर्वश्रेष्ठ मीज़ो फिल्म
Best Mizo Film

रजत कमल
RAJAT KAMAL
₹ 1,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

मिज़ोरम के मनोरम परिवेश में रची बसी, बचपन की दहलीज़ लांघते एक लड़के की रोमांचक कथा।

An adventurous coming-of-age story of a boy, set in the pristine environments of Mizoram.

किमा'स लोड – बियाँन्ड दि क्लास | Kima's Lode – Beyond the Class

2015 | मिजो | डिजिटल | रंगीन | 78 मिनट

निर्देशक-पटकथा: जुला छांगते निर्माता: चिल्ड्रन्स फिल्म सोसाइटी ऑफ इंडिया छायांकन: मालस्वमा फनाई और थारा खहरिंग संपादक: अंकेश वासुदेवन अभिनय: जोशुआ छांगते, रामदिनपुइया हमार, छान्हिमा खेग्लावत और मुन्किमा (एमके) पाचुऊ

2015 | Mizo | Digital | Colour | 78 minutes

Director-Screenplay: Zuala Chhangte Producer: Children's Film Society of India Cinematographer: Malsawma Fanai & Thara Khawlhring Editor: Ankesh Vasudevan Cast: Joshua Chhangte, Ramdinpuia Hmar, Chhanhima Khenglawt & Muankima (MK) Pachuau

कथासार (Synopsis)

उत्तरपूर्वी भारत का छोटा सा कस्बा छिमतुई हिल गया है। बारह साल का किमा दो दिन से लापता है। कस्बे और उसकी विधवा माँ दोनों के मन में बुरे ख्याल आते हैं। लेकिन बच्चा वापस आ जाता है, हँसता, खेलता। लेकिन वो कहीं चला गया था यह कोई नहीं जानता। उसके सबसे अच्छे दोस्त भी नहीं। दोस्तों में एक गुप्त समझौता होता है और वे जंगल में छुपाई अपने दोस्त की खोज को स्वयं देखने जाते हैं।

The border town of Chhingtui in north-east India is shaken up. Twelve-year-old Kima is missing for two days. The town and his widowed mother fear the worst. The boy suddenly reappears, alive and well. But no one knows where he has been, not even his best buddies. A secret pact is made to go back to the forest and see their friend's discovery for themselves.

परिचय (Profile)



जुला छांगते (Zuala Chhangte)

हॉलीवुड, यूरोपियन नॉर और वृत्तचित्रों की खुराक पर बड़े हुए जुला छांगते की कहानियाँ सुनाने की एक अलग ही शैली है। उन्होंने सिद्धार्थ काक के साथ काम किया है और स्वतंत्र रूप से भी कई वृत्तचित्रों का निर्माण और निर्देशन कर चुके हैं। यह उनकी पहली निर्देशकीय फिल्म है।

Growing up on an eclectic diet of Hollywood, European noir films and documentaries, Zuala Chhangte has a unique and independent style of narrating his stories. He has worked under Siddharth Kak and independently directed and produced a number of documentaries and TV serials. This is his debut film as a director.



चिल्ड्रन्स फिल्म सोसाइटी ऑफ इंडिया (Children's Film Society of India)

चिल्ड्रन्स फिल्म सोसाइटी ऑफ इंडिया, भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय के अन्तर्गत कार्य करनेवाली एक स्वतंत्र संस्था है। इसकी स्थापना 1955 में बच्चों के लिए मनोरंजक और ज्ञानवर्धक सिनेमा बनाने के उद्देश्य से हुई थी। सीएफएसआई आज भी भारत में बाल फिल्मों की प्रमुख निर्माता है और उसने बच्चों के लिए कई आनंदकारी फिल्मों की रचना की है।

Children's Film Society of India is an autonomous body under the Ministry of Information & Broadcasting, Government of India. It was constituted in 1955 to make cinema for children that is both entertaining as well as educative. CFSI remains the prime producer of children's films in India and has created some of the most delightful children's content in the country.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



यिबुसू योहंबियु

Eibusu Yaohanbiyu

सर्वश्रेष्ठ मणिपुरी फिल्म

Best Manipuri Film

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 1,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

एक दिव्यांग लड़के की फुटबॉल टीम का सदस्य बनने की सफल कोशिश पर बनी फिल्म।

A moving film about the victory of a differently-abled boy's attempt to join a football team.

यिबुसू योहंबियु | Eibusu Yaohanbiyu

2015 | मणिपुरी | डिजिटल | रंगीन | 106 मिनट

निर्देशक: मैपक्षाना हारोंगबाम **निर्माता:** लिविंग आर्ट (वाई. हिटलर सिंह [नेता]) **पटकथा:** डॉ. एल. सनाहल **छायांकन:** ए. बिकेश्वर शर्मा **संपादन एवं ध्वनि:** होदम टॉमी **संगीत:** मिस्सील खुमांचा, क्षत्री सुरजीत मीतेई **अभिनय:** निंगथोजाम जोयबिद्या, थानजोम खेलेम्बा मीतेई, एच. प्रदीप सिंह, वाई. लोपेश सिंह, थानजोम रबीना चानू, थानजोम सानातोम्बी चानू

2015 | Manipuri | Digital | Colour | 106 minutes

Director: Maipaksana Haorongbam **Producer:** Living Art (Y. Hitalar Singh [Neta]) **Screenplay:** Dr. L. Sanahal **Cinematographer:** A. Bikeshwor Sharma **Editor and Sound:** Hodam Tommy **Music:** Missile Khumancha & Kshtri Surjit Meetei **Cast:** Ningthoujam Joybidya, Thanaojom Khelemba Meetei, H. Pradip Singh, Y. Lopesh Singh, Thanaojom Rabina Chanu & Thanaojom Sanatombi Chanu

कथासार (Synopsis)

खेलेम्बा को फुटबॉल खेलना बहुत पसन्द है। लेकिन उसे इंटर-स्कूल फुटबॉल प्रतियोगिता में हिस्सा लेने से इसलिए रोक दिया जाता है क्योंकि वो दिव्यांग हैं। लेकिन उसका इरादा पक्का है। अन्ततः उसका पक्का इरादा और धैर्य बाधाओं पर विजय पाते हैं और वो सफलतापूर्वक अपनी टीम को जीत हासिल करने में मदद करता है।

Khelemba loves to play football. He is debarred from participating in the inter-school football tournament as he is physically challenged. But he is determined to play. Finally, his strong determination and patience triumph over hindrances, paving the way for him to play and successfully help his team win the tournament

परिचय (Profile)



मैपक्षाना हारोंगबाम (Maipaksana Haorongbam)

मैपक्षाना हारोंगबाम बीते दस सालों से रंगमंच और शुमांग लीला के लिए पटकथाएँ लिख रहे हैं और फिल्में बना रहे हैं। वे भिन्न निर्माता कंपनियों के लिए दो मणिपुरी फीचर फिल्मों और एक लघु फिल्म का निर्देशन कर चुके हैं।

Maipaksana Haorongbam has been making films, writing scripts for theatre and Shumang Leela for the last ten years. He has directed two Manipuri feature films, ten documentaries, one short film for different producers and commissioning agencies.



लिविंग आर्ट्स (Living Arts)

2012 में स्थापित लिविंग आर्ट्स एक सांस्कृतिक संस्था है और यह उत्तरपूर्वी भारत, खासकर मणिपुर में कला के संरक्षण और संवर्धन के लिए कार्यरत है। यह कला के क्षेत्र में उपलब्धि हासिल करने वालों को सम्मानित करती है और नए कलाकारों को प्रोत्साहित करती है। यिबुसू योहंबियु सिनेमा के क्षेत्र में इनका पहला प्रयास है।

Established in 2012, Living Art is a cultural organisation that strives to promote and preserve the aesthetics and art and culture of Manipur and north-eastern India in particular. It is involved in felicitating achievers in cultural fields and supporting budding artistes. Eibusu Yaohanbiyu is its first cinematic venture.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



दि हेड हंटर

The Head Hunter

सर्वश्रेष्ठ वांचो फिल्म

Best Wancho Film

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 1,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

वांचो जनजाति के जनजातीय जीवन के आधुनिकता के दायरे में आने, साथ ही उनकी जीवनचर्या और निजता को बचाए रखने के बीच सामंजस्य का एक सिनेमाई अवलोकन।

A cinematic contemplation on the lives of the Wancho tribe, regarding the balance required in modernizing tribal environment, while intruding and displacing their lifestyles.

दि हेड हंटर | The Head Hunter

2015 | वांचो | डिजिटल | रंगीन | 109 मिनट

निर्देशक-पटकथा: नीलांजन दत्त निर्माता: स्पलैश फिल्मस प्राइवेट लिमिटेड छायांकन: मौलश्री सिंह संपादक: नवनीता सेन दत्ता ध्वनि: अनमोल भावे अभिनय: नोकशा साहम और मृगेन्द्र नारायण कोंवर

2015 | Wancho | Digital | Colour | 109 minutes

Director-Screenplay: Nilanjan Datta Producer: Splash Films Private Limited Cinematographer: Maulshri Singh Editor: Navnita Sen Datta Sound: Anmol Bhawe Cast: Nokshaa Saham & Mrigendra Narayan Konwar

कथासार (Synopsis)

यह भारत की एक भूली हुई जनजाति के वृद्ध व्यक्ति के बारे में है जो स्वयं जितने ही पुराने इस जंगल का बाशिन्दा है। योद्धा जैसा दिखने वाला, झुरियों से भरे कठोर चेहरे वाला, यह इंसान उत्तरपूर्व की वांचो जनजाति से है, वही वांचो जनजाति जिसे इंसानी शिकार की परम्परा के चलते बदनामी मिली। शहर से आया जवान अधिकारी, जो स्वयं भी उसी जनजाति का है, उसे चालाकी से कुछ दिन शहर में गुज़ारने ले आता है।

The film is about an old tribal man from a forgotten tribe of India, who dwells in a forest as ancient as him. Fierce and warrior like, rugged and wrinkled, he belongs to the Wancho tribe, dreaded for its practice of headhunting. A city-bred young official, who belongs to the same tribe, befriends him and tricks him to spend a few days in the city.

परिचय (Profile)



नीलांजन दत्त (Nilanjan Datta)

एफटीआईआई से स्नातक नीलांजन दत्त इस समय एफटीआईआई, पुणे में फिल्म संपादन के असोसिएट प्रोफेसर हैं।

A graduate of FTII, **Nilanjan Datta** is presently working as associate professor of film editing at FTII, Pune.



स्पलैश फिल्मस प्रा लि (Splash Films Private Limited)

राजीव नाग के साथ मिलकर नीलांजन दत्त ने स्पलैश फिल्मस प्रा लि की स्थापना की। उनका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण रचनाकर्म है। यह उनकी पहली फिल्म है।

Along with Rajiv Nag, Nilanjan Datta started **Splash Films Private Limited** to produce quality content for the world. This is its first film.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



सतरंगी

Satrangī

सर्वश्रेष्ठ हरियाणवी फिल्म
Best Haryanvi Film

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 1,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

यह फिल्म हरियाणा में कन्याओं की उपेक्षा और अन्ततः उनके सशक्तिकरण के मुद्दे को संबोधित करने की एक अनुरागपूर्ण कोशिश है।

The film earnestly tries to address the social issue of neglect of the girl child in the state of Haryana and the eventual empowering of the girl.

सतरंगी | Satrangi

2015 | हरियाणवी | डिजिटल | रंगीन | 115 मिनट

निर्देशक: संदीप शर्मा निर्माता: हंसविद्या मूवीज़ पटकथा: संदीप शर्मा और महिपाल सैनी छायांकन: राहुल गरासिया संपादक: उपेन्द्र विक्रम संगीत: रोहित शर्मा अभिनय: यशपाल शर्मा, नर्गिस नंदल, सचिन शौकीन और अमित जैरथ

2015 | Haryanvi | Digital | Colour | 115 minutes

Director: Sundeep Sharma Producer: Hansvidya Movies Screenplay: Sundeep Sharma & Mahipal Saini Cinematographer: Rahul Garasia Editor: Upendra Vikram Music: Rohit Sharma Cast: Yashpal Sharma, Nargis Nandal, Sachin Shokeen & Amit Jairath

कथासार (Synopsis)

यह कहानी पिता और पुत्री के मध्य के खूबसूरत रिश्ते पर आधारित है। रिया एक संभावनाशील करियर और पसन्द के लड़के के साथ शादी के साथ ही अपने उज्ज्वल भविष्य की ओर कदम बढ़ा रही है। उसके पिता कम उमर में ही विदुर हो गए थे लेकिन उन्होंने कभी दूसरी शादी नहीं की। लेकिन रिया अपने पिता को इस बात के लिए मनाती है कि अब वो दूसरी शादी कर लें जिससे इस ढलती उमर में उन्हें कोई साथी मिल जाए।

The story depicts a beautiful bond shared by a father and daughter. Riya is ready to step into a future with a promising career and marriage to a boy of her choice. Her father was widowed young but never remarried. Instead of being a conventional daughter, Riya somehow convinces her father to remarry so that he may find a companion to share his life with in his sunset years.

परिचय (Profile)



संदीप शर्मा (Sundeep Sharma)

संदीप शर्मा टेलिविजन पर *लव स्टोरी*, *लेफ्ट राइट लेफ्ट*, *तुझको है सलाम जिन्दगी*, *वीरावाली* जैसे कई धारावाहिक निर्देशित कर चुके हैं।

Sundeep Sharma has a number of TV serials to his credit as director, including *Love Story*, *Left Right Left*, *Tujhko Hai Salaam Zindagi*, *Veeranwali*.



हंसविद्या मूवीज़ (Hansvidya Movies)

हंसविद्या मूवीज़ एक फिल्म निर्माण कंपनी है जिसके मालिक संदीप शर्मा और पूनम देसवाल शर्मा हैं।

Hansvidya Movies is a film production house owned by Sundeep Sharma and Punam Deswal Sharma.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



ओनाटा

Onaatah

सर्वश्रेष्ठ खासी फिल्म

Best Khasi Film

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 1,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

शांतिपूर्ण जनजातीय परिवेश में बलात्कार पीड़िता के पुनरुद्धार की कथा का संवेदनशील चित्रांकन।

A sensitive portrayal of a rape victim in the course of her revival, in the healing background of the tribal setting.

ओनाटा | Onaatah

2015 | खासी | डिजिटल | रंगीन | 112 मिनट

निर्देशक: प्रदीप कुर्बा **निर्माता:** कुर्बा फिल्मस **पटकथा:** पौलमी दत्ता गुप्ता, प्रदीप कुर्बा और लिओनेल फर्नांडीस **छायांकन:** प्रदीप डेमेरी **संपादक:** लिओनेल फर्नांडीस **संगीत:** अनुराग साकिया और प्रदीप कुर्बा **अभिनय:** स्वीटी पाला, मर्लवीन मुखीम और रिचर्ड खारपुरी

2015 | Khasi | Digital | Colour | 112 minutes

Director: Pradip Kurbah **Producer:** Kurbah Films **Screenplay:** Paulami Duttgupta, Pradip Kurbah & Lionel Fernandes **Cinematographer:** Pradip Daimary **Editor:** Lionel Fernandes **Music:** Anurag Saikia & Pradip Kurbah **Cast:** Sweety Pala, Merlvin Mukhim & Richard Kharपुरी

कथासार (Synopsis)

जब जीवन अपने अन्तिम सिरे पर पहुँच जाये तब आप क्या करेंगे? ओनाटा, भीतर से और समाज की रूढ़ियों से घायल है, लेकिन हार जाना उसका विकल्प नहीं। वो एक क्षण विश्राम लेने अपने अंकल के घर एक सुदूर गाँव में जाती है। जब वे गाँव के अन्य किरदारों से मिलती है जिन्दगी को देखने का उसका नज़रिया ही बदल जाता है।

What do you do when life reaches a dead end? Onaatah, wounded from inside and by the stereotypes of society, realizes that giving up is not an option. She ponders taking a break and going to her uncle's remote village. Her perspective about life changes when she gets introduced to the other characters of the village.

परिचय (Profile)

**प्रदीप कुर्बा** (Pradeep Kurbah)

प्रदीप कुर्बा मेघालय के शुरुआती फिल्मकारों में से एक हैं, जिन्हें 2014 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला। संगीतकार के तौर पर वे सात खासी संगीत एलबम बना चुके हैं। वे कई खासी फिल्मों निर्देशित कर चुके हैं।

Pradeep Kurbah is a pioneering film-maker in Meghalaya, who won the National Film Award in 2014. He has created seven Khasi music albums as music composer. He has also directed a number of Khasi feature films.

**कुर्बा फिल्मस** (Kurbah Films)

कुर्बा फिल्मस 1997 में पोमू दास द्वारा स्थापित स्वतंत्र निर्माण संस्था है। यह कंपनी स्वयं को मेघालय और सम्पूर्ण उत्तरपूर्व में उच्च गुणवत्तापरक मनोरंजन सामग्री के उत्पादनकर्ता की भूमिका में देखती है।

Kurbah Films is an independent production house founded in 1997 by Pomu Das. The company aims to position itself as a premium content provider for entertainment in Meghalaya as well as north-east India.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



दाउ हुडुनी मेथाई

Dau Huduni Methai

सर्वश्रेष्ठ बोडो फिल्म

Best Bodo Film

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 1,00,000/-

प्रशस्ति (Citation)

उत्तरपूर्व में उग्रवाद के दौरान आम जनता को
निरपराध सताए जाने का प्रभावी दस्तावेजीकरण।

An honest attempt to document the
dilemma of the common man,
helplessly victimized during the times of
insurgency in the north-east.

दाउ हुडुनी मेथाई | Dau Huduni Methai

2015 | बोडो | डिजिटल | रंगीन | 78 मिनट

निर्देशक: मंजु बोरा निर्माता: शिवेन आर्ट्स पटकथा: मंजु बोरा छायांकन: सुधीर पाल्सने संपादक: ए. श्रीकर प्रसाद संगीत: अनिरुद्ध बोरा अभिनय: रेशमा मुशाहरे, जास्मीन हाजोवारे, अहल्या दैमारे और नीता बासुमातारी

2015 | Bodo | Digital | Colour | 78 minutes

Director: Manju Borah Producer: Shiven Arts Screenplay: Manju Borah Cinematographer: Sudheer Palsane Editor: A. Sreekar Prasad Music: Aniriddha Borah Cast: Reshma Mushahary, Jasmine Hazowary, Ahalya Daimary & Nita Basumatary

कथासार (Synopsis)

यह फिल्म रैमली, एक बलात्कार की शिकार लड़की, के नज़रिए से विद्रोह और उसके खिलाफ चल रहे ऑपरेशन के आम इंसानों पर पड़ रहे असर को दिखाती है। वो एक निर्जन घर में अकेली है और सोच रही है कि कैसे अलगाववादी हिंसा ने उसकी जिन्दगी को नष्ट किया, और यह सोचते हुए वो स्थानीय लोककथाओं और असमिया धरती के अहिंसक स्वभाव से उसकी तुलना करती है।

The film recounts the effects of insurgency and counterinsurgency on common folk through the perspective of Raimali, a young rape victim. As she lies in an abandoned house, she recalls how separatist violence mars her life, contrasting its intrusive nature with indigenous folklore and the immutability of the Assamese landscape.

परिचय (Profile)



मंजु बोरा (Manju Borah)

मंजु बोरा ने दर्शनशास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि गुवाहाटी विश्वविद्यालय से हासिल की है। उनकी फिल्मों में *बैभव* (1999), *आकाशितोरार कोठारे* (2003), *लाज* (2004), *जोयमोती* (2006), *आई कोट नाई* (2008), और *को याड* (2012) शामिल हैं। *दाउ हुडुनी मेथाई* का विश्व प्रीमियर मोंट्रियल फिल्म फेस्टिवल 2015 में हुआ।

Manju Borah completed her master's in philosophy from Gauhati University. Her films include *Baibhab* (1999), *Aakashitorar Kothare* (2003), *Laaz* (2004), *Joymoti* (2006), *Aai Kot Nai* (2008), and *Ko:yad* (2012). *Dau Huduni Methai* had its world premiere at Montreal World Film Festival, 2015.

शिवेन आर्ट्स (Shiven Arts)

शिवेन आर्ट्स फिल्म निर्माण, वितरण और प्रदर्शन कंपनी हैं। इस कंपनी ने फिल्म *अजेयो* के लिए असमिया भाषा की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी जीता है। इस कंपनी के मालिक शंकर लाल गोयंका हैं।

Shiven Arts is a film production, distributing and exhibiting company. The company won the National Award for best feature film in Assamese language for *Ajeyo*. The company is owned by Shankar Lall Goenka.

SHIVEN ARTS

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



बाजीराव मस्तानी

Bajirao Mastani

सर्वश्रेष्ठ निर्देशक

Best Direction

स्वर्ण कमल

SWARNA KAMAL

₹ 2,50,000/-

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 158 मिनट

निर्देशक: संजय लीला भंसाली निर्माता: इरोज़ इंटरनेशनल और भंसाली प्रोडक्शंस पटकथा: प्रकाश कपाडिया छायांकन: सुदीप चटर्जी संपादक: राजेश पाण्डेय ध्वनि: बिस्वदीप चटर्जी, जस्टिन जोस संगीत: संजय लीला भंसाली अभिनय: रणवीर सिंह, दीपिका पादुकोण, प्रियंका चोपड़ा और तन्वी आजमी

2015 | Hindi | Digital | Colour | 158 minutes

Director: Sanjay Leela Bhansali Producer: Eros International and Bhansali Productions Screenplay: Prakash Kapadia Cinematographer: Sudeep Chatterjee Editor: Rajesh Pandey Sound: Bishwadeep Chatterjee & Justin Jose Music: Sanjay Leela Bhansali Cast: Ranveer Singh, Deepika Padukone, Priyanka Chopra & Tanvi Azmi

प्रशस्ति (Citation)

सिनेमा से जुड़े तमाम पहलुओं के कुशल संचालन के लिए, जिसके द्वारा एक त्रासद प्रेम-कहानी को विराट ऐतिहासिक कथानक में पिरोया गया।

For the masterful handling of all aspects of the medium of cinema to weave a tragic love story within a grand historic drama.

संजय लीला भंसाली (Sanjay Leela Bhansali)

संजय लीला भंसाली फिल्म एवं टेलिविज़न संस्थान, पुणे से पढ़े हैं। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत विधु विनोद चोपड़ा की 1942 ए लव स्टोरी के गीतों के निर्देशन के साथ की। उनकी पहली निर्देशकीय फिल्म खामोशी दि म्यूजिकल थी जो 1996 में आई। इसके बाद बॉक्स ऑफिस ब्लॉकबस्टर हम दिल दे चुके सनम (1999), देवदास (2002), ब्लैक (2005), सांवरिया (2007), गुज़ारिश (2010), राम लीला (2013) तथा बाजीराव मस्तानी (2015) की बारी थी।

Sanjay Leela Bhansali studied at FTII, Pune. He started his career as the director of songs for Vidhu Vinod Chopra's 1942: A Love Story. He made his directorial debut with Khamoshi: The Musical in 1996, followed by the box office blockbuster Hum Dil De Chuke Sanam (1999), Devdas (2002), Black (2005), Saawariya (2007), Guzaarish (2010), Ram Leela (2013) and his latest Bajirao Mastani (2015).

63^{वें}राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015पीकू
Pikuसर्वश्रेष्ठ अभिनेता
Best Actorरजत कमल
RAJAT KAMAL
₹ 50,000/-

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 125 मिनट
निर्देशक: शुजित सरकार निर्माता: एमएसएम मोशन पिक्चर्स, सरस्वती एंटरटेनमेंट और राइजिंग सन फिल्मस पटकथा: जूही चतुर्वेदी छायांकन: कमलजीत नेगी संपादक: चंद्रशेखर प्रजापति संगीत: अनुपम रॉय अभिनय: अमिताभ बच्चन, दीपिका पादुकोण और इरफान खान

2015 | Hindi | Digital | Colour | 125 minutes
Director: Shoojit Sircar Producer: MSM Motion Pictures, Saraswati Entertainment and Rising Sun Films Screenplay: Juhi Chaturvedi Cinematographer: Kamaljeet Negi Editor: Chandrashekhar Prajapati Music: Anupam Roy Cast: Amitabh Bachchan, Deepika Padukone & Irrfan Khan

प्रशस्ति (Citation)

तमाम बंधनों से मुक्त सत्तर साला वृद्ध की भूमिका में आनंदकारी और हरदिलअज़ीज़ अभिनय के लिए।

A delightful, delectable performance of a man who finally lets himself go, at the age of seventy.

अमिताभ बच्चन (Amitabh Bachchan)

अमिताभ बच्चन संभवतः भारत के सबसे शानदार और सबसे सफल अभिनेता हैं। 1969 में सात हिन्दुस्तानी के साथ उन्होंने सिनेमा में पदार्पण किया। जंजीर और नमक हराम के साथ 1973 में उन्होंने सफलता के शिखर की ओर कदम बढ़ाया। हिन्दी सिनेमा में यह एंग्री यंग मैन का समय था। अगले दस साल उन्होंने बॉक्स ऑफिस पर एकछत्र राज किया और 'वन मैन इंडस्ट्री' कहलाए। टेलिविज़न पर भी कौन बनेगा करोड़पति के साथ उन्होंने गज़ब की सफलता का दौर देखा।

Amitabh Bachchan is arguably one of India's finest and most successful actors. He debuted in 1969 with *Saat Hindustani*. He hit big time with the films *Zanjeer* and *Namak Haram* in 1973, which heralded the angry young man in Hindi cinema. For the next ten years he was the undisputed king of the box office, and was called the 'one-man industry'. He has also had an immensely successful stint in television with the quiz show *KBC*.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



तनु वेड्स मनु रिटर्न्स Tanu Weds Manu Returns

सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री
Best Actress

रजत कमल
RAJAT KAMAL
₹ 50,000/-

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 120 मिनट
निर्देशक: आनंद एल. राय निर्माता: कृशिका लुल्ला और आनंद एल. राय पटकथा: हिमांशु शर्मा छायांकन: चिरंतन दास संपादक: हेमल कोठारी संगीत: क्रस्ना सोलो, तनिष्क-वायु (बन्नो) अभिनय: माधवन, कंगना रनोट और जिम्मी शेरगिल

2015 | Hindi | Digital | Colour | 120 minutes
Director: Aanand L. Rai Producer: Krishika Lulla and Aanand L. Rai Screenplay: Himanshu Sharma Cinematographer: Chirantan Das Editor: Hemal Kothari Music: Krsna Solo, Tanishk-Vayu (Banno) Cast: Madhavan, Kangana Ranaut & Jimmy Shergil

प्रशस्ति (Citation)

दो नितान्त भिन्न दिखते किरदारों के आकर्षण और प्रमोद से भरे स्वतस्फूर्त निरूपण के लिए।

For her dynamic portrayal of two contrast characters, laced with mirth and charm.

कंगना रनोट (Kangana Ranaut)

बॉलीवुड की सबसे ज्यादा फ़ीस लेनेवाली नायिका कंगना रनोट आज के दौर के सबसे विश्वस्नीय सितारों में से एक हैं। तीन राष्ट्रीय पुरस्कार और इंडस्ट्री के दर्जन से ज्यादा अन्य पुरस्कार हासिल करने के बाद कंगना एक माना हुआ नाम हैं। *क्वीन* और *तनु वेड्स मनु* की बॉक्स ऑफिस सफलता के साथ उन्होंने साबित किया है कि महिला किरदार प्रधान फिल्मों भी फिल्मकारों के लिए एक सुरक्षित दांव हैं।

Bollywood's highest-paid actress **Kangana Ranaut** has emerged as one of the most bankable stars today. With three National Awards to her credit and having bagged over a dozen other industry awards, Kangana is a name to reckon with. With her films *Queen* and *Tanu Weds Manu*, Kangana has not only proven her mettle at the box-office, but has even been a front-runner in proving that women-centric films are a safe bet for film-makers.

63^{वें}राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015

विसारणै

Visaaranai

सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता
Best Supporting Actor

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | तमिल | डिजिटल | रंगीन | 109 मिनट

निर्देशक: वेत्री मारन निर्माता: वंडरबार फिल्मस पटकथा: वेत्री मारन, चंद्रकुमार छायांकन: रामा लिंगम संपादक: किशोर टी.ई. अभिनय: दिनेश रवि, पी. समुद्रकनी, किशोर कुमार और मुरुगादास पेरियसमय

2015 | Tamil | Digital | Colour | 109 minutes

Director: Vetri Maaran Producer: Wunderbar Films

Screenplay: Vetri Maaran, Chandrakumar

Cinematographer: Rama Lingam Editor: Kishore T.E. Cast:

Dinesh Ravi, P. Samuthirakani, Kishore Kumar & Murugadas Periyasamy

प्रशस्ति (Citation)

नैतिक दुविधा में उलझे पुलिसवाले की भूमिका में अतिसूक्ष्म लेकिन दृढ़ और मार्मिक अभिनय के लिए।

For the minimalistic yet stark and moving performance as a cop, caught in a moral dilemma.

पी. समुद्रकनी (P. Samuthirakani)

समुद्रकनी ने महान फिल्मकार के. बालाचंद्रन के साथ सहायक के तौर पर काम किया और उनकी निर्देशक के तौर पर पहली ही फिल्म उन्नाई चहरानाडेंधेन को तमिलनाडु राज्य फिल्म पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ कहानी का पुरस्कार हासिल हुआ। निर्देशक के रूप में उनकी अन्य फिल्में हैं नेरंजा मानसु, नाडोदिगल, पोराली। अभिनेता के रूप में उन्होंने तमिल और मलयालम में 40 से अधिक फिल्मों की हैं जिनमें सुब्रमणियपुरम, सत्ताई, विलाइयिला पत्ताथारी प्रमुख हैं।

P. Samuthirakani worked as an assistant director with legendary film-maker K. Balanchander and directed his debut film *Unnai Charanadaindhen*, which won the Tamil Nadu State Film Award for Best Storywriter. His other films as director include *Neranja Manasu*, *Naadodigal*, *Poraali*. As an actor his credits include *Subramaniyapuram*, *Sattai*, *Veelaiyilla Pattathari*, apart from more than forty films in Tamil and Malayalam.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



बाजीराव मस्तानी

Bajirao Mastani

सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री

Best Supporting Actress

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 158 मिनट

निर्देशक: संजय लीला भंसाली निर्माता: इरोज़ इंटरनेशनल और भंसाली प्रोडक्शंस पटकथा: प्रकाश कपाडिया छायांकन: सुदीप चटर्जी संपादक: राजेश पाण्डेय ध्वनि: बिस्वदीप चटर्जी, जस्टिन जोस संगीत: संजय लीला भंसाली अभिनय: रणवीर सिंह, दीपिका पादुकोण, प्रियंका चोपड़ा और तन्वी आजमी

2015 | Hindi | Digital | Colour | 158 minutes

Director: Sanjay Leela Bhansali Producer: Eros International and Bhansali Productions Screenplay: Prakash Kapadia Cinematographer: Sudeep Chatterjee Editor: Rajesh Pandey Sound: Bishwadeep Chatterjee & Justin Jose Music: Sanjay Leela Bhansali Cast: Ranveer Singh, Deepika Padukone, Priyanka Chopra & Tanvi Azmi

प्रशस्ति (Citation)

एक ओर बेटे के लिए प्रेम और दूसरी ओर कुल के प्रति वफादारी के मध्य भंवर में फंसी राजसी विधवा की भूमिका में असाधारण अभिनय के लिए।
For her powerful portrayal of a royal widow caught in the vortex of love for her son and commitment to the clan.

तन्वी आजमी (Tanvi Azmi)

तन्वी आजमी ने 1985 में *प्यारी बहना* के साथ सिनेमा में पदार्पण किया। उसके बाद ही उन्होंने चर्चित चलचित्रकार बाबा आजमी से शादी की। उनके टेलिविजन पर उल्लेखनीय कार्यों में विजय मेहता का *जीवन रेखा* और गुलजार का *मिर्जा ग़ालिब* शामिल हैं। अडूर गोपालाकृष्णन की *विधेयन* (मलयालम) और मराठी फिल्म *लय भारी* के लिए उन्होंने तारीफें बटोरीं। वे *डर*, *अकेले हम अकेले तुम*, *ये जवानी है दीवानी*, *दिल्ली 6*, *बॉबी जासूस* जैसी हिन्दी फीचर फिल्मों का भी हिस्सा रही हैं।

Tanvi Azmi debuted in *Pyari Behna* (1985). Soon after, she married noted cinematographer Baba Azmi. Her television credits include Vijaya Mehta's *Jeevan Rekha* and Gulzar's *Mirza Ghalib*. She has won accolades for her performance in Adoor Gopalakrishnan's *Vidheyan* (Malayalam) and in *Lai Bhaari* (Marathi). She has been a part of Hindi feature films like *Darr*, *Akele Hum Akele Tum*, *Yeh Jawaani Hai Deewani*, *Dilli 6*, *Bobby Jasoos*, to name a few.

63^{वें}राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015

बेन

Ben

सर्वश्रेष्ठ बाल अभिनेता

Best Child Artist

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | मलयालम | डिजिटल | रंगीन | 116 मिनट

निर्देशक: डॉ. साजन के. जॉर्ज निर्माता: विबग्योर सिनेमा पटकथा: विपिन एटले छायांकन: हरि नायर संपादक: ई.एस. सूरज संगीत: विपिन एटले अभिनय: सूरज वेंजरामूद, अंजलि उपासना, जीबू जैकब, ओमाना औसफ और गौरव मेनन

2015 | Malayalam | Digital | Colour | 116 minutes

Director: Dr. Sajjan K. George Producer: Vibgyor Cinema
Screenplay: Vipin Atley Cinematographer: Hari Nair
Editor: E.S. Suraj Music: Vipin Atley Cast: Suraj Venjaramood, Anjali Upasana, Jibu Jacob, Omana Ouseph & Gaurav Menon

प्रशस्ति (Citation)

गजब की उथल-पुथल से गुजरते बच्चे की भूमिका में भावों के सतरंगी इंद्रधनुष रचता विशिष्ट अभिनय।

An outstanding performance on a wide spectrum of emotions, of a boy going through great turmoil.

गौरव मेनन (Gaurav Menon)

ग्यारह साल के गौरव मेनन सेंट अलोसियस आईसीएस स्कूल, पाल्लुरुथी, कोच्चि के छठी कक्षा में पढ़नेवाले विद्यार्थी हैं। सत्रह फिल्मों में अभिनय कर चुके अनुभवी गौरव के शौक फोटोग्राफी, संगीत और तैराकी हैं।

Eleven-year-old Gaurav Menon is a sixth standard student of St Aloysius ICS School, Palluruthy, Kochi. A veteran of seventeen films, his hobbies include photography, music and swimming.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



कट्यार कालजात घुसली

Katyar Kaljat Ghusli

सर्वश्रेष्ठ गायक

Best Male Playback Singer

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | मराठी | डिजिटल | रंगीन | 161 मिनट

निर्देशक: सुबोध भावे निर्माता: सुनील पढारे पटकथा: प्रकाशभाई कपाडिया छायांकन: सुधीर पल्लाने संपादक: आशीष म्हात्रे, अपूर्व मोतीवाले सहाय संगीत: पंडित जीतेन्द्र अभिषेकी, शंकर, एहसान, लॉय ध्वनि: अनमोल भावे अभिनय: सचिन पिलगांवकर, शंकर महादेवन, सुबोध भावे और अमृता खानविल्कर

2015 | Marathi | Digital | Colour | 161 minutes

Director: Subodh Bhawe Producer: Sunil Phadtare

Screenplay: Prakashbhai Kapadia Cinematographer:

Sudhir Palsane Editors: Ashish Mhatre, Apurva Motiwale

Sahai Music: Pt. Jitendra Abhisheki, Shankar, Ehsaan, Loy

Sound: Anmol Bhawe Cast: Sachin Pilgaonkar, Shankar Mahadevan, Subodh Bhawe & Amruta Khanvilkar

प्रशस्ति (Citation)

हिन्दुस्तानी संगीत परम्परा का सर्वश्रेष्ठ परिपूर्ण प्रदर्शन।

A consummate performance in the best of Hindustani musical traditions.

महेश काले (Mahesh Kale)

महेश काले सेन फ्रांसिस्को में शास्त्रीय गायक हैं और हिन्दुस्तानी, सेमी-क्लासिकल, भक्ति संगीत और नाट्य संगीत के विशेषज्ञ माने जाते हैं। वे 2010 से ही संगीतमय नाटक *कट्यार कालजात घुसली* में केन्द्रीय भूमिका निभाते आए हैं। महेश भारत, अमेरिका, यूएई, ब्रिटेन और दक्षिणपूर्व एशिया के देशों में हजार से ज्यादा कार्यक्रम कर चुके हैं।

Mahesh Kale is a San Francisco Bay Area-based Indian Classical vocalist renowned for his specialization in Hindustani, semi-classical, devotional music including Natya Sangeet. Since early 2010, Mahesh has been playing the central character in *Katyar Kaljat Ghusli*, the evergreen musical. Mahesh has performed in over 1000 concerts in India, US, UAE, UK and Southeast Asia.

63^{वें}राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015

दम लगा के हइशा

Dum Laga Ke Haisha

सर्वश्रेष्ठ गायिका

Best Female Playback Singer

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 111 मिनट

निर्देशक: शरत कटारिया निर्माता: मनीष शर्मा पटकथा: शरत कटारिया छायांकन: मनु आनंद संपादक: नम्रता राव संगीत: अनु मलिक गीत: वरुण ग्रोवर अभिनय: आयुष्मान खुराना और भूमि पेडनेकर

2015 | Hindi | Digital | Colour | 111 minutes

Director: Sharat Katariya Producer: Maneesh Sharma
Screenplay: Sharat Katariya Cinematographer: Manu Anand Editor: Namrata Rao Music: Anu Malik Lyrics: Varun Grover Cast: Ayushmann Khurrana & Bhumi Pednekar

प्रशस्ति (Citation)

प्रेम से पगे गीत की आल्हादकारी और मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति।
A delightful and soulful rendition of a song of love.

मोनाली ठाकुर (Monali Thakur)

मोनाली ठाकुर *इंडियन आइडल* की प्रतियोगी रही हैं जिन्होंने कई हिट गाने देकर बॉलीवुड में अपना नाम बना लिया है। *रेस* का गीत 'जरा जरा टच मी' गाकर उन्हें प्रसिद्धि मिली। पिछले साल *लुटेरा* के गीत 'सवार लू' के लिए उन्होंने फिल्मफेयर पुरस्कार जीता। हाल ही में उन्होंने नागेश कुकुनूर की *लक्ष्मी* के साथ बॉलीवुड में अभिनय क्षेत्र में भी पदार्पण किया है।

Monali Thakur was an *Indian Idol* contestant who has made a mark in Bollywood with several hit songs. Monali rose to fame after her song 'Zara Zara Touch Me' from *Race*. She won the Filmfare Award for best female playback singer last year for 'Sawaar Loon' from *Lootera*. She recently made her Bollywood debut as actor in Nagesh Kukunoor's *Lakshmi*.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



बाजीराव मस्तानी

Bajirao Mastani

सर्वश्रेष्ठ छायांकन

Best Cinematography

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 158 मिनट

निर्देशक: संजय लीला भंसाली निर्माता: इरोज इंटरनेशनल और भंसाली प्रोडक्शंस पटकथा: प्रकाश कपाड़िया छायांकन: सुदीप चटर्जी संपादक: राजेश पाण्डेय ध्वनि: बिस्वदीप चटर्जी, जस्टिन जोस संगीत: संजय लीला भंसाली अभिनय: रणवीर सिंह, दीपिका पादुकोण, प्रियंका चोपड़ा और तन्वी आजमी

2015 | Hindi | Digital | Colour | 158 minutes

Director: Sanjay Leela Bhansali Producer: Eros International and Bhansali Productions Screenplay: Prakash Kapadia Cinematographer: Sudeep Chatterjee Editor: Rajesh Pandey Sound: Bishwadeep Chatterjee & Justin Jose Music: Sanjay Leela Bhansali Cast: Ranveer Singh, Deepika Padukone, Priyanka Chopra & Tanvi Azmi

प्रशस्ति (Citation)

अद्भुत दृश्यविधान रचने के लिए, राजप्रासादों की भीतरी साज सज्जा और विशाल भूदृश्यों को रोशनी और छाया के कलात्मक प्रयोग द्वारा खूबसूरती से प्रदर्शित करने के लिए।

For bringing about an outstanding visual dynamics, depicting the grand interiors of palaces and vast landscapes with an artistic interplay of light and shadows.

सुदीप चटर्जी (Sudeep Chatterjee)

सुदीप चटर्जी मुम्बई में रहते और काम करते हैं। कलकत्ता में पैदा हुए और बड़े हुए सुदीप फिल्म और टेलिविज़न संस्थान, पुणे से स्नातक हैं। उन्हें चक दे इंडिया, धूम 3, इकबाल, डोर, चतुष्कोन तथा बेबी जैसी विविधरंगी फिल्मों में उनके काम के लिए जाना जाता है।

Sudeep Chatterjee lives and works in Mumbai. Born and brought up in Kolkata, he graduated from FTII, Pune. He is known for his work in a wide range of films like Chak De India, Dhoom 3, Guzaarish, Iqbal, Dor, Chatushkone and Baby among many others.

63^{वें}राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015पीकू
Pikuसर्वश्रेष्ठ मौलिक पटकथा
Best Original Screenplayरजत कमल
RAJAT KAMAL
₹ 50,000/-

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 125 मिनट

निर्देशक: शुजित सरकार निर्माता: एमएसएम मोशन पिक्चर्स, सरस्वती एंटरटेनमेंट और राइजिंग सन फिल्मस पटकथा: जूही चतुर्वेदी छायांकन: कमलजीत नेगी संपादक: चंद्रशेखर प्रजापति संगीत: अनुपम रॉय अभिनय: अमिताभ बच्चन, दीपिका पादुकोण और इरफान खान

2015 | Hindi | Digital | Colour | 125 minutes

Director: Shoojit Sircar Producer: MSM Motion Pictures, Saraswati Entertainment and Rising Sun Films Screenplay: Juhi Chaturvedi Cinematographer: Kamaljeet Negi Editor: Chandrashekhar Prajapati Music: Anupam Roy Cast: Amitabh Bachchan, Deepika Padukone & Irrfan Khan

प्रशस्ति (Citation)

पिता और पुत्री के मध्य प्यार और तकरार से भरे आनंदकारी संबंध को निर्बाध गति से बहती पटकथा में कमल की हाज़िरजवाबी के साथ दर्शाने के लिए।

For effortless movement of the plot structure, and natural repartees which happens in a delightful love/hate relationship of a father and daughter.

जूही चतुर्वेदी (Juhi Chaturvedi)

जूही चतुर्वेदी ने अपना करियर दि टाइम्स ऑफ इंडिया के साथ स्वतंत्र इलस्ट्रेटर के तौर पर शुरू किया। 1996 में वह दिल्ली आ गई, और वे कला निर्देशक के तौर पर ऑगिल्वी एंड मदर विज्ञापन कंपनी में शामिल हुईं। उन्होंने निर्देशक शुजित सरकार के साथ कई विज्ञापन फिल्मों में काम किया और यहीं से उनके विककी डोनर लिखने का सूत्र निकला। विककी डोनर को समीक्षकीय तारीफें मिलीं और उसने बॉक्स ऑफिस पर आर्थिक सफलता के झंडे भी गाड़े।

Juhi Chaturvedi started her career as a freelance illustrator with The Times of India. She shifted to Delhi in 1996, when she joined advertising with Ogilvy & Mather as an art director. She worked with director Shoojit Sircar on ad films, which led to her scripting Vicky Donor, a film that received rave reviews and was a commercial success.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



तनु वेड्स मनु रिटर्न्स Tanu Weds Manu Returns

सर्वश्रेष्ठ मौलिक पटकथा
Best Original Screenplay

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | हिन्दी | डिजिटल | कलर | 120 मिनट

निर्देशक: आनंद एल. राय, निर्माता: कृशिका लुल्ला और आनंद एल. राय, पटकथा: हिमांशु शर्मा, छायांकन: चिरंतन दास, संपादक: हेमल कोठारी, संगीत: क्रस्ना सोलो, तनिष्क-वायु (बन्नो), अभिनय: माधवन, कंगना रनोट और जिम्मी शेरगिल

2015 | Hindi | Digital | Colour | 120 minutes

Director: Aanand L. Rai Producer: Krishika Lulla and Aanand L. Rai Screenplay: Himanshu Sharma Cinematographer: Chirantan Das Editor: Hemal Kothari Music: Krsna Solo, Tanishk-Vayu (Banno) Cast: Madhavan, Kangana Ranaut & Jimmy Shergil

प्रशस्ति (Citation)

छोटे शहर में रची बसी एक प्रेम कहानी जो इस लेखकीय व्याख्या में अतरंगी बोलियों वाले मजेदार किरदारों से सतरंगी हो जाती है।
The writer's interpretation of a love story set in a small town, becomes populated with interesting characters and their dialogues and dialects.

हिमांशु शर्मा (Himanshu Sharma)

हिमांशु शर्मा ने सिनेमा में अपने लेखन की शुरुआत नंदना सेन और जिम्मी शेरगिल अभिनीत स्ट्रेंजर्स से की। उनकी अन्य फिल्मों में तनु वेड्स मनु और उसका सीक्वल (2011 एवं 2015) तथा रांझणा (2013) शामिल हैं।

Himanshu Sharma made his film writing debut with *Strangers* starring Nandana Sen and Jimmy Shergil. His other credits include *Tanu Weds Manu* and its sequel (2011 & 2015) and *Raanjhanaa* (2013).

63^{वें}राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015

तलवार

Talvar

सर्वश्रेष्ठ रूपांतरित पटकथा

Best Adapted Screenplay

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 132 मिनट

निर्देशक: मेघना गुलज़ार, निर्माता: जंगली पिक्चर्स और वीबी पिक्चर्स
पटकथा-संगीत: विशाल भारद्वाज, छायांकन: पंकज कुमार,
संपादक: ए. श्रीकर प्रसाद, कलाकार: इरफ़ान खान, नीरज कबी और
कोंकणा सेन शर्मा

2015 | Hindi | Digital | Colour | 132 minutes

Director: Meghna Gulzar Producer: Junglee Pictures & VB
Pictures Screenplay-Music: Vishal Bhardwaj
Cinematographer: Pankaj Kumar Editor: A. Sreekar Prasad
Cast: Irrfan Khan, Neeraj Kabi & Konkona Sen Sharma

प्रशस्ति (Citation)

लेखक द्वारा रची गई नाटकीय कथानक युक्ति और पटकथा संरचना के चलते अपनी बेटी की हत्या की त्रासदी झेल रहे परिवार का त्रास बखूबी बयों होता है।

The dramatic structure devised by this writer effectively mirrors the tragedy of a family when their daughter is found murdered.

विशाल भारद्वाज (Vishal Bhardwaj)

विशाल भारद्वाज ने एक संगीतकार के रूप में अपना करियर शुरू किया। वर्ष 2002 में उन्होंने *मकड़ी* के साथ निर्देशकीय पदार्पण किया। तब से वे आठ फिल्मों निर्देशित कर चुके हैं और *मकबूल* (मैकबेथ), *ऑंकारा* (ऑथेलो) तथा *हैदर* (हेमलेट) जैसे शेक्सपियर के नाटकों के शानदार सिनेमाई रूपांतरणों के लिए जाने जाते हैं। भारद्वाज लेखन और निर्देशन ही नहीं करते बल्कि संगीत रचना, गायन और फिल्म निर्माण भी करते हैं।Vishal Bhardwaj started his career as a music composer for films and television. He made his directorial debut in 2002 with *Makdee*. Since then he has directed eight films, and is known for his brilliant adaptation of Shakespeare's work in Hindi: *Maqbool* (*Macbeth*), *Omkaara* (*Othello*) and *Haider* (*Hamlet*). Bhardwaj not only writes and directs, but also composes, sings, and produces films.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



पीकू Piku

सर्वश्रेष्ठ संवाद
Best Dialogue

रजत कमल
RAJAT KAMAL
₹ 50,000/-

2015 | हिन्दी | डिजिटल | कलर | 125 मिनट

निर्देशक: शुजित सरकार, **निर्माता:** एमएसएम मोशन पिक्चर्स, सरस्वती एंटरटेनमेंट और राइजिंग सन फिल्मस, **पटकथा:** जूही चतुर्वेदी **छायांकन:** संपादक: संगीत: अनुपम रॉय **अभिनय:** अमिताभ बच्चन, दीपिका पादुकोण और इरफान खान

2015 | Hindi | Digital | Colour | 125 minutes

Director: Shoojit Sircar **Producer:** MSM Motion Pictures, Saraswati Entertainment & Rising Sun Films **Screenplay:** Juhi Chaturvedi **Cinematographer:** Kamaljeet Negi **Editor:** Chandrashekhar Prajapati **Music:** Anupam Roy **Cast:** Amitabh Bachchan, Deepika Padukone & Irrfan Khan

प्रशस्ति (Citation)

पिता और पुत्री के मध्य प्यार और तकरार से भरे आनंदकारी संबंध को निर्बाध गति से बहती पटकथा में कमल की हाज़िरजवाबी के साथ दर्शाने के लिए।

For effortless movement of the plot structure, and natural repartees which happens in a delightful love/hate relationship of a father and daughter.

जूही चतुर्वेदी (Juhi Chaturvedi)

जूही चतुर्वेदी ने अपना करियर दि टाइम्स ऑफ इंडिया के साथ स्वतंत्र इलस्ट्रेटर के तौर पर शुरू किया। 1996 में वह दिल्ली आ गई, और वे कला निर्देशक के तौर पर ऑगिल्वी एंड मदर विज्ञापन कंपनी में शामिल हुईं। उन्होंने निर्देशक शुजित सरकार के साथ कई विज्ञापन फिल्मों में काम किया और यहीं से उनके *विककी डोनर* लिखने का सूत्र निकला। *विककी डोनर* को समीक्षकीय तारीफें मिलीं और उसने बॉक्स ऑफिस पर आर्थिक सफलता के झंडे भी गाड़े।

Juhi Chaturvedi started her career as a freelance illustrator with *The Times of India*. She shifted to Delhi in 1996, when she joined advertising with Ogilvy & Mather as an art director. She worked with director Shoojit Sircar on ad films, which led to her scripting *Vicky Donor*, a film that received rave reviews and was a commercial success.

63^{वें}राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015तनु वेड्स मनु रिटर्न्स
Tanu Weds Manu Returnsसर्वश्रेष्ठ संवाद
Best Dialogueरजत कमल
RAJAT KAMAL
₹ 50,000/-2015 | हिन्दी | डिजिटल | कलर | 120 मिनट
निर्देशक: आनंद एल. राय, निर्माता: कुशिका लुल्ला और आनंद एल. राय, पटकथा: हिमांशु शर्मा, छायांकन: चिरंतन दास, संपादक: हेमल कोठारी, संगीत: क्रस्ना सोलो, तनिष्क-वायु (बन्नो), अभिनय: माधवन, कंगना रनोट और जिम्मी शेरगिल2015 | Hindi | Digital | Colour | 120 minutes
Director: Aanand L. Rai Producer: Krishika Lulla and Aanand L. Rai Screenplay: Himanshu Sharma Cinematographer: Chirantan Das Editor: Hemal Kothari Music: Krsna Solo, Tanishk-Vayu (Banno) Cast: Madhavan, Kangana Ranaut & Jimmy Shergil

प्रशस्ति (Citation)

छोटे शहर में रची बसी एक प्रेम कहानी जो इस लेखकीय व्याख्या में अतरंगी बोलियों वाले मजेदार किरदारों से सतरंगी हो जाती है।
The writer's interpretation of a love story set in a small town, becomes populated with interesting characters and their dialogues and dialects.

हिमांशु शर्मा (Himanshu Sharma)

हिमांशु शर्मा ने सिनेमा में अपने लेखन की शुरुआत नंदना सेन और जिम्मी शेरगिल अभिनीत स्ट्रेंजर्स से की। उनकी अन्य फिल्मों में तनु वेड्स मनु और उसका सीक्वल (2011 एवं 2015) तथा रांझणा (2013) शामिल हैं।

Himanshu Sharma made his film writing debut with Strangers starring Nandana Sen and Jimmy Shergil. His other credits include Tanu Weds Manu and its sequel (2011 & 2015) and Raanjhanaa (2013).



63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



तलवार

Talvar

सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन
(लोकेशन साउंड रिकॉर्डिस्ट)

Best Audiography,
Location Sound Recordist

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 132 मिनट
निर्देशक: मेघना गुलज़ार, निर्माता: जंगली पिक्चर्स और वीबी पिक्चर्स
पटकथा-संगीत: विशाल भारद्वाज, छायांकन: पंकज कुमार,
संपादक: ए. श्रीकर प्रसाद, कलाकार: इरफ़ान खान, नीरज कबी और
कोंकणा सेन शर्मा

2015 | Hindi | Digital | Colour | 132 minutes
Director: Meghna Gulzar Producer: Junglee Pictures & VB
Pictures Screenplay-Music: Vishal Bhardwaj
Cinematographer: Pankaj Kumar Editor: A. Sreekar Prasad
Cast: Irrfan Khan, Neeraj Kabi & Konkona Sen Sharma

प्रशस्ति (Citation)

गहरे तनाव से गुजरते किरदारों के फिल्मांकन में सभी कुदरती आवाज़ों को कुशलता के साथ दर्ज करने के लिए।

For capturing the natural voices, with all its nuances predominantly of characters undergoing great stress.

संजय कूरियन (Sanjay Kurian)

संजय कूरियन फिल्म एवं टेलिविज़न संस्थान पुणे से वर्ष 2000 में पढ़कर निकले। उन्होंने अपना करियर बहुचर्चित साउंड रिकॉर्डिस्ट रेसुल फुकुट्टी का सहयोगी बन शुरू किया। अफ़गानी फिल्म *बहार-ए-उमीद* (2004) से उनका स्वतंत्र करियर शुरू हुआ और उसके बाद उन्होंने कई हिन्दी फिल्मों में काम किया जैसे *दोस्ताना*, *वेक अप सिड*, *वी आर फ़ैमिली*, *सात खून माफ़*, *चलो दिल्ली*, *मटरू की बिजली का मंडोला*, *इंग्लिश विंग्लिश* और *हैदर*।

Sanjay Kurian graduated from the FTII in 2000. He began his career by assisting renowned sound designer Resul Pookutty. His independent career started with the Afghani film *Bahar-e-Umeed* (2004). Since then he has worked on many Hindi films like *Dostana*, *Wake Up Sid*, *We Are Family*, *7 Khoon Maaf*, *Chalo Dilli*, *Matru Ki Bijlee Ka Mandola*, *English Vinglish* and *Haider*.

63^{वें}राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015

बाजीराव मस्तानी

Bajirao Mastani

सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन
(साउंड डिजाइनर)

Best Audiography (Sound Designer)

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 158 मिनट

निर्देशक: संजय लीला भंसाली निर्माता: इरोज़ इंटरनेशनल और भंसाली प्रोडक्शंस पटकथा: प्रकाश कपाड़िया छायांकन: सुदीप चटर्जी संपादक: राजेश पाण्डेय ध्वनि: बिस्वदीप चटर्जी, जस्टिन जोस संगीत: संजय लीला भंसाली अभिनय: रणवीर सिंह, दीपिका पादुकोण, प्रियंका चोपड़ा और तन्वी आजमी

2015 | Hindi | Digital | Colour | 158 minutes

Director: Sanjay Leela Bhansali Producer: Eros International and Bhansali Productions Screenplay: Prakash Kapadia Cinematographer: Sudeep Chatterjee Editor: Rajesh Pandey Sound: Bishwadeep Chatterjee & Justin Jose Music: Sanjay Leela Bhansali Cast: Ranveer Singh, Deepika Padukone, Priyanka Chopra & Tanvi Azmi

प्रशस्ति (Citation)

बहुमूल्य ध्वन्यांकन, जो विरोचित घर्षणों के मध्य प्रेम के मधुर रंग घोल देता है।

Creating a rich aural tapestry, evoking the romantic moods and heroic tension.

बिस्वदीप चटर्जी (Bishwadeep Chatterjee)

बिस्वदीप चटर्जी फिल्म एवं टेलिविज़न संस्थान, पुणे से स्नातक हैं। तीन दशकों में फैले उनके करियर में उन्होंने तकरीबन सभी किस्म की फिल्मों में काम किया है जिनमें लघु फिल्में वृत्तचित्र, टेलिविज़न धारावाहिक, विज्ञापन फिल्में और म्यूजिक वीडियो शामिल हैं। उन्हें मद्रास कैफ़े में अपने बेहतरीन कार्य के लिए 2013 में सम्मानित राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

Bishwadeep Chatterjee is a graduate of the Film and Television Institute of India. Over a career spanning three decades, he has worked in virtually every department of recording for feature films, short films, documentaries, television serials, advertising films and music albums. He won the prestigious National Award for the feature film *Madras Café* in 2013.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



बाजीराव मस्तानी

Bajirao Mastani

सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन (फाइनल
मिक्स्ड ट्रैक के रि-रिकॉर्डिस्ट)

Best Audiography (Re-recordist of
the final mixed track)

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 158 मिनट

निर्देशक: संजय लीला भंसाली **निर्माता:** इरोज इंटरनेशनल और भंसाली प्रोडक्शंस **पटकथा:** प्रकाश कपाड़िया **छायांकन:** सुदीप चटर्जी **संपादक:** राजेश पाण्डेय **ध्वनि:** बिस्वदीप चटर्जी, जस्टिन जोस **संगीत:** संजय लीला भंसाली **अभिनय:** रणवीर सिंह, दीपिका पादुकोण, प्रियंका चोपड़ा और तन्वी आजमी

2015 | Hindi | Digital | Colour | 158 minutes

Director: Sanjay Leela Bhansali **Producer:** Eros International and Bhansali Productions **Screenplay:** Prakash Kapadia **Cinematographer:** Sudeep Chatterjee **Editor:** Rajesh Pandey **Sound:** Bishwadeep Chatterjee & Justin Jose **Music:** Sanjay Leela Bhansali **Cast:** Ranveer Singh, Deepika Padukone, Priyanka Chopra & Tanvi Azmi

प्रशस्ति (Citation)

राजप्रासादों की भीतरी आहटों से लेकर युद्धक्षेत्रों की अनुगूंज तक भिन्न प्रकार के परिवेशों का सटीक संयोजन।

Perfect blend of the ambiances ranging from royal palace interiors to warfronts.

जस्टिन जोस (Justin Jose)

जस्टिन जोस ने सेंट थॉमस कॉलेज से अर्थशास्त्र में स्नातक की उपाधि ली और चेतना साउंड स्टूडियो से ऑडियो रिकॉर्डिंग में डिप्लोमा हासिल किया। वे 2004 में मुंबई आ गए और सम्मानित साउंड इंजीनियर दीपन चटर्जी के अधीन एडीआर रेकॉर्डिस्ट के बतौर क्यू लैब्स में काम करने लगे। 2006 में वे फीचर फिल्मों के लिए प्रीमिक्स इंजीनियर और 2008 में स्वतंत्र रि-रिकॉर्डिंग मिक्सर के बतौर काम करने लगे।

Justin Jose graduated in economics from St. Thomas College, and later received a diploma in audio recording from Chetana Sound Studio. He moved to Mumbai in 2004 and joined Q Labs as ADR recordist under ace sound engineer Deepan Chatterjee. In 2006 he became a premix engineer for feature films and by 2008 an independent re-recording mixer.

63^{वें}राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015

विसारणै

Visaaranai

सर्वश्रेष्ठ संपादक

Best Editing

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | तमिल | डिजिटल | रंगीन | 109 मिनट

निर्देशक: वेत्री मारन निर्माता: वंडरबार फिल्मस पटकथा: वेत्री मारन, चंद्रकुमार छायांकन: रामा लिंगम संपादक: किशोर टी.ई. अभिनय: दिनेश रवि, पी. समुद्रकनी, किशोर कुमार और मुरुगादास पेरियसमय

2015 | Tamil | Digital | Colour | 109 minutes

Director: Vetri Maaran Producer: Wunderbar Films

Screenplay: Vetri Maaran, Chandrakumar

Cinematographer: Rama Lingam Editor: Kishore T.E. Cast:

Dinesh Ravi, P. Samuthrakani, Kishore Kumar & Murugadas Periyasamy

प्रशस्ति (Citation)

पुलिसिया पूछताछ की कथा में प्रयोगशील सम्पादन युक्तियों के माध्यम से गतिशीलता और उत्सुकता बनाए रखने के लिए।

Maintaining the momentum and edginess of the plot progression of police interrogation, with innovative editing techniques.

किशोर टी. ई. (Kishore T.E.)

किशोर टी. ई. भारतीय संपादक थे और उन्होंने बी. लेनिन एवं वी. टी. विजयन जैसे संपादकों के साथ अपना करियर शुरु किया। उन्होंने 70 से ज्यादा तमिल, तेलुगु और हिन्दी फिल्मों में सहायक संपादक के रूप में कार्य किया। स्वतंत्र संपादक के रूप में उनकी पहली फिल्म थी तमिल फिल्म इरम। किशोर वेत्री मारन की एक नई फिल्म के संपादक का कार्य कर रहे थे कि तभी वे बेहोश हो गए और उन्हें फौरन अस्पताल ले जाया गया। गांठ निकाल दिए जाने के बाद भी उन्हें बचाया नहीं जा सका। वे सिर्फ 36 साल के थे। उन्हें 2011 की फिल्म आडुकालम में अपने काम के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिल चुका है।

Kishore T.E. was an Indian film editor. He joined film editors B. Lenin and V. T. Vijayan as an assistant. He worked on more than 70 Tamil, Telugu and Hindi films as an assistant editor. His first independent film as an editor was the Tamil film Eeram. He won the National Film Award for Best Editing in 2011 for his work in Aadukalam. He died at the age of 36.



63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



बाजीराव मस्तानी

Bajirao Mastani

सर्वश्रेष्ठ प्रॉडक्शन डिजाइन

Best Production Design

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 158 मिनट

निर्देशक: संजय लीला भंसाली निर्माता: इरोज़ इंटरनेशनल और भंसाली प्रोडक्शंस पटकथा: प्रकाश कपाड़िया छायांकन: सुदीप चटर्जी संपादक: राजेश पाण्डेय ध्वनि: बिस्वदीप चटर्जी, जस्टिन जोस संगीत: संजय लीला भंसाली अभिनय: रणवीर सिंह, दीपिका पादुकोण, प्रियंका चोपड़ा और तन्वी आजमी

2015 | Hindi | Digital | Colour | 158 minutes

Director: Sanjay Leela Bhansali Producer: Eros International and Bhansali Productions Screenplay: Prakash Kapadia Cinematographer: Sudeep Chatterjee Editor: Rajesh Pandey Sound: Bishwadeep Chatterjee & Justin Jose Music: Sanjay Leela Bhansali Cast: Ranveer Singh, Deepika Padukone, Priyanka Chopra & Tanvi Azmi

प्रशस्ति (Citation)

एक भव्य ऐतिहासिक कथानक को स्पेस के सटीक और प्रयोगशील उपयोग द्वारा तथा सेट संयोजन के माध्यम से उसकी सम्पूर्ण नाटकीयता में जीवित करने के लिए।

For the inventive use of spaces, props and set decoration to provide a dramatic setting for a grand historical spectacle.

सुजीत सावंत, सलोनी धत्रक, श्रीराम आयंगर

(Sujeet Sawant, Saloni Dhattrak, Sriram Iyengar)

अपनी कला को विज्ञापनों और ग्राफिक डिजाइन के क्षेत्र में मांजने के बाद सुजीत सावंत ने स्वदेश (2004) और देवदास (2002) जैसी लोकप्रिय फिल्मों के साथ सिनेमा में प्रवेश किया। उन्होंने राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता आई एम (2011) और मिर्च (2012) में भी काम किया है। सलोनी धत्रक ने कमला रहेजा कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर से स्नातक किया और 2010 से ही लघु फिल्मों, वृत्रचित्रों, रियलिटी शो, थीम पार्क आदि में कला निर्देशक के तौर पर काम करना शुरू कर दिया। उन्होंने अहमदाबाद की फिल्म सिटी को भी डिजाइन किया है। श्रीराम आयंगर ने 1998 में तनूजा चन्द्रा के सहयोगी के तौर पर अपना करियर शुरू किया। 2001 में चर्चित कला निर्देशक नितिन

देसाई से जुड़े। उनके खाते में आई एम, दिल जो भी कहे, मिर्च, एजेंट विनोद जैसी फिल्में शामिल हैं।

Having honed his artistic skills with a voluminous stint in the field of advertising and graphic designs, **Sujeet Sawant** forayed into the film world with popular movies such as *Swades* (2004) and *Devdas* (2002). His work also includes National Award-winning *I Am* (2011) and *Mirch* (2012). **Saloni Dhattrak** graduated from the Kamla Raheja College of Architecture and commenced working independently in 2010 as art director for short films, documentaries, reality shows, theme parks and also designed a film city at Ahmedabad. **Sriram Iyengar** began his career as an assistant director to Tanuja Chandra in 1998. In 2001 he joined renowned art director Nitin Desai. His credits include *I Am*, *Dil Jo Bhi Kahein*, *Mirch*, *Agent Vinod*.

63^{वें}राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015

नानक शाह फ़कीर

Nanak Shah Fakir

सर्वश्रेष्ठ वेषभूषा

Best Costume Design

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 146 मिनट

निर्माता: गुरबाणी मीडिया प्रा लि पटकथा: हरिन्दर एस सिक्का, ए के बीर छायांकन: ए के बीर, संदीप पाटिल संपादक: अर्चित रस्तोगी ध्वनि: रेसुल फुकुटी संगीत: उत्तम सिंह वस्त्र सज्जा: पायल सलूजा मेक-अप: प्रीतिशील जी सिंह एवं क्लॉवर वूड्रॉन अभिनय: आरिफ़ ज़कारिया, पुनीत सिक्का, अनुराग अरोड़ा और श्रद्धा कौल

2015 | Hindi | Digital | Colour | 146 minutes

Producer: Gurbani Media Pvt. Ltd Screenplay: Harinder Sikka, A.K. Bir Cinematographer: A.K. Bir, Sandeep Patil Editor: Archit Rastogi Sound: Resul Pookutty Music: Uttam Singh Costume Designer: Payal Saluja Make-up: Preetisheel G. Singh and Clover Wootton Cast: Arif Zakaria, Puneet Sikka, Anurag Arora & Shraddha Kaul

प्रशस्ति (Citation)

रंगों, परिधानों, बुनावट का कल्पनाशील प्रयोग विभिन्न महाद्वीपों में फैले भिन्न संस्कृतियों वाले तमाम किरदारों को, एक युग को पुनर्सृजित करने के लिए।

An imaginative use of colours, design and textures to recreate costumes for a host of characters, of an era, from different cultures and continents.

पायल सलूजा (Payal Saluja)

आलोचकीय तारीफें प्राप्त वस्त्र सज्जाकार पायल सलूजा देश की सबसे प्रतिष्ठित पेशेवरों में से एक हैं। नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ डिजाइन (एनआईडी) में पढ़ते हुए ही उन्होंने केतन मेहता के गुजराती टेलिविजन शो में काम करना शुरू कर दिया था। कई पुरस्कारों के लिए नामांकित, उनके खाते में डेढ़ इश्किया, 7 खून माफ़, ये साली जिन्दगी, इश्किया, मनोरमा सिक्स फीट अन्डर, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस : दि फॉरगॉटन हीरो तथा मकबूल जैसी फिल्में शामिल हैं।

Critically acclaimed costume designer Payal Saluja is one of the country's best-known professionals in the industry. It was while studying at the National Institute of Design (NID) that she worked with Ketan Mehta for a Gujarati TV show. Nominated for various awards, her credits include films like Dedh Ishqiya, 7 Khoon Maaf, Yeh Saali Zindagi, Ishqiya, Manorama Six Feet Under, Netaji Subhas Chandra Bose: The Forgotten Hero and Maqbool.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



नानक शाह फ़कीर

Nanak Shah Fakir

सर्वश्रेष्ठ रूपसज्जाकार

Best Make-up Artist

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 146 मिनट

निर्माता: गुरबाणी मीडिया प्रा लि **पटकथा:** हरिन्दर एस सिक्का, ए के बीर **छायांकन:** ए के बीर, संदीप पाटिल **संपादक:** अर्चित रस्तोगी **ध्वनि:** रेसुल फुकुटी **संगीत:** उत्तम सिंह **वस्त्र सज्जा:** पायल सलूजा **मेक-अप:** प्रीतिशील जी सिंह एवं क्लोवर वूट्टॉन **अभिनय:** आरिफ़ ज़कारिया, पुनीत सिक्का, अनुराग अरोड़ा और श्रद्धा कौल

2015 | Hindi | Digital | Colour | 146 minutes

Producer: Gurbani Media Pvt. Ltd **Screenplay:** Harinder Sikka, A.K. Bir **Cinematographer:** A.K. Bir, Sandeep Patil **Editor:** Archit Rastogi **Sound:** Resul Pookutty **Music:** Uttam Singh **Costume Designer:** Payal Saluja **Make-up:** Preetisheel G. Singh and Clover Wootton **Cast:** Arif Zakaria, Puneet Sikka, Anurag Arora & Shraddha Kaul

प्रशस्ति (Citation)

ऐतिहासिक किरदारों की जीवनयात्रा दिखानेवाली तकनीक के सूक्ष्म और रचनात्मक प्रयोग के लिए।

Creating detailed appearances, and meticulous 'ageing' technique to a wide range of historic characters.

क्लोवर वूट्टॉन, प्रीतिशील सिंह

(Clover Wootton, Preetisheel Singh)

क्लोवर वूट्टॉन यूके में पैदा हुईं और वे फाइन आर्ट और मूर्तिकला में उपाधि प्राप्त हैं। इंजीनियर की पढ़ाई पढ़ी प्रीतिशील सिंह ने रोड आइसलैंड में अपना आई टी का करियर छोड़ मेक-अप पढ़ने लॉस एंजलिस जाना पसन्द किया। एस.डब्ल्यू. स्टूडियो की स्थापना के बाद से ही प्रीति और क्लोवर देश के सबसे बेहतरीन मॉडल, अभिनेता और निर्देशकों के साथ काम करती रही हैं। उनके खाते *तलवार*, *बाजीराव मस्तानी*, *एन एच 10*, *फाइंडिंग फ़ैनी* और *हैदर* जैसी फिल्में हैं।

Clover Wootton was born in the UK and has a degree in fine art and sculpture. She is trained as an engineer.

Preetisheel Singh quit her IT career in Rhode Island to retrain as a make-up artist in LA. Since setting up S.W. Studios, Preeti and Clover have worked with the country's top models, actors and directors. They have worked on various high-profile projects such as *Talvar*, *Bajirao Mastani*, *NH 10*, *Finding Fanny* and *Haider*.

63^{वें}राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015

एन्नू निन्ते मोइडीन

Ennu Ninte Moideen

सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक (गीत)

Best Music Direction (Songs)

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | मलयालम | डिजिटल | रंगीन | 167 मिनट

निर्देशक: आर.एस. विमल निर्माता: सुरेश राज, बिनॉय शंकराथ और रेगी थॉमस पटकथा: आर.एस. विमल छायांकन: जोमान टी. जॉन संपादक: महेश नारायण संगीत: गोपी सुंदर, एम. जयचंद्रन और रमेश नारायण अभिनय: पृथ्वी राज, पार्वथी, साईं कुमार और लीना

2015 | Malayalam | Digital | Colour | 167 minutes

Director: R.S. Vimal Producer: Suresh Raj, Binoy Shankarath & Ragy Thomas Screenplay: R.S. Vimal Cinematographer: Jomon T. John Editor: Mahesh Narayanan Music: Gopi Sundar, M. Jayachandran & Ramesh Narayanan Cast: Priithvi Raj, Parvathi, Sai Kumar & Lena

प्रशस्ति (Citation)

त्रासद प्रेम कहानी के लिए यादों से भरा राग रचने के लिए

Creating a haunting melodic composition that resonates the tragic love story.

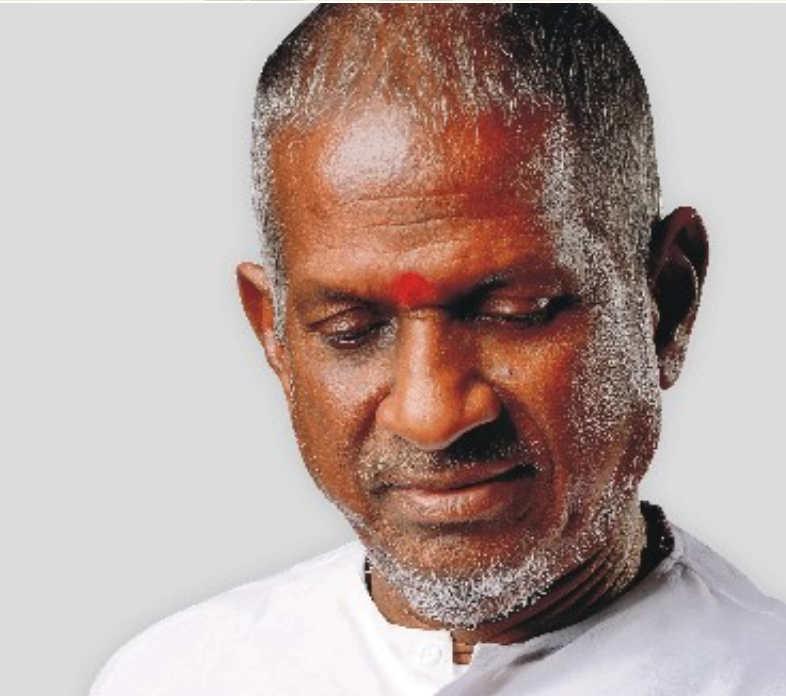
एम जयचंद्रन (M. Jayachandran)

एम जयचंद्रन फिल्म संगीतकार, प्लेबैक सिंगर और कर्नाटक शास्त्रीय संगीत के गायक हैं। उन्होंने 120 से ज्यादा मलयालम फिल्मों में संगीत दिया है और वे सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक का केरल राज्य का फिल्म पुरस्कार रिकॉर्ड छः बार जीत चुके हैं।

M. Jayachandran is a film composer, musician, playback singer and Carnatic classical vocalist. He has composed music for over 120 films in Malayalam and won a record number of six Kerala state film awards for best composer.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



तारई तप्पत्तई

Thaarai Thappattai

सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक

Best Music Direction (Background Score)

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | तमिल | डिजिटल | रंगीन | 128 मिनट

निर्देशक: बाला निर्माता: कंपनी प्रॉडक्शन्स (एम. ससिकुमार)

पटकथा: बाला छायांकन: चेजीयान संपादक: जी ससिकुमार संगीत:

इलयराजा अभिनय: ससिकुमार, वेरालक्ष्मी सरतकुमार, जी. एम. कुमार और आर. के. सुरेश

2015 | Tamil | Digital | Colour | 128 minutes

Director: Bala Producer: Company Productions (M.

Sasikumar) Screenplay: Bala Cinematographer: Chezhiyan

Editor: G. Sasikumar Music: Ilaiyaraaja Cast: Sasikumar,

Varalaxmi Sarathkumar, G.M. Kumar & R.K. Suresh

प्रशस्ति (Citation)

किरदारों की दुनिया को एक सुरीली रंगत देने के लिए लोक संगीत के वाद्ययंत्रों और धुनों का प्रभावी इस्तेमाल।

For effectively using folk musical instruments and melodies, to give a harmonic layer of meaning to the world of the characters.

इलयराजा (Ilaiyaraaja)

इलयराजा भारतीय फिल्म संगीत के महानतम सितारों में से हैं, गायक और गीतकार और एशिया के पहले रचनाकार जिन्होंने सिम्फनी की रचना की। वे ट्रिनिटी कॉलेज ऑफ म्यूजिक, लंदन से गोल्ड मैडल प्राप्त हैं और 4,500 से ज्यादा गीत रच चुके हैं। तीन दशकों में फैले उनके करियर में वे विभिन्न भाषाओं में 900 से ज्यादा फिल्मों का संगीत रच चुके हैं।

Ilaiyaraaja is a legend of Indian film music, a singer and lyricist and the first Asian composer to score a symphony. He is a gold medallist from Trinity College of Music, London, and has composed over 4,500 songs and provided film scores for more than 900 Indian films in various languages in a career spanning more than thirty years.

63^{वें}राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015

दम लगा के हइशा

Dum Laga Ke Haisha

सर्वश्रेष्ठ गीत

Best Lyrics

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 111 मिनट

निर्देशक: शरत कटारिया निर्माता: मनीष शर्मा पटकथा: शरत कटारिया छायांकन: मनु आनंद संपादक: नम्रता राव संगीत: अनु मलिक गीत: वरुण ग्रोवर अभिनय: आयुष्मान खुराना और भूमि पेडनेकर

2015 | Hindi | Digital | Colour | 111 minutes

Director: Sharat Katariya Producer: Maneesh Sharma Screenplay: Sharat Katariya Cinematographer: Manu Anand Editor: Namrata Rao Music: Anu Malik Lyrics: Varun Grover Cast: Ayushmann Khurrana & Bhumi Pednekar

प्रशस्ति (Citation)

ताजा और सरल रूपकों की माला, गीत के रूप में, प्रेम को अभिव्यक्त करते हुए।

For the fresh simple array of metaphors, in the form of a song, expressing love.

वरुण ग्रोवर (Varun Grover)

वरुण ग्रोवर आईआईटी (बीएचयू), वाराणसी से पढ़े इंजिनियर हैं और उनके पास भारतीय टेलिविज़न के लिए सात साल से ज्यादा स्टेन्ड-अप कॉमेडी लिखने का अनुभव है। वे फीचर फिल्म मसान के लेखक हैं। वे गैंग्स ऑफ वासेपुर, कटियाबाज़ और आँखों देखी जैसी फिल्मों के लिए गाने लिख चुके हैं।

Varun Grover is an engineer from IIT (BHU), Varanasi, with over seven years of stand-up comedy writing experience for Indian TV. He has written the feature film Masaan. He has also written songs for Gangs of Wasseypur, Katiyabaaz and Ankhon Dekhi.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



मार्गरिटा विथ ए स्ट्रॉ

Margarita With a Straw

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

Special Jury Award

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 2,00,000/-

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 102 मिनट

निर्देशक—निर्माता—पटकथा: शोनाली बोस, निलेश मनीयार
छायांकन: ऐन मिसावा संपादक: मोनीषा बल्दवा ध्वनि: रिसुल
पूकुट्टी, अमृत प्रीतम अभिनय: कल्कि कोचलिन, रेवथी, सायनी गुप्ता
और विलियम मोसले

2015 | Hindi | Digital | Colour | 102 minutes

Director-Producer-Screenplay: Shonali Bose, Nilesh
Maniyar Cinematographer: Anne Misawa Editor: Monisha
Baldawa Sound: Resul Pookutty, Amrit Pritam Cast: Kalki
Koechlin, Revathy, Sayani Gupta & William Moseley

प्रशस्ति (Citation)

सेरेब्रल पेल्सी से जूझती एक युवा लड़की की भूमिका में यथार्थवादी
अभिनय के लिए।

For the realistic performance as a young woman afflicted
with cerebral palsy.

कल्कि कोचलीन (Kalki Koechlin)

कल्कि कोचलीन फेंच मूल की भारतीय अभिनेत्री हैं। वे बॉलीवुड में
पुराने जमाने से चले आ रहे स्त्री किरदारों के स्टीरियोटिपिकल चित्रण
को तोड़ने वाली भूमिकाओं को निभाने के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने
अपने करियर की शुरुआत डेव डी से की और आगे ये जवानी है
दिवानी, शंघाई, एक थी डायन, मार्गरिटा विथ ए स्ट्रॉ जैसी फिल्मों में
अभिनय का लोहा मनवाया। फिल्मों में अभिनय के अलावा कल्कि ने
रंगमंच के लिए कई नाटक लिखे भी हैं और उनका निर्माण भी किया है।
कल्कि एक सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं।

Kalki Koechlin is an Indian actress of French descent.
She has predominately worked in Bollywood, and is best
known for her character roles that defy stereotypical
portrayal of women in Indian cinema. She started her
career in Dev D and later continued giving some brilliant
performances in movies like Yeh Jawani Hai Deewani,
Shanghai, Ek Thi Daayan, Margarita With a Straw etc. In
addition to her film career, Koechlin has written,
produced and acted in many stage plays in India.
Koechlin is also an activist and a celebrity endorser.

63^{वें}राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015

बाजीराव मस्तानी

Bajirao Mastani

सर्वश्रेष्ठ नृत्य संयोजन

Best Choreography

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 158 मिनट

निर्देशक: संजय लीला भंसाली निर्माता: इरोज़ इंटरनेशनल और भंसाली प्रोडक्शंस पटकथा: प्रकाश कपाड़िया छायांकन: सुदीप चटर्जी संपादक: राजेश पाण्डेय ध्वनि: बिस्वदीप चटर्जी, जस्टिन जोस संगीत: संजय लीला भंसाली अभिनय: रणवीर सिंह, दीपिका पादुकोण, प्रियंका चोपड़ा और तन्वी आजमी

2015 | Hindi | Digital | Colour | 158 minutes

Director: Sanjay Leela Bhansali Producer: Eros International and Bhansali Productions Screenplay: Prakash Kapadia Cinematographer: Sudeep Chatterjee Editor: Rajesh Pandey Sound: Bishwadeep Chatterjee & Justin Jose Music: Sanjay Leela Bhansali Cast: Ranveer Singh, Deepika Padukone, Priyanka Chopra & Tanvi Azmi

प्रशस्ति (Citation)

प्रेम की तड़प और सामाजिक मर्यादाओं को लांघ जाने के जज्बे को अभिव्यक्त करती आकर्षक नृत्य भंगिमाओं को रचने के लिए, जो फिल्म का सत्व भी है।

For creating enchanting moves that express anguish of love, defying social barriers, resonating the core theme of the film.

रेमो डी'सूजा (Remo D'Souza)

रेमो डी'सूजा डांस इंडिया और झलक दिखला जा जैसे टेलिविज़न शो में निर्णायक रहे हैं। उनकी पहली फिल्म लाल पहारेर कथा ट्रिबेका फिल्म समारोह और ओसियान फिल्म समारोह में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार जीतनेवाली पहली फिल्म थी। बॉलीवुड में उनकी पहली निर्देशकीय फिल्म फ़ालतू सफल फिल्म थी। उन्होंने भारत की पहली थ्रीडी डांस फिल्म एबीसीडी एनी बडी कैन डांस बनाई। उनकी अगली फिल्म एबीसीडी 2 भी बड़ी ब्लॉकबस्टर साबित हुई।

Remo D'Souza was a judge in the television shows Dance India Dance and Jhalak Dikhhlaja. He made his first movie, Lal Paharer Katha, which was the first Indian film to win best film at Tribeca film festival and Osians film festival. His first movie as a Bollywood director, F.A.L.T.U., was a hit. He made India's first 3D dance movie, ABCD Any Body Can Dance. His next venture, ABCD 2, was another blockbuster.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



बाहुबली

Baahubali

सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफैक्ट

Best Special Effect

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | तेलुगु | डिजिटल | रंगीन | 159 मिनट

निर्देशक-पटकथा: एस. एस. राजामौली निर्माता: आर्का मीडियावर्क्स (प) लि. छायांकन: के. के. सेंथिल कुमार संपादक: के. वेंकटेश्वर राव कला निर्देशक: साबू सायरिल दृश्यात्मक प्रभाव: वी. श्रीनिवास मोहन संगीत: एम. एम. कीरावनी, अभिनेता: प्रभास, राणा डुगुबाती, अनुष्का शेटी और तमन्ना

2015 | Telugu | Digital | Colour | 159 minutes

Director-Screenplay: S.S. Rajamouli Producer: Arka Mediaworks (P) Ltd Cinematographer: K.K. Senthil Kumar Editor: K. Venkateswara Rao Art Director: Sabu Cyril Visual Effects: V. Srinivas Mohan Music: M.M. Keeravani Cast: Prabhas, Rana Daggubati, Anushkha Shetty & Tamannah

प्रशस्ति (Citation)

रोमांचकारी विशेष प्रभाव रचने के लिए, जो कहानी के भावनात्मक और नाटकीय दोनों पक्षों को समृद्ध करते हैं।

For creating breath-taking special effects which bring out the emotional and dramatic upheavals of the story.

वी. श्रीनिवास मोहन (V. Srinivas Mohan)

वी. श्रीनिवास मोहन को फिल्मोद्योग में पन्द्रह साल का अनुभव हासिल है। वे इंडियन आर्टिस्ट कम्प्यूटर ग्राफिक्स प्रा. लि. के सह-संस्थापक और सीईओ हैं। यह संस्था अब तक तीन राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुकी है।

V. Srinivas Mohan has over fifteen years of experience in the film industry. He is the co-founder and CEO of Indian Artists Computer Graphics Pvt. Ltd, that has won three National Film Awards.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015

63^{वें}

आधिकारिक विवरणिका
THE OFFICIAL CATALOGUE

सैरत

Sairat

विशेष उल्लेख

Special Mention

प्रशस्ति पत्र CERTIFICATE

2015 | मराठी | डिजिटल | रंगीन | 170 मिनट

निर्देशक—पटकथा: नागराज मंजुले निर्माता: नितिन केनी, निखिल साने छायांकन: सुधाकर रेड्डी संपादक: कुतूब ईनामदार संगीत: अजय गुगावले और अतुल गुगावले अभिनय: आकाश थोसर, रिकू राजगुरु, तानाजी गलगुंडे, अरबाज शेख, सुरेश विश्वकर्मा, सुरज पवार और छाया कदम

2016 | Marathi | Digital | Colour | 170 minutes

Director-Screenplay: Nagraj Manjule Producer: Nittin Keni, Nikhil Sane Cinematographer: Sudhakar Reddy Editor: Kutub Inamdar Music: Ajay Gogavale and Atul Gogavale Cast: Akash Thosar, Rinku Rajguru, Tanaji Galgunde, Arbaj Shaikh, Suresh Vishwakarma, Suraj Pawar & Chhaya Kadam

प्रशस्ति (Citation)

सामाजिक मान्यताओं को चुनौती देती एक खुशदिल लड़की जिसे अन्ततः परिवार का प्रकोप सहना पड़ता है, के प्रभावी अभिनय के लिए।
For her effective portrayal of a lively girl who defies societal norms but ultimately has to face the wrath of her family.

रिकू राजगुरु (Rinku Rajguru)

चौदह वर्षीय रिकू राजगुरु महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के अकलुज गाँव की निवासी हैं। उनकी प्रतिभा को पहचानने और आगे बढ़ाने का श्रेय प्रशंसित निर्देशक नागराज मंजुले को जाता है।

Fourteen-year-old Rinku Rajguru hails from Akluj village in Solapur district of Maharashtra. She was discovered and groomed by acclaimed director Nagraj Manjule.



63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



सु सु सुद्धि वत्मीकम

Su Su Sudhi Vathmeekam

लुकका छुप्पी

Lukka Chuppi

विशेष उल्लेख

Special Mention

प्रशस्ति पत्र

CERTIFICATE

प्रशस्ति (Citation)

विभिन्न भूमिकाओं में उनके कल्पनाशील और दिल को छू लेनेवाले अभिनय के लिए।

For his inventive and heartfelt performance in varied roles.



जयसूर्या (Jayasurya)

जयसूर्या भारतीय फिल्म अभिनेता, निर्माता, छद्मवेशधारी अभिनय करनेवाले और गायक हैं। वे 75 से ज्यादा मलयालम फिल्मों में

अभिनय कर चुके हैं 2001 में मलयालम फिल्म *पाथरम* के साथ उनका करियर शुरू हुआ। नायक के तौर पर उनकी पहली हिट फिल्म जिसने उन्हें पहचान दिलाई वो थी *ऊमापेन्निनु उरियादाप्पायान*। *कॉकटेल*, *ब्यूटिफुल*, *त्रिवेंद्रम लॉज*, *अपोथेचेरी* जैसी मलयालम फिल्मों ने उन्हें आलोचकीय पहचान दिलवाई।

Jayasurya is an Indian film actor, producer, impersonator and singer. He has starred in over 75 Malayalam films. He made his debut in the Malayalam film *Pathram*. His breakthrough and first leading role was in *Oomappenninu Uriyadappayyan*. Jayasurya gained critical acclaim through Malayalam films such as *Cocktail*, *Beautiful*, *Trivandrum Lodge*, *Apothecary*.

इरुधी सुत्तुरु

Irudhi Suttru

विशेष उल्लेख

Special Mention

प्रशस्ति पत्र

CERTIFICATE

2015 | तमिल | डिजिटल | रंगीन | 113 मिनट

निर्देशक: सुधा कोंगारा **निर्माता:** एस. शशीकांथ **पटकथा:** सुधा कोंगारा, सुनंदा रघुनाथन **छायांकन:** शिवकुमार विजयन **संपादक:** सतीहीश सुर्या **संगीत:** संतोष नारायण **अभिनेता:** आर माधवन, ऋतिका सिंह, ज़ाकिर हुसैन, नसीर, 'दातुक' राधा रवि, टी वेंकटेशन और मुमताज सरकार

2015 | Tamil | Digital | Colour | 113 min

Director: Sudha Kongara **Producer:** S. Sashikanth
Screenplay: Sudha Kongara, Sunandha Raghunathan
Cinematographer: Sivakumar Vijayan **Editor:** Satihish Suriya **Music:** Santosh Narayan **Cast:** R Madhavan, Ritika Singh, Zakir Hussain, Nasser, 'Datuk' Radha Ravi, T Venkatesan & Mumtaz Sorcar

प्रशस्ति (Citation)

एक मुक्केबाज़ बनने के सफर को प्रदर्शित करते दमदार अभिनय के लिए।

For her gutsy performance of a boxer in the making.

ऋतिका सिंह (Ritika Singh)

ऋतिका सिंह कराटे में ब्लैक बेल्ट है और उन्होंने विश्व कराटे चैम्पियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व किया। किकबॉक्सिंग में भी वे भारत का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं और दस बार की राष्ट्रीय चैम्पियन हैं। इरुधी सुत्तुरु (तमिल) और साला खडूस (हिन्दी) में अभिनय से पहले वे एक रियलिटी टेलिविज़न शो में भी भाग ले चुकी हैं।

Ritika Singh is a black belt in Karate and has represented India in the World Karate Championship. She represented India in Kickboxing for the Asian Champions and is a ten-time national champion. Before debuting as a lead actress in *Irudhi Suttru* (Tamil) and *Saala Khadoos* (Hindi), she had also participated in a reality TV show.



कथासार (Synopsis)

बाजीराव मस्तानी (Bajirao Mastani)

इस आख्यानक ऐतिहासिक रोमांस में बीस साल के बाजीराव पेशवा पद पर आसीन हुए हैं। बाजीराव मराठा साम्राज्य के विस्तार के लिए और हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना के लिए निकले हैं। इधर मुगल बुन्देलखंड पर घेरा डाल देते हैं। प्रदेश का असहाय राजा छत्रसाल बाजीराव के पास संदेश भिजवाता है, अपनी बेटी मस्तानी के जरिए। यहीं से शुरु होती है इन बदकिस्मत प्रेमियों की कहानी, प्रेमी जो एक दूसरे का पूरा जोड़ हैं।

In this epic historical romance, twenty-year-old Bajirao is appointed to the post of Peshwa. Bajirao embarks on a campaign to expand the Maratha Empire and establish a Hindavi Swarajya. The Mughals lay siege to Bundelkhand. The helpless king of the province, Raja Chatrasal, sends a message to Bajirao through his daughter Mastani. Thus begins the story of two star-crossed lovers who are more than a match for each other.

पीकू (Piku)

पीकू दिल्ली की रहनेवाली स्थापत्यकार है जो अपना छोटा सा बिज़नेस चलाती है, घर संभालती है और अपने सत्तर साला पिता भास्कर बनर्जी की देखभाल करती है। भास्कर एक वहमी इंसान हैं जो अपनी बेटी का सारा ध्यान सदा अपने ऊपर चाहते हैं और उसे कभी अकेला नहीं छोड़ते। फिर एक सड़क यात्रा उन्हें एक दूसरे की झल्लाहटों और मूर्खताओं का सामना करने को मजबूर करती है।

Piku is a Delhi-based architect who manages her small business, runs her home and takes care of her seventy-year-old father Bhashkor Banerji, a hypochondriac who must ensure that he has her attention 24/7, leaving her with little time to do anything else. A road trip forces them to deal with each other's moods and idiosyncrasies.

तनु वेड्स मनु रिटर्न्स (Tanu Weds Manu Returns)

तनु और मनु की शादी को चार साल हो चुके हैं और अब उनका संबंध लंदन की सर्दियों जितना ठंडा हो चुका है। वे अलग होने का फैसला करते हैं और भारत में अपने-अपने घरों को लौट आते हैं। कानपुर पहुँचते ही तनु अपने पुराने रंग में आ जाती है। लेकिन परिस्थितियों में घुमाव तब आता है जब दिल्ली में मनु को एकदम तनु के जैसी दिखनेवाली दिल्ली युनिवर्सिटी की छात्रा दत्तो से प्यार हो जाता है। चीजें तब और उलझती हैं जब राजा अवस्थी, तनु का पुराना मंगेतर, उनकी जिन्दगी में वापस आ जाता है।

It's been four years since Tanu and Manu's eventful wedding and their relationship is now as cold as the London winter. They decide to part ways and return to their own homes back in India. After reaching Kanpur, Tanu immediately changes to her old self. The situation becomes interesting when Manu, now in Delhi, starts falling for a Delhi University student, Datto, who looks strikingly similar to Tanu. Things keep aggravating as Raja Awasthi, Tanu's ex-fiancé, re-enters her life.

बेन (Ben)

केरल के एक गाँव में रहने वाले बच्चे के साथ घटी सच्ची घटना पर आधारित, यह फिल्म दस वर्षीय बेन की कहानी है जो हमारे समाज को आईना दिखाती है। बेन समाज द्वारा बनाए गए मानदण्डों पर खरा नहीं उतरता, क्योंकि उसकी माँ की उससे कुछ ज्यादा ही अपेक्षाएँ हैं। फिल्म इसके बाद घटनेवाली घटनाओं को दर्ज करती चलती है।

Based on a real-life incident in the life of a child in a village in Kerala, the film revolves around ten-year-old Ben and holds a mirror to society. Ben doesn't meet the standards set by society, which in turn responds to his failure to meet his mother's rather high expectations; the film charts the course of what happens subsequently.

कट्यार कालजात घुसली (Katyar Kalijat Ghusli)

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में विश्रामपुर नामक राज्य की कहानी, यह फिल्म दो संगीत सुरसाधकों खानसाहेब और पंडितजी को राजा के दरबार में शाही गायक के पद के लिए मुकाबला करते प्रस्तुत करती है। यह सम्मान, विश्रवासघात, प्रतिभा और संघर्ष की कहानी है जिसे समृद्ध भारतीय शास्त्रीय संगीत परम्परा की पृष्ठभूमि पर फिल्माया गया है। इस विलक्षण कथा की कथावाचक यहाँ एक कटार है।

Set in the princely state of Vishrampur in the late nineteenth century, this film is about two great singing maestros, Khansaheb and Panditji, competing for the post of the royal singer in the king's court. It is a story about prestige, deceit, talent and struggle set in the backdrop of rich Indian classical music, a story uncannily narrated by a dagger (Katyar).

तलवार (Talvar)

तलवार वास्तविक घटनाओं पर आधारित फिल्म है, जो नोयडा डबल मर्डर केस नाम से मशहूर आरुषि तलवार हत्याकांड और उसकी जांच पर आधारित कल्पित पटकथा है। यह भारत के समकालीन इतिहास का सबसे चर्चित हत्याकांड है। जनता के दिमाग में आज भी इसकी यादें ताज़ा हैं, और अपराध की सज़ा घोषित होने के बाद भी फ़ैसले से आज तक किसी को संतुष्टि नहीं मिली है।

Talvar is a fictional dramatization of true-life events revolving around the Aarushi Talwar murder case investigation. Known as the Noida Double Murder Case, it is one of the most intriguing and talked about murder cases in recent Indian history. The incident still resonates in the minds of the public, as there is no sense of closure in the case in spite of a guilty verdict.

तारई तप्पत्तई (Thaarai Thappattai)

फिल्म तंजौर, तमिलनाडु के लोक कलाकारों के दयनीय जीवन को दर्शाती है, जिन्हें वैश्वीकरण के बाद आई उपभोक्ता संस्कृति ने लील लिया है। यह लोक कलाकार सन्नासी की कथा सुनाती है, एक विशेषज्ञ वादक, और सूरावल्ली, उनकी टोली की प्रमुख लोकनर्तक के प्रति उसके मौन प्रेम को दिखाती है।

The film unfolds the pathetic life of the folk artists of Tanjore, Tamil Nadu, who have fallen prey to the globalised consumer culture. It traces the story of Sannasi the protagonist, a folk artist, an expert percussionist and his silent love for Sooravalli, the prime folk dancer of his troupe.

इरुधि सुत्तुरु (Irudhi Suttru)

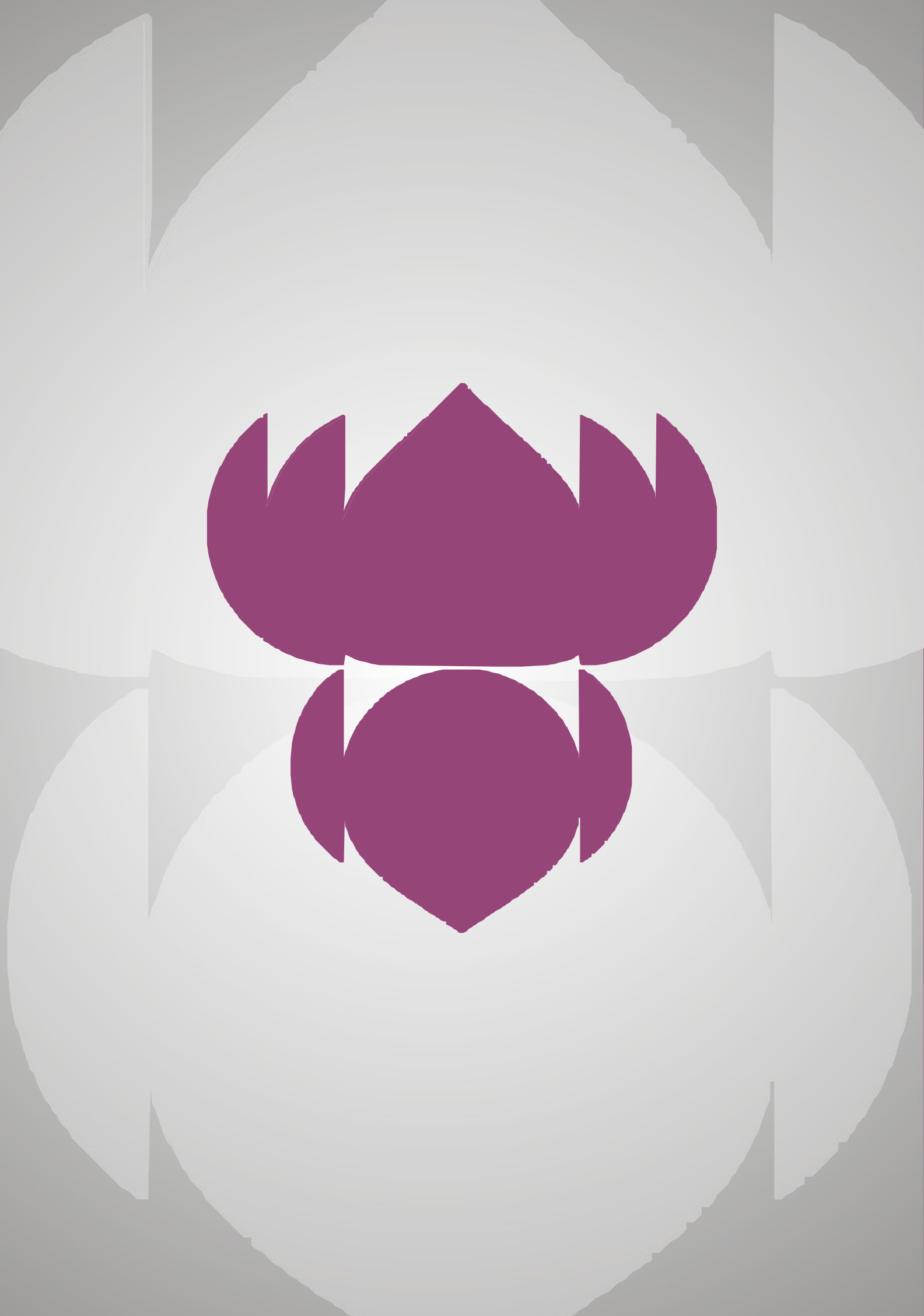
प्रभु एक घमंडी लेकिन बहुत ही सफल महिला बॉक्सिंग कोच है। एसोसिएशन की राजनीति का शिकार, वह पुराने अधिकारियों को चुनौती देता है कि वह चैम्पियन बनाकर दिखाएगा। अपनी खोज में उसकी मुलाकात एक सत्रह साल की मछली बेचनेवाली लड़की से होती है, जिसमें गजब की लड़ने की क्षमता है। प्रतिभा से भरी लेकिन अनिच्छुक लड़की और उसमें वो सब कुछ हासिल करने की क्षमता देखनेवाले – जो वो स्वयं हासिल नहीं कर पाया, कोच के मध्य यह इरादों की जंग है।

Prabhu is an arrogant and a highly successful women's boxing coach. A victim of association politics, he challenges the corrupt old guard that he will make a champion. In this quest, he meets a seventeen-year-old fish seller with a rare fighting spirit. It's a battle of wills between the reluctant girl who has all the talent and is least interested in promoting it and a man who sees in her the capacity to achieve what he never could.

63^{वें}

आधिकारिक विवरणिका
THE OFFICIAL CATALOGUE





गैर फीचर फ़िल्में

NON-FEATURE FILMS

63^{वें}
राष्ट्रीय
फ़िल्म
पुरस्कार
2015
NATIONAL FILM
AWARDS 2015

35 मि.मि. या बड़े गेज या डिजिटल प्रारूप में बनी किन्तु फ़िल्म प्रारूप अथवा वीडियो/डिजिटल प्रारूप में जारी किसी भी भारतीय भाषा में बनी और केन्द्रीय फ़िल्म प्रमाणन बोर्ड द्वारा वृत्त-चित्र/न्यूजरील/गैर-कथाचित्र/लघु कल्पित के रूप में प्रमाणीकृत फ़िल्म गैर फीचर फ़िल्म वर्ग के लिए पात्र है।

Films made in any Indian language, shot on 35 mm or in a wider gauge or digital format but released on either film format or Video/Digital format and certified by the Central Board of Film Certification as a Documentary/Newsreel/Non-Fiction/Short Fiction are eligible for non-feature film section.

गैर फ़ीचर फ़िल्में | एक नज़र में

NON-FEATURE FILMS | AT A GLANCE



■ **अमदावाद मा फ़ेमस** (गुजराती, हिन्दी)
सर्वश्रेष्ठ गैर-फ़ीचर फ़िल्म

Amdavad Ma Famous (Gujarati, Hindi)
Best Non-Feature Film

■ **ए फ़ार आफ्टरनून: ए पेंटेड सागा** (हिन्दी, अंग्रेज़ी)
सर्वश्रेष्ठ कला/सांस्कृतिक फिल्म (साझा)
सर्वश्रेष्ठ संगीत आलेखन
अरविन्द-शंकर

A Far Afternoon: A Painted Saga (Hindi, English)
Best Arts/Cultural Film (Shared)
Best Music
Aravind-Shankar

■ **अम्मा** (मलयालम)
विशेष उल्लेख
नीलन

Amma (Malayalam)
Special Mention
Neelan

■ **ओलेंग** (अंग्रेज़ी)
सर्वश्रेष्ठ मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म
Aoleang (English)
Best Anthropological/Ethnographic Film

■ **अरंगिले नित्या विस्मयम गुरु चेमंचेरी कुन्हीरमण नायर**
(मलयालम)
सर्वश्रेष्ठ प्रकथन/वॉइस ओवर (साझा)
प्रो. अलियार

Arangile Nithya Vismayam Guru Chemancherry
Kunhiraman Nair (Malayalam)
Best Narration/Voice-Over (Shared)
Prof. Aliyar

■ **औषध** (मराठी)
सर्वश्रेष्ठ लघु कल्पित फिल्म

Aushadh (Marathi)
Best Short Fiction Film

■ **ऑटो झाइवर** (मणिपुरी)
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म

Auto Driver (Manipuri)
Best Film on Social Issues

■ **बनारस: द अनएक्सप्लोर्ड अटैचमेंट्स** (बंगाली)
सर्वश्रेष्ठ छायांकन
अमर्त्य भट्टाचार्य

Benaras: The Unexplored Attachments (Bengali)
Best Cinematography
Amartya Bhattacharyya

■ **बेस्ट फ्रेंड्स फॉरेवर** (अंग्रेज़ी)
पारिवारिक मूल्यों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म

Best Friends Forever (English)
Best Film on Family Values

■ **ब्रेकिंग फ्री** (अंग्रेज़ी)
सर्वश्रेष्ठ संपादन
प्रवीण अंगरे, श्रीधर रंगायन

Breaking Free (English)
Best Editing
Pravin Angre, Sridhar Rangayan

■ **दारवठा** (मराठी)
निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ प्रथम गैर-फ़ीचर फिल्म

Daaravtha (Marathi)
Best Debut Film of a Director

■ **ड्रिबलिंग विथ देयर फ़्यूचर** (अंग्रेज़ी, कन्नड़, तमिल)
सर्वश्रेष्ठ गणवेशा/साहसिक फिल्म

Dribbling With Their Future (English, Kannada, Tamil)
Best Exploration/ Adventure Film

■ **एडपा काना** (कुडुख)
सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन
मौमिता रॉय

Edpa Kana (Kudukh)
Best Audiography
Moumita Roy

■ **फिशरवुमन एंड टुक टुक** (मूक)
सर्वश्रेष्ठ एनीमेशन फिल्म



Fisherwoman And Tuktuk (No Language)
Best Animation Film

- **गॉड ऑन द एज** (अंग्रेजी, बंगाली)
सर्वश्रेष्ठ प्रोत्साहन देने वाली फिल्म

God on the Edge (English, Bengali)
Best Promotional Film

- **इन सर्च ऑफ़ फ़ेडिंग कैनवास** (हिन्दी)
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

In Search of Fading Canvas (Hindi)
Special Jury Award

- **कामुकी** (मलयालम)
सर्वश्रेष्ठ निर्देशन
क्रिस्टो टॉमी

Kamuki (Malayalam)
Best Direction
Christo Tomy

- **लाइफ़ इन मेटाफ़र्स: ए पोर्ट्रेट ऑफ़ गिरीश कासरवल्ली**
(अंग्रेजी, कन्नड़)
सर्वश्रेष्ठ जीवनी/ऐतिहासिक पुनःनिर्माण संकलन फिल्म

Life in Metaphors: A Portrait of Girish Kasaravalli
(English, Kannada)
Best Biographical/Historical Reconstruction

- **माला लाज वाटत नाही** (मराठी, हिन्दी, अंग्रेजी)
सर्वश्रेष्ठ प्रकथन/वॉइस ओवर (साझा)
हरीश भिमानी

Mala Laj Watat Nahai (Marathi, Hindi, English)
Best Narration/Voice-Over (Shared)
Harish Bhimani

- **पायवाट** (मराठी)
सर्वश्रेष्ठ शैक्षिक फिल्म

Paywat (Marathi)
Best Educational Film

- **स्याही** (हिन्दी)
विशेष उल्लेख
वरुण टंडन

Syaahi (Hindi)
Special Mention
Varun Tandon

- **तेजपुर 1962** (अंग्रेजी)
सर्वश्रेष्ठ खोजपरक फिल्म

Tezpur 1962 (English)
Best Investigative Film

- **दि केमेलीऑन** (अंग्रेजी, हिन्दी)
विशेष उल्लेख
अरुण शंकर

The Chameleon (English, Hindi)
Special Mention
Arun Shankar

- **दि मैन व्हू ड्वार्फ़ेड दि माउंटेन्स** (हिन्दी, अंग्रेजी)
सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण फिल्म

The Man Who Dwarfed the Mountains (Hindi, English)
Best Environment Film

- **वीव्स ऑफ़ महेश्वर** (हिन्दी, अंग्रेजी)
सर्वश्रेष्ठ प्रोत्साहन देने वाली फिल्म

Weaves of Maheshwar (Hindi, English)
Best Promotional Film

- **याज्हपनाम थेड्चनमूति: म्यूज़िक बियॉन्ड बाउंड्रीज़** (तमिल)
सर्वश्रेष्ठ कला/सांस्कृतिक फिल्म (साझा)

Yazhpanam Thedchanamoorthy: Music Beyond Boundaries (Tamil)
Best Arts/Cultural Film (Shared)

63^{वें}

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



अमदावाद मा फ़ेमस

Amdavad Ma Famous

सर्वश्रेष्ठ गैर-फ़ीचर फ़िल्म

Best Non-Feature Film

स्वर्ण कमल

SWARNA KAMAL

₹ 1,50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

आकाश में उड़ती पतंगें मिट्टी के तमाम रंगों को अपने में समेटे हैं।

The kites soar high bringing alive the colours of the land.

अमदावाद मा फ़ेमस | Amdavad Ma Famous

2015 | गुजराती, हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 30 मिनट

निर्देशक: हार्दिक मेहता निर्माता: अकांक्षा तिवारी, आर्या मेनन छायांकन: पीयूष पुट्टी संपादक: हार्दिक मेहता ध्वनि: मनोज गोस्वामी संगीत: आलोकनन्दा दासगुप्ता

2015 | Gujarati, Hindi | Digital | Colour | 30 minutes

Director: Hardik Mehta Producer: Akanksha Tiwari & Arya Menon Cinematographer: Piyush Puty Editor: Hardik Mehta Sound: Manoj Goswami Music: Alokandana Dasgupta

कथासार (Synopsis)

मकर संक्रान्ति के रंगभरी पतंगों भरे त्यौहार को पृष्ठभूमि बनाकर रची गई *अमदावाद मा फ़ेमस* एक ग्यारह साल के लड़के जायद की कहानी है। यह कहानी जायद को एक आम छोकरे से एक ऐसे लड़के में बदलते देखती है जो दो दिन के इस त्यौहार में जैसे जीवन का उद्देश्य पा लेता है। पतंगबाजी के इस अद्भुत त्यौहार के दौरान अहमदाबाद शहर को एक निराला ही पागलपन घेर लेता है। यहाँ जायद का पतंगबाजी का जुनून जैसे पूरे हिन्दुस्तान की विविधरंगी संस्कृति की छोटी सी झलक बन जाता है।

Set against the colourful backdrop of the Uttrayana festival, *Amdavad Ma Famous* records the transformation of an eleven-year-old Zaid from being just another lad to one whose passion drives him through a two-day adventure. The whimsical nature of the kite-flying festival, the kind of madness that grips Ahmedabad city and Zaid's passion for kites provides a kaleidoscopic glimpse of a unique India.

परिचय (Profile)



हार्दिक मेहता (Hardik Mehta)

हार्दिक मेहता एक स्वतंत्र फ़िल्मकार हैं। साल 2004 में फूड और डेयरी तकनीक में स्नातक डिग्री हासिल करने के बाद उन्होंने विज्ञापन जगत में कॉपीराइटर के बतौर काम किया। एजेके एमसीआरसी से दो साला स्नातकोत्तर उपाधि लेने के बाद उन्होंने भारतीय सिनेमा जगत में बतौर पेशेवर कार्य करना शुरू किया।

Hardik Mehta is an independent film-maker. After completing his graduation in 2004 in Food and Dairy Technology, he joined advertising as a copywriter. After graduating from the two-year postgraduate degree programme at the AJK MCRC, he began to work as a professional in the Indian film industry.



आकांक्षा तिवारी (Akanksha Tewari, Arya A. Menon)

आकांक्षा तिवारी स्वतंत्र निर्माता और पेशे से लेखक हैं। मूलतः लखनऊ की आकांक्षा ने स्नातकोत्तर की उपाधि एजेके एमसीआरसी, जामिया मिलिया इस्लामिया से हासिल की। यह उनका पहला स्वतंत्र निर्माण है। आर्या ए. मेनन रिमारक्युर में वृत्तचित्र और विज्ञापन निर्माता हैं। वह मुम्बई निवासी हैं।

Akanksha Tewari is an independent producer and a writer by profession. She belongs to Lucknow and has completed her master's in mass communication program from New Delhi's AJK MCRC, Jamia Millia Islamia. This is her first independent production. **Arya A. Menon** is an advertising and documentary producer at Remarquer. She is currently based in Mumbai.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



दारवठा

Daaravtha

निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ
प्रथम गैर-फीचर फिल्म
Best Debut Film of a Director

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 75,000/-

प्रशस्ति (Citation)

सालों पुरानी समाज की बेड़ियों को तोड़ने की
ओर उठाया पहला कदम।

A stepping stone towards reinventing the
age-old shackles of society.

दारवठा | Daaravtha

2015 | मराठी | डिजिटल | रंगीन | 30 मिनट

निर्देशक: निशान्त्रॉय बोम्बारडे निर्माता: निशान्त्रॉय बोम्बारडे छायांकन: हरीश कृष्णन सम्पादक: अनादि अथाले ध्वनि: अंकुर चौधरी संगीत: शांतनु नंदन हर्लेकर

2015 | Marathi | Digital | Colour | 30 minutes

Director: Nishantroy Bombarde Producer: Nishantroy Bombarde Cinematographer: Harish Krishnan Editor: Anadi Athaley Sound: Ankur Chaudhary Music: Shantanu Nandan Herlekar

कथासार (Synopsis)

बड़ा होता पंकज अपनी सेक्सुअलिटी को जानने-समझने की कोशिश कर रहा है। जेंडर भेद से भरे पुरुषसत्तात्मक भारतीय समाज की दी सीखों और स्वयं के शरीर की विपरीत जेंडर जैसा होने की चाह के मध्य वो पिसता जा रहा है। ऐसे में अपनी ही एक सांस्कृतिक थाति उसे भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम उपलब्ध करवाती है।

An adolescent Pankaj is discovering his sexuality. Torn between a patriarchal Indian upbringing full of gender stereotypes and his natural urge to identify with the opposite gender, he finds an opportunity to express his desires within the bounds of cultural ethos.

परिचय (Profile)



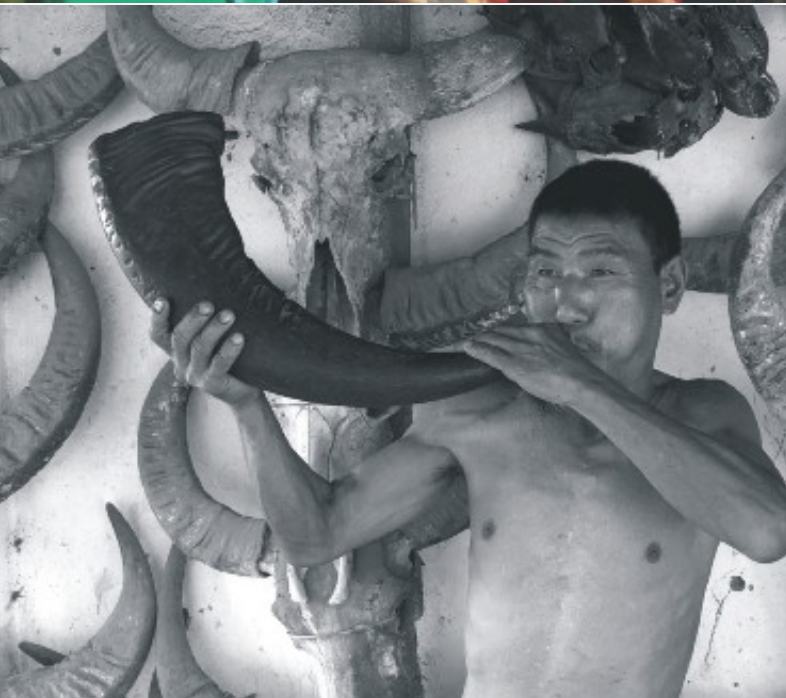
निशान्त्रॉय बोम्बारडे (Nishantroy Bombarde)

जी टीवी के लिए तीन साल तक प्रबंध निर्माता के तौर पर कार्य करते हुए फ़ीयर फ़ाइल्स और यहाँ मैं घर घर खेली जैसे धारावाहिकों का निर्माण करने के बाद निशान्त्रॉय बोम्बारडे एस्सेल विजन के साथ जुड़े। जी स्टूडियोज (एस्सेल विजन) के साथ उन्होंने कई चर्चित मराठी फिल्मों पर काम किया है।

After working for Zee TV for three years as an executive producer on successful shows like *Fear Files* and *Yahaan Main Ghar Ghar Kheli*, **Nishantroy Bombarde** shifted to Essel Vision. At Zee Studios (Essel Vision) he worked on well-known Marathi films.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



ओलेंग Aoleang

सर्वश्रेष्ठ मानवशास्त्रीय /
मानवजातीय फिल्म

Best Anthropological/
Ethnographic Film

रजत कमल
RAJAT KAMAL
₹ 50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

मिट्टी से जुड़े लोगों और उसके इतिहास एवं संस्कारों को बचाने के लिए उसकी जड़ों को सींचने की कोशिश।

Watering the roots to hold onto the ethos and history of the land and its people.

ओलेंग | Aoleang

2015 | अंग्रेजी | डिजिटल | रंगीन | 30 मिनट

निर्देशक: रंजीत राय निर्माता: मौलाना अबुल कलाम आज़ाद इंस्टिट्यूट ऑफ एशियन स्टडीज़ छायांकन: रंजीत राय संपादक: रंजीत राय, राकेश तिवारी कथावाचक: प्रबीर घोष

2015 | English | Digital | Colour | 30 minutes

Director: Ranajit Ray Producer: Maulana Abul Kalam Azad Institute of Asian Studies Cinematographer: Ranajit Ray Editor: Ranajit Ray, Rakesh Tiwari Narrator: Prabir Ghosh

कथासार (Synopsis)

यह फिल्म कोन्याक आदिवासी समूह के इतिहास, उनके ईसाई मतावलंब में संचरण, उनकी पारंपरिक संस्कृति के क्षरण तथा भारत के सुदूर उत्तरपूर्व में पुनः आकार लेती इनकी सांस्कृतिक गतिविधियों का दस्तावेज़ीकरण करती है। उनके खास त्यौहार 'ओलेंग' को बारीकी से चित्रित करती है।

The film documents the history of the Konyak tribe, their conversion to Christianity, their loss of traditional culture and resurgence of cultural activities in a remote corner of north-east India and covers their important 'Aoleang' festival in minute details.

परिचय (Profile)



रंजीत राय (Ranajit Ray)

रंजीत राय ने जाधवपुर विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक किया तथा फिल्म एवं टेलिविज़न संस्थान पूना से डिप्लोमा। उन्हें साल 1981 में बंगाल फिल्म पत्रकार समिति द्वारा सर्वश्रेष्ठ छायांकन का पुरस्कार हासिल हुआ। उन्होंने कई टेलिफ़िल्म तथा टेलिविज़न धारावाहिक बनाए हैं।

Ranajit Ray is a science graduate of Jadavpur University and followed it up with a diploma from the FTII. He won the Bengal Film Journalist Associations award for best cinematography for the year 1981. He has made a number of tele-films and TV serials.



मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (Maulana Abul Kalam Azad)

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद इंस्टिट्यूट ऑफ एशियन स्टडीज़ भारत सरकार, संस्कृति विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा पश्चिम बंगाल सरकार के संयुक्त तत्वावधान में गठित किया गया। यह शोध और अध्ययन का केन्द्र है जहाँ एशिया में उन्नीसवीं सदी के मध्य से हुए सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनैतिक प्रशासन संबंधी परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है।

The Maulana Abul Kalam Azad Institute of Asian Studies was set up at the joint initiative of the Government of India, Department of Culture, Ministry of Human Resource Development and the Government of West Bengal. It is a centre for research and learning with focus on social cultural, economic and political/administrative developments in Asia from the middle of the nineteenth century onwards.

63^{वें}

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



लाइफ इन मैटाफ़र्स: ए पोर्ट्रेट ऑफ गिरीश कासरवल्ली

Life in Metaphors: A Portrait
of Girish Kasaravalli

सर्वश्रेष्ठ जीवनी / ऐतिहासिक
पुनःनिर्माण संकलन फ़िल्म

Best Biographical/
Historical Reconstruction

रजत कमल
RAJAT KAMAL
₹ 50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

जीवन से परे जाती दार्शनिक छवियाँ और विचार ।

Philosophical images of life and beyond.

लाइफ इन मैटाफ़र्स: ए पोर्ट्रेट ऑफ़ गिरीश कासरवल्ली

Life in Metaphors: A Portrait of Girish Kasaravalli

2015 | अंग्रेजी, कन्नड़ | डिजिटल | रंगीन | 85 मिनट

निर्देशक: ओ. पी. श्रीवास्तव निर्माता: उषा श्रीवास्तव (रीलिज़्म फिल्मस) छायांकन: जी एस भास्कर संपादक: मोनीषा बाल्दवा ध्वनि: के. सीथूरामन

2015 | English, Kannada | Digital | Colour | 85 minutes

Director: O.P. Srivastava Producer: Usha Srivastava (Reelism Films) Cinematographer: G.S. Bhaskar Editor: Monisha Baldawa Sound: K. Secthuran

कथासार (Synopsis)

लाइफ इन मैटाफ़र्स अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त फिल्मकार गिरीश कासरवल्ली की सिनेमाई दुनिया की यात्रा है। यहाँ उनके भाषाई व्याकरण तथा सिनेमा माध्यम से कथा को कहने के उद्देश्यों को समझने की कोशिश की गई है।

Life in Metaphors journeys into the world of internationally renowned film-maker Girish Kasaravalli with an urge to understand the language, grammar and the very purpose of storytelling through the medium of cinema.

परिचय (Profile)



ओ.पी. श्रीवास्तव, उषा श्रीवास्तव

(O.P. Srivastava), (Usha Srivastava)

रीलिज़्म फिल्मस का जन्म 2005 में हुआ, जब कॉर्पोरेट जगत में काम करनेवाले कुछ सिनेमाप्रेमी युवाओं ने अपनी नौकरियाँ छोड़कर अपने जुनून को चुना और एक कम बजट की फीचर फिल्म (मिस्ड कॉल) का निर्माण किया। यह निर्माण कंपनी पति-पत्नी **उषा श्रीवास्तव** तथा **लाइफ इन मैटाफ़र्स: ए पोर्ट्रेट ऑफ़ गिरीश कासरवल्ली** के निर्देशक **ओ.पी. श्रीवास्तव** द्वारा शुरू की गई है।

reelismfilms (www.reelismfilms.in) was born in 2005, when a group of young film lovers from the corporate world decided to follow their passion and took up the task of making a low-budget feature film (Missed Call) to test their mettle. The production house was started by the husband and wife team of **Usha Srivastava** and **O.P. Srivastava**, who has directed *Life in Metaphors: A Portrait of Girish Kasaravalli*.

63^{वें}

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



ए फ़ार आफ्टरनून: ए पेंटेड सागा

A Far Afternoon:
A Painted Saga

सर्वश्रेष्ठ कला /
सांस्कृतिक फ़िल्म (साझा)
Best Arts/Cultural Film (shared)

रजत कमल
RAJAT KAMAL
₹ 50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

चित्रपट को जीवनरंगों से भरना, उसे समझना और
आत्मसात करना ।

Breathing life into the canvas to articulate
and assimilate.

ए फ़ार आफ्टरनून: ए पेंटेड सागा | A Far Afternoon: A Painted Saga

2015 | हिन्दी, अंग्रेजी | डिजिटल | रंगीन | 73 मिनट

निर्देशक: श्रुति हरिहर सुब्रमण्यन **निर्माता:** पिरामल आर्ट फाउंडेशन **छायांकन:** अरविंदन जीपीएस **संपादन:** पुलोमा पाल **ध्वनि:** अरविन्द मुरली, जय शंकर अय्यर **संगीत:** अरविन्द शंकर **कथावाचक:** अश्विन राजगोपालन

2015 | Hindi, English | Digital | Colour | 73 minutes

Director: Sruti Harihara Subramanian **Producer:** Piramal Art Foundation **Cinematographer:** Aravindan GPS **Editor:** Puloma Pal **Sound:** Aravind Murali & Jai Shankar Iyer **Music:** Aravind-Shankar **Narrator:** Ashvin Rajagopalan

कथासार (Synopsis)

कृष्ण खन्ना हिन्दुस्तान के सबसे अद्वितीय और प्रभावशाली कलाकारों में शामिल हैं। *ए फ़ार आफ्टरनून* उनकी कला के रचे जाने की रचना प्रक्रिया को दर्ज किए जाने का एक प्रयास है, यहाँ वे अपनी इसी नाम से संबोधित नई रचना के पीछे मौजूद प्रभावों पर बात करते हैं। पांच खंडों में बंटी यह फिल्म उन प्रभावों को समझने का प्रयास करती है जो अन्ततः कैनवास पर अद्वितीय कलाकर्म के रूप में उकरे जाते हैं।

Krishen Khanna is one of India's most prolific and influential artists. *A Far Afternoon* is an attempt to memorialize the artistic process involved in the creation of his artwork, as he describes the influences behind his new artwork by the same name. A film in five parts, the film delves into those influences that eventually rendered themselves on canvas.

परिचय (Profile)



श्रुति हरिहर सुब्रमण्यन (Sruti Harihara Subramanian)

श्रुति हरिहर सुब्रमण्यन मद्रास विश्वविद्यालय से विजुअल कम्युनिकेशन में स्नातक हैं। इसके साथ ही वे दि सिनेमा रिसोर्स सेंटर (टीसीआरसी) की संस्थापक सदस्य भी हैं। यह भारतीय सिनेमा का गैर-लाभकारी सार्वजनिक संग्रहालय है, जिसका इस्तेमाल भारतीय फिल्मों में मौजूद दृश्य-श्रव्य सांस्कृतिक चिह्नों पर आधारित शोध में किया जा सकता है। खासकर दक्षिण की क्षेत्रीय भाषाओं में बनी फिल्मों पर शोध के लिए यह बहुत उपयोगी है।

Sruti Harihara Subramanian is a graduate in visual communication from the University of Madras. She is also the founder trustee of The Cinema Resource Centre (TCRC), a not-for-profit public archive of Indian cinema designed to enable research on the audio-visual cultural artifacts produced by Indian films,

especially those made in the regional languages of south India.



पिरामल आर्ट फाउंडेशन (Piramal Art Foundation)

पिरामल आर्ट फाउंडेशन की स्थापना 2014 में पिरामल परिवार द्वारा की गई। इसका उद्देश्य समकालीन आधुनिक भारतीय कला का संरक्षण है। यह संस्था कलाकर्म का सार्वजनिक प्रदर्शन तथा शोध और शिक्षा के उद्देश्यों से संग्रह, संरक्षण तथा दस्तावेजीकरण करने का कार्य करती है।

The Piramal Art Foundation was founded in 2014 by the Piramal family. The aim of this foundation is to preserve the artistic heritage of modern and contemporary Indian art. The foundation will undertake the collection, preservation and documentation of artworks for public display as well as for research and education.

63^{वें}

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



याज्हपनाम
थेड्चनमूति: म्यूज़िक
बियाँन्ड बाउंड्रीज़

Yazhpanam
Thedchanamoorthy: Music
Beyond Boundaries

सर्वश्रेष्ठ कला /
सांस्कृतिक फ़िल्म (साझा)
Best Arts/Cultural Film (shared)

रजत कमल
RAJAT KAMAL
₹ 50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

तविल वादन की कला को पुनर्जीवित करने के
प्रयास में सीमाओं के पार जाने की कोशिश।

Crossing over the boundaries to resurrect
the art of Tavil.

याज्हपनाम थेड्चनमूति: म्यूज़िक बियॉन्ड बाउंड्रीज़ Yazhpanam Thedchanamoorthy: Music Beyond Boundaries

2015 | तमिल | डिजिटल | रंगीन | 36 मिनट

निर्देशक: अमशान कुमार निर्माता: राजीव आनंद, सिद्धार्थ प्रॉडक्शंस छायांकन: ए. सारंगराजन संपादक: ए. सारंगराजन, अमशान कुमार ध्वनि: गौतम

2015 | Tamil | Digital | Colour | 36 minutes

Director: Amshan Kumar Producer: Rajeev Anand & Siddhartha Productions Cinematographer: A. Sarangarajan Editor: A. Sarangarajan & Amshan Kumar Sound: Gautam

कथासार (Synopsis)

यह वृत्तचित्र महान तमिल विद्वान याज्हपनाम थेड्चनमूति पर आधारित है। भारत और श्रीलंका में आज भी उनके कलाकर्म को याद किया जाता है। एक केन्द्रीय व्यक्तित्व के रूप में उन्होंने अपने संगीत द्वारा दोनों देशों के मध्य दोस्ती के नए तार जोड़े हैं।

This is a documentary on the great Tavid Vidwan Yazhpanam Thedchanamoorthy. To this day they remember his great performances in India and Sri Lanka. As an iconic figure he helped bridge the ties between the two countries through soulful music.

परिचय (Profile)



अमशान कुमार (Amshan Kumar)

अमशान कुमार अब तक पच्चीस से ज्यादा वृत्तचित्रों का निर्माण कर चुके हैं। तमिल भाषा में निर्मित उनकी पहली फीचर फिल्म *ओरुथ्थी* को भारतीय पैनोरमा में स्थान मिला। अमशान कुमार सिनेमा पर लिखते भी हैं। उनकी पुस्तक *सिनेमा रसनाई* तमिल भाषा में फिल्म एप्रीसिएशन की सर्वश्रेष्ठ किताबों में शुमार की जाती है।

Amshan Kumar has made more than twenty-five documentaries. His first feature film in Tamil, *Oruththi*, was shown in the Indian Panorama. Amshan Kumar is also a writer on films. His book *Cinema Rasanai* is considered a pioneering work on film appreciation in Tamil.



राजीव आनंद (Rajeev Anand)

राजीव आनंद इंजिनियरिंग से स्नातक करने के बाद पूरावत्की सिनेमा की दुनिया के हो गए। वे दस से ज्यादा फिल्मों में सहायक के रूप में कार्य कर चुके हैं। वे एक प्रशिक्षित रंगमंच कलाकार हैं और तमिल एवं अंग्रेजी भाषा के कई नाटकों में अभिनय कर चुके हैं।

Rajeev Anand is an engineering graduate who has taken to films full-time. He has worked as an associate for over ten documentaries. A trained theatre actor, he has acted in many plays in Tamil and English.

63^{वें}

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



वीक्स ऑफ़ महेश्वर

Weaves of Maheshwar

सर्वश्रेष्ठ प्रोत्साहन देने वाली फ़िल्म
Best Promotional Film

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

सालों पुरानी रिवायतों के तानेबाने को नवेले धागों से मज़बूत बनाना ।

Strengthening the fabric of age old practices with newer threads.

वीक्स ऑफ महेश्वर | Weaves of Maheshwar

2015 | हिन्दी, अंग्रेजी | रंगीन | 31 मिनट

निर्देशक: केया वासवानी, निधि कामत **निर्माता:** स्टोरीलूम फिल्म्स **छायांकन:** केया वासवानी, निधि कामत **संपादक:** केया वासवानी, निधि कामत
ध्वनि: केया वासवानी **संगीत:** रेंबलिंग लाइब्रेरियन, मैक्रोफॉर्म **कथावाचक:** ओम प्रकाश मुखाति, हेमेन्द्र शर्मा, साली होल्कर, शहीद अंसारी, चांद वारिस अंसारी, जमील अंसारी

2015 | Hindi, English | Colour | 31 minutes

Director: Keya Vaswani & Nidhi Kamath **Producer:** Storyloom Films **Cinematographer:** Keya Vaswani & Nidhi Kamath **Editor:** Keya Vaswani & Nidhi Kamath **Sound:** Keya Vaswani **Music:** Rambling Librarian & Macroform **Narrator:** Om Prakash Mukhati, Hemendra Sharma, Sally Holkar, Shaheed Ansari, Chand Waris Ansari & Jameel Ansari

कथासार (Synopsis)

यह शिल्पकला के पुनः प्रवर्तन की कहानी है। इस वृत्तचित्र की कहानी उन लोगों के इर्द-गिर्द घूमती है जिन्होंने इसे संभव बनाया। एक ऐसी दुनिया में जहाँ मशीन इंसान की जगह लेती जा रही है, भारत दुनिया का अकेला ऐसा देश है जहाँ 90 प्रतिशत हैंडलूम कपड़े का उत्पादन होता है। वृत्तचित्र हमारे टेक्सटाइल उद्योग की इस ताकत और हमारे समृद्ध शिल्पकला क्षेत्र का चित्रण करता है।

This is a story about craft revival. The documentary revolves around various people who have made this change possible. In an era where machines are taking over the world, India is the only country which still produces 90 per cent handloom. The film portrays this strength of Indian textiles and our rich craft sector.

परिचय (Profile)



केया वासवानी, निधि कामत (Keya Vaswani, Nidhi Kamath)

फिल्मकार **केया वासवानी** और **निधि कामत** की उम्र अभी सिर्फ छब्बीस वर्ष है, और इन्होंने मिलकर स्टोरीलूम फिल्म्स की स्थापना की है। वे इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ क्राफ्ट एंड डिजाइन, जयपुर से क्राफ्ट प्रॉडक्ट डिजाइन में स्नातक हैं। उनका डिप्लोमा प्रोजेक्ट एक नौ मिनट की फिल्म थी जिसका शीर्षक था *थ्रेड्स ऑफ बनारस*, और इसी फिल्म ने उन्हें फिल्मकार के रूप में अपने कौशल को निखारने के लिए प्रेरित किया।

Keya Vaswani and **Nidhi Kamath** are twenty-six-year old film-makers and co-founders of Storyloom Films. They graduated from Indian Institute of Crafts and Design, Jaipur, as craft product designers. Their final diploma project, a nine-minute film, *Threads of Banaras*, inspired them to pursue their skills as film-makers.



स्टोरीलूम फिल्म्स (Storyloom Films)

स्टोरीलूम फिल्म्स वर्ष 2013 से भारत के शिल्पकला और विरासत से जुड़े रोचक विषयों पर लघु फिल्में बना रहा है। यह संस्था बंगलौर से अपना काम करती है और रोचक तथा दिल को छू लेने वाली कहानियों को सिनेमा माध्यम द्वारा सुनाने में लगातार सक्रिय है।

Storyloom Films has been making short films since 2013 about various interesting stories in India, mainly related to crafts and heritage of India. The company is based in Bangalore and continues to work to create interesting and heart-warming stories.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



दि मैन व्हू ड्वाफर्ड
दि माउंटेन्स

The Man Who Dwarfed
the Mountains

सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण फिल्म
Best Environment Film

रजत कमल
RAJAT KAMAL
₹ 50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

बेहतर पर्यावास की चाहत में उठाई गई अपील।

An urge to embrace for a better habitat.



दि मैन व्हू ड्वार्फेड दि माउंटेन्स | The Man Who Dwarfed the Mountains

2015 | हिन्दी, अंग्रेजी | डिजिटल | रंगीन | 60 मिनट

निर्देशक: रुचि श्रीवास्तव, सुमित सुन्दरलाल खन्ना निर्माता: राजीव मेहरोत्रा, पीएसबीटी छायांकन: पूजा शर्मा संपादक: तिन्नी मित्रा ध्वनि: गिस्सी माइकल

2015 | Hindi, English | Digital | Colour | 60 minutes

Director: Ruchi Shrivastava & Sumit Sunderlal Khanna Producer: Rajiv Mehrotra & PSBT Cinematographer: Pooja Sharma Editor: Tinni Mitra Sound: Gissy Michael

कथासार (Synopsis)

कभी कभी ही ऐसा होता है कि किसी व्यक्ति के कर्म उसे उस पर्वत से भी ऊंचा बना दें, जिस पर्वत ने उसे बनाया। ऐसे ही एक इंसान हैं चंडी प्रसाद भट्ट जिन्हें आधुनिक भारत का पहला, और संभवतः सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण संरक्षणकर्ता माना जाता है। भट्ट चिपको आन्दोलन के प्रणेता रहे हैं। रामचन्द्र गुहा उनकी गिनती अभी मौजूद सर्वश्रेष्ठ हिन्दुस्तानियों में करते हैं।

Seldom do a man's deeds loom so large that they dwarf the very mountains from where they emanate. One such person is Chandi Prasad Bhatt, the first modern Indian environmentalist, and arguably its greatest. Bhatt was one of the pioneers of Chipko movement. He has been described by Ramchandra Guha as one of the finest Indian alive today.

परिचय (Profile)



रुचि श्रीवास्तव, सुमित खन्ना (Ruchi Shrivastava), (Sumit Khanna)

रुचि श्रीवास्तव ने अपना करियर एक पत्रकार के रूप में शुरू किया और फिर वे टेलिविज़न में मनोरंजन कार्यक्रमों की ओर चली गईं। उन्होंने कई गैर-कथात्मक कार्यक्रमों पर कार्य किया और अब अपने लिए भोजन आधारित कार्यक्रमों के निर्माण में खास पहचान बनाई है। सुमित खन्ना ने सिनेमा में अपना करियर अज़ीज़ मिर्ज़ा और सईद मिर्ज़ा के सहायक के रूप में शुरू किया। 2002 में उन्होंने अपना पहला स्वतंत्र वृत्तचित्र बनाया जिसका विषय था मुम्बई फिल्म उद्योग में कार्यरत सहायक निर्देशकों का जीवन। तब से वे कई वृत्तचित्र, कॉर्पोरेट फिल्म तथा फीचर फिल्मों के लिए प्रोमो का निर्माण कर चुके हैं।

Ruchi Shrivastava started as a journalist and moved to general entertainment in television. She has worked on multiple non-fiction formats and has now created a niche for herself in food media. Sumit Khanna started his film career as an assistant to Aziz Mirza and Saeed Mirza. In 2002, he made his first independent documentary on the lives of assistant directors in the Mumbai film industry. Since then he has made numerous documentaries, corporate films and promos of feature films.



राजीव मेहरोत्रा, पीएसबीटी (Rajiv Mehrotra & PSBT)

राजीव मेहरोत्रा दि पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी, निर्माता तथा निर्माण संपादक हैं। वे 600 से ज्यादा स्वतंत्र वृत्तचित्र फिल्मों का निर्माण और प्रबंधन कर चुके हैं। इन्हें 220 से ज्यादा पुरस्कार हासिल हुए हैं और दुनियाभर में 1200 से ज्यादा फिल्मोत्सवों में प्रदर्शन इनके नाम हैं।

Rajiv Mehrotra is the managing trustee, producer and commissioning editor of The Public Service Broadcasting Trust. He has produced and mentored 600+ independent documentary films. These have won 220+ awards, with 1200+ film festival screenings worldwide.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



गॉड ऑन द एज God on the Edge

सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण फिल्म
Best Environment Film

रजत कमल
RAJAT KAMAL
₹ 50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

मनुष्य और निर्जन के मध्य के अन्तरालों को पुनः
जानने की कोशिश।

Rediscovering the distances between
man and the wild.

गॉड ऑन द एज | God on the Edge

2013 | अंग्रेजी, बंगाली | डिजिटल | रंगीन, श्वेत श्याम | 47 मिनट

निर्देशक: अशोक पटेल निर्माता: शीलवन्त पटेल, एलिमेंट्स पिक्चर स्टूडियो छायांकन: अशोक पटेल संपादक: अशोक पटेल ध्वनि: मून डेका, संगीत: आशुतोष सिंह कथावाचक: ऋषिकेश कन्नन

2013 | English, Bengali | Digital | Colour, Black & White | 47 minutes

Director: Ashok Patel Producer: Sheelwant Patel & Elements Picture Studio Cinematographer: Ashok Patel Editor: Ashok Patel Sound: Moon Deka Music: Ashutosh Singh Narrator: Hrishikesh Kannan

कथासार (Synopsis)

6 दिसंबर 1961 के दिन मोहम्मद जान बक्श ने एक जीवन की दिशा बदल देने वाला फैसला किया, उन्होंने अपनी सारी जिन्दगी हाथियों की सेवा में समर्पित कर दी। उस वक्त वे केवल ग्यारह साल के थे। यह फिल्म उनकी कहानी के साथ-साथ हाथियों के संरक्षण के वृहत्तर सवाल को भी उठाती है।

On 6 December 1961, Mohammed Jaan Baksh made a life-altering choice: to dedicate his life to serving elephants. He was only eleven years old. This film tracks his story with the bigger picture of the battle to preserve elephants.

परिचय (Profile)



अशोक पटेल (Ashok Patel)

अशोक पटेल ने 2000 की शुरुआत में रंगमंच पर अभिनेता के रूप में कार्य शुरू किया और फिर वे फिल्म संपादन की ओर मुड़ गए। महेश भट्ट की विशेष फिल्मों के साथ उन्होंने तीन साल से ज्यादा सहायक संपादक के बतौर कार्य किया। यह निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म है। इससे पहले वे दो लघु फिल्मों का निर्माण कर चुके हैं।

Ashok Patel started off as an actor on stage in early 2000, then moved on to film editing. He worked with Mahesh Bhatt's Vishesh Films as an associate editor for over three years. This is his first film as director. He has produced two short films before this.

एलिमेंट्स पिक्चर स्टूडियो (Elements Picture Studio)

शीलवन्त पटेल एलिमेंट्स पिक्चर स्टूडियो की प्रबंधक हैं और यह फिल्म उनकी एक व्यावसायिक निर्माता के रूप में पहली है। इससे पहले वे व्यक्तिगत स्तर पर दो लघु फिल्मों का निर्माण कर चुकी हैं।

Sheelwant Patel, proprietor of Elements Picture Studio, debuts as a professional producer with this film. He has earlier produced two short films at an individual level.

Elements
Picture Studio

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



ऑटो ड्राइवर

Auto Driver

सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म
Best Film on Social Issues

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

एक साहसिक अभियान का शुभारंभ।

Kick-starting a courageous drive.

ऑटो ड्राइवर | Auto Driver

2015 | मणिपुरी | डिजिटल | रंगीन | 30 मिनट

निर्देशक: लॉगजम मीना देवी निर्माता: आवर विलेज फिल्म्स, इरामीन मीडिया छायांकन: ओइनम डोरेन संपादक: लोइतोंगबाम संगीत: के. टी. फिल्म्स कॉपीराइट

2015 | Manipuri | Digital | Colour | 30 minutes

Director: Longjam Meena Devi Producer: OurVillage Films & Airameen Media Cinematographer: Oinam Doren Editor: Takhellambam Helendro Singh Sound: Sunil Loitongbam Music: K.T. Films Copyright

कथासार (Synopsis)

लाइबी तनावग्रस्त इंफाल शहर में ऑटो चलाती हैं। उन्होंने यह व्यवसाय समाज के सामान्य चलन के विपरीत जाकर अपनाया जिससे वे अपने बीमार पति की सहायता कर सकें और दोनों बच्चों को पढ़ा सकें। ईंट भट्टे में दिहाड़ी मजदूरी से जीवन की शुरुआत करनेवाली लाइबी अब भी भेदभाव झेलती हैं, जब उनके यात्री एक महिला ऑटो ड्राइवर को देख पीछे हट जाते हैं।

Laibi is a lady auto driver in conflict-torn Imphal city. She took up this profession, defying a traditional society, to support an ailing husband and educate her two sons. Starting off as a daily wage labour in a brick farm, she now has to face the discrimination of passengers who shun lady auto drivers.

परिचय (Profile)



लॉगजम मीना देवी (Longjam Meena Devi)

लॉगजम मीना देवी ने प्रतिष्ठित मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज से संचार में स्नातकोत्तर की उपाधि हासिल की है। उनका शोध चर्चित फिल्मकार ए. श्याम शर्मा के कलाकर्म पर था। 2013 से वे दूरदर्शन इंफाल से पटकथा लेखक, कथावाचक तथा साक्षात्कार कर्ता के बतौर अनुबंध पर जुड़ी हुई हैं। यह उनकी पहली फिल्म है।

Longjam Meena Devi has done her master's in communication from the prestigious Madras Christian College. She has done her dissertation on eminent film-maker A. Syam Sharma. Since 2013 she has been working with national broadcaster Doordarshan Imphal as scriptwriter, narrator and interviewer on contract basis. This is her debut film.



आवर विलेज फिल्म्स, इरामीन मीडिया (OurVillage Films & Airameen Media)

ओइनम डोरेन भूतपूर्व टेलिविज़न निर्माता हैं रहे हैं जिन्होंने 2008 में अपनी कंपनी आवर विलेज फिल्म्स की स्थापना की। इरामीन मीडिया इस फिल्म की निर्देशक लॉगजम मीना देवी द्वारा स्थापित है।

Oinam Doren is a former television producer who moved on to form his own company OurVillage Films in 2008. Airameen Media is the brainchild of Longjam Meena Devi, who is also the director of this film.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



पायवाट

Paywat

सर्वश्रेष्ठ शैक्षिक फिल्म
Best Educational Film

रजत कमल
RAJAT KAMAL
₹ 50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

जीत की राह पर चलते हुए।

A walk through on a winning path.

पायवाट | Paywat

2015 | मराठी | डिजिटल | रंगीन | 15 मिनट

निर्देशक: नयना डोलास, मिथुनचंद्र चौधरी निर्माता: मिथुनचंद्र चौधरी छायांकन: कुतुब इनामदार संपादक: वैभव डाभाडे ध्वनि: आशीष खांचने, अमोल भावे

2015 | Marathi | Digital | Colour | 15 minutes

Director: Nayana Dolas & Mithunchandra Chaudhari Producer: Mithunchandra Chaudhari Cinematographer: Kutub Inamdar Editor: Vaibhav Dabhade Sound: Ashish Khachane & Anmol Bhave

कथासार (Synopsis)

अपने दैनंदिन कार्यों को पूरा करने के बाद कामगार परिवार की संतान मायड़ी अपनी स्कूल की ओर प्रस्थान करती है। यह चित्र उनके जीवन के एक दिन को अपने भीतर समेटता है।

After completing her routine chores, Maydi, the daughter of labourers, starts her school journey. A portrait of a day in her life.

परिचय (Profile)



मिथुनचंद्र चौधरी, नयना डोलास (Mithunchandra Chaudhari), (Nayana Dolas)

निर्देशक तथा कवि **मिथुनचंद्र चौधरी** ने अपना मास्टर्स कम्प्यूनिकेशन स्टडीज़, अंग्रेजी साहित्य में किया और पत्रकारिता में डिप्लोमा हासिल किया। वे पुणे और अहमदनगर में जन संचार विभागों का नेतृत्व कर चुके हैं और मुंबई में असिस्टेंट प्रोफेसर के बतौर पढ़ाया है। **नयना डोलास** पुणे में जय वकील स्कूल फॉर चिल्ड्रन इन नीड फॉर स्पेशल केयर की प्रधानाचार्य हैं। समाज कार्य में अपने योगदान के लिए वे कई पुरस्कार जीत चुकी हैं। निर्माता के बतौर यह उनकी पहली फिल्म है।

Director/poet **Mithunchandra Chaudhari** has a master's in communication studies, in English literature and diploma in journalism. He has headed mass media departments in Ahmednagar and Pune and worked as assistant professor in Mumbai. **Nayana Dolas** is headmistress at Jai Vakeel School for Children in Need for Special Care, Pune. She has won many awards for her contribution to social work. This is her first short film as a producer.

63^{वें}

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



ड्रिबलिंग विथ देयर फ़्यूचर

Dribbling With Their Future

सर्वश्रेष्ठ गणवेशा / साहसिक फ़िल्म
Best Exploration/ Adventure Film

रजत कमल
RAJAT KAMAL
₹ 50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

एक असंभाव्य यात्रा पर चलते जाने का मज़बूत
इरादा।

Sporting determination against an uphill
journey.

ड्रिबलिंग विथ देयर फ़्यूचर | Dribbling With Their Future

2015 | अंग्रेजी, कन्नड़, तमिल | डिजिटल | रंगीन | 57 मिनट

निर्देशक: जैकब वर्गीज़ निर्माता: एन. दिनेश राजकुमार, मैथ्यू वर्गीज़ छायांकन: जैकब वर्गीज़, एन. दिनेश राजकुमार संपादक: प्रवीण एस. कथावाचक: करण राव

2015 | English, Kannada, Tamil | Digital | Colour | 57 minutes

Director: Jacob Varghese Producer: N. Dinesh Rajkumar & Mathew Varghese Cinematographer: Jacob Varghese & N. Dinesh Rajkumar Editor: Praveen S. Narrator: Karan Rao

कथासार (Synopsis)

एक वर्ष से कुछ ऊपर की अवधि में फिल्माई गई यह फिल्म भारत में फुटबॉल के तीर्थ बेंगलूर में स्थित 'ऑस्टिन टाउन' की कथा है। इस गंदे और दरिद्र से दिखनेवाले इलाके ने बेंगलूर और देश को इसके कुछ सर्वश्रेष्ठ फुटबॉलर्स दिये हैं। आखिर वो क्या है जो शहर के इस हिस्से को इतना खास बनाता है? यह फिल्म कहानी है कि कैसे आप अपनी परिस्थितियों और उदासीनता से ऊपर उठकर अपने सपनों को हासिल कर सकते हैं।

Shot over a period of one year, the film is set in the football Mecca of Bangalore, 'Austin Town'. This dirty and impoverished little hamlet has given Bangalore and the country some of its best footballers. So, what makes this part of town so special? The documentary is an eloquent narration of how it is possible to rise above circumstances, apathy and achieve your dreams.

परिचय (Profile)



जैकब वर्गीज़ (Jacob Varghese)

निर्देशक/चलचित्रकार जैकब वर्गीज़ ने फिल्म जगत में निर्माता-निर्देशक के बतौर कई फिल्मों में काम किया है। उनकी पहली फिल्म *अंधियुम* ने गैर-फीचर खंड में साल 2008 में निर्देशक की प्रथम फिल्म का 54वाँ राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार हासिल किया था। अब तक वे तीन कन्नड़ फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं।

Director/cinematographer **Jacob Varghese** has worked in the film industry as producer-director on several films. His first film *Andhiyum* won the 54th National Film Award in 2008 as the best debut director in non-feature category. He has directed three Kannada feature films so far.



एन. दिनेश राजकुमार, मैथ्यू वर्गीस (N. Dinesh Kumar & Mathew Varghese)

एन. दिनेश राजकुमार निर्माता के बतौर फिल्म जगत में कई फिल्मों पर कार्य कर चुके हैं। उनकी पहली फिल्म *अंधियुम* को गैर-फीचर खंड में साल 2008 में निर्माता की प्रथम फिल्म का 54वाँ राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला था। वे सीएनएन-आइबीएन के साथ वरिष्ठ पत्रकार और चलचित्रकार के रूप में जुड़े हैं।

मैथ्यू वर्गीस बेंगलूर स्थित एक इंटीरियर डिज़ाईनर हैं, उनकी शुरु से सिनेमा में अभिरुचि रही है। निर्माता के रूप में यह उनकी पहली फिल्म है और वह वृत्तचित्र निर्माण में अपना अधिकांश समय बिताना चाहते हैं जिससे समाज में बदलाव और जागरूकता आ सके।

N. Dinesh Rajkumar has worked in the film industry as producer on several films. His first film *Andhiyum* won the 54th National Film Award in 2008 as the best debut producer in non-feature category. He is also a senior journalist and cinematographer with CNN-IBN.

Mathew Varghese is a Bangalore-based interior designer who was passionate about films. This is his first film as a producer and he has now plans to devote a good part of his time in doing documentaries which can bring an awareness and hopefully can change things in our society for the better.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



तेज़पुर 1962

Tezpur 1962

सर्वश्रेष्ठ खोजपरक फिल्म
Best Investigative Film

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

अनकहे की खोज में समय के धुंधलके में खो जाना ।

Lost in the mist of time - an attempt to trace the untold.

तेज़पुर 1962 | Tezpur 1962

2015 | अंग्रेजी | डिजिटल | रंगीन | 57 मिनट

निर्देशक: समुज्जल कश्यप निर्माता: फिल्म प्रभाग छायांकन: समुज्जल कश्यप, नाहिद अहमद संपादक: समुज्जल कश्यप ध्वनि: समुज्जल कश्यप संगीत: देबाजीत गायन, दिगंत सरमा

2015 | English | Digital | Colour | 57 minutes

Director: Samujjal Kashyap Producer: Films Division Cinematographer: Samujjal Kashyap & Nahid Ahmad Editor: Samujjal Kashyap Sound: Samujjal Kashyap Music: Debajit Gayan & Diganta Sarma

कथासार (Synopsis)

यह वृत्तचित्र भारत-चीन के मध्य 1962 में हुए युद्ध के दौरान तेज़पुर शहर में पैदा हुई परिस्थितियों पर आधारित है। यह उन व्यक्तियों के योगदान को याद करता है जिन्होंने मोर्चा छोड़कर भाग जाने का मौका होते हुए भी वृहत्तर समाज के हित में अपना मोर्चा नहीं छोड़ा।

This documentary is based on the situation that prevailed in Tezpur at the height of the Indo-China War of 1962. It also trails the contribution made by some individuals who despite being tempted to leave guard and flee, held their ground for the greater interest of the people of Tezpur.

परिचय (Profile)



समुज्जल कश्यप (Samujjal Kashyap)

समुज्जल कश्यप गुवाहाटी के रहनेवाले फिल्मकार हैं। वे कई वृत्तचित्र तथा पच्चीस से ज्यादा गानों के वीडियो निर्देशित कर चुके हैं। इसके अलावा वे *रिशंग* (2012) तथा *अपराजिता* (2014) जैसी फीचर फिल्मों भी निर्देशित कर चुके हैं।

Samujjal Kashyap is a film-maker based in Guwahati. He has directed many documentaries and over twenty-five music videos. He has also edited feature films like *Rishang* (2012) and *Aparajita* (2014).



फिल्म प्रभाग (Films Division)

फिल्म प्रभाग की स्थापना 1948 में हुई। पिछले छः दशकों से यह संगठन भारतीय समाज की सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक छवियों को फिल्म पर एकत्रित करने की अनथक कोशिश में लगा है। इसका आर्काइव 8000 से ज़्यादा वृत्तचित्रों, लघु फिल्मों तथा एनिमेशन फिल्मों से समृद्ध है।

The Films Division was established in 1948. For more than six decades, the organization has relentlessly striven to maintain a record of the social, political and cultural imaginations and realities of the country on film. It holds more than 8000 titles on documentaries, short films and animation films in its archives.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



फिशरवुमन एंड टुक टुक

Fisherwoman and Tuktuk

सर्वश्रेष्ठ एनीमेशन फिल्म
Best Animation Film

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

लाइन एवं स्ट्रोकस के माध्यम से एक सपने को साकार करने के लिए।

To dream a dream through lines and strokes.

फिशरवुमन एंड टुक टुक | Fisherwoman And Tuktuk

2015 | मूक | एनिमेशन | रंगीन | 15 मिनट

निर्देशक: सुरेश एरियात **निर्माता:** नीलिमा एरियात, स्टूडियो एक्ससोरस प्रोडक्शंस प्रा. लि. **एनिमेटर:** स्टूडियो एक्ससोरस प्रोडक्शंस प्रा. लि. **संपादक:** टिंटू के फिलिप **ध्वनि:** शालिनी अग्रवाल, सुबीर दास **संगीत:** रजत ढोलकिया **कथावाचक:** चेतन शशिताल

2015 | No Language | Animation | Colour | 15 minutes

Director: Suresh Eriyat **Producer:** Nilima Eriyat & Studio Eeksaurus Productions Pvt. Ltd. **Animator:** Studio Eeksaurus Productions Pvt. Ltd. **Editor:** Tintu K. Philip **Sound:** Shalini Agarwal & Subir Das **Music:** Rajat Dholakia **Narrator:** Chetan Sashital

कथासार (Synopsis)

समन्दर किनारे बसे गाँव की यह कथा एक मछली बेचने वाली महिला और उसकी टुक टुक के मध्य की प्रेम कहानी है। अकेली मछलीवाली अपने सपनों की टुक टुक को अपनी मेहनत से हासिल करती है। यह टुक टुक सिर्फ एक गाड़ी ना रहकर उसकी साझेदार बन जाती है। टुक टुक चलाते हुए मछलीवाली अपने कठिन परिश्रमी सांसारिक जीवन से जैसे परे उड़ जाती है।

A love affair of the fisherwoman and her Tuktuk, set in a coastal village - the story of a lonely fisherwoman who lives her dreams through her hard-earned Tuktuk. Tuktuk becomes more of a partner than a mere material possession for her. Driving around in the Tuktuk releases her from the drudgery of mundane life.

परिचय (Profile)



सुरेश एरियात (Suresh Eriyat)

स्टूडियो एक्ससोरस के संस्थापक एवं रचनात्मक निर्देशक सुरेश एरियात के खाते में 300 से ज्यादा विज्ञापन फिल्मों और 100 से ज्यादा राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार और सम्मान दर्ज हैं। उनके काम को उद्योग की महत्वपूर्ण जगहों पर पहचान मिली है। वे सल्लिओ पुरस्कारों के वर्ष 2007 से ज्यूरी सदस्य हैं, यह पुरस्कार विज्ञापन जगत के ऑस्कर माने जाते हैं।

Founder and creative director of Studio Eeksaurus, **Suresh Eriyat** boasts a portfolio of over 300 ad films, and over 100 national and international awards and recognitions. Suresh's work has been recognised at key industry platforms. He has been on the jury panel of the Clio awards since 2007 which is considered to be the Oscars of advertising.



स्टूडियो एक्ससोरस प्रोडक्शंस प्रा. लि. (Studio Eeksaurus Productions Pvt. Ltd.)

नीलिमा एरियात के पास मीडिया जगत में जरूरी बारीक नजर और खोजी मस्तिष्क दोनों है और इसके बल पर वे एक्ससोरस की आधार स्तम्भ बनी हुई हैं। स्टूडियो में वे इसके निरंतर निर्वाह को सुनिश्चित करते हुए यह भी देखती हैं कि कहीं बैनर की किसी फिल्म से गुणवत्ता के स्तर पर समझौता ना हो।

A fine eye for detail combined with a taste for exploration and creativity in the media space, **Nilima Eriyat** has been the backbone of **Eeksaurus** where she took on the responsibility of sustaining the studio while providing all the support to ensure there is no compromise on the quality of any film from the banner.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



इन सर्च ऑफ़ फ़ेडिंग कैनवास

In Search of Fading
Canvas

निर्णायक मंडल का
विशेष पुरस्कार
Special Jury Award

रजत कमल
RAJAT KAMAL
₹ 50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

समाप्त होते युग के धुंधलाते रंग।

Fading colours of the twilight of an era.

इन सर्च ऑफ़ फ़ेडिंग कैनवास | In Search of Fading Canvas

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 88 मिनट

निर्देशक: मनोहर सिंह बिष्ट निर्माता: फिल्म प्रभाग छायांकन: नागराज रेवानकर संपादक: शमाहेसधूनल ध्वनि: कमलेश द्विवेदी, प्रसन्ना गाडगे

2015 | Hindi | Digital | Colour | 88 minutes

Director: Manohar Singh Bisht Producer: Films Division Cinematographer: Nagraj Revankar Editor: Shamahesdhunal Sound: Kamlesh Diwadi & Prasanna Gadge

कथासार (Synopsis)

आपने कब आखिरी बार हाथ से पेंट किया फिल्म का पोस्टर देखा था? सिनेमा के नए शौकीनों को अपनी पेंटब्रश और रंगों से सिनेमा के पोस्टर और आर्टवर्क बनानेवाले कलाकारों और उनकी मरती कला की शायद ही जानकारी हो। डिजिटल पेंटिंग के आने के साथ ही जिस तरह इन कलाकारों की जिन्दगी बदली है, वो इस फिल्म में बेहतर तरीके से दिखाया गया है।

When did you last see hand-painted billboards of a film? Young Indian cineastes have little knowledge about the traditional but dying art of painters who use brush, colour and storyboard on canvas. The advent of digital printing, the changing life of the artists and their craft are evocatively captured in this film.

परिचय (Profile)



मनोहर सिंह बिष्ट (Manohar Singh Bisht)

मनोहर सिंह बिष्ट फिल्म प्रभाग में एक इंजीनियर के तौर पर बीते बीस वर्षों से कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कई वृत्तचित्रों और लघु फिल्मों का निर्माण किया है।

Manohar Singh Bisht has been working in the Films Division as an engineer for more than twenty years. He has made many documentary and short films.



फिल्म प्रभाग (Films Division)

फिल्म प्रभाग की स्थापना 1948 में हुई। पिछले छः दशकों से यह संगठन भारतीय समाज की सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक छवियों को फिल्म पर एकत्रित करने की अनथक कोशिश में लगा है। इसका आर्काइव 8000 से ज़्यादा वृत्तचित्रों, लघु फिल्मों तथा एनिमेशन फिल्मों से समृद्ध है।

The Films Division was established in 1948. For more than six decades, the organization has relentlessly striven to maintain a record of the social, political and cultural imaginations and realities of the country on film. It holds more than 8000 titles on documentaries, short films and animation films in its archives.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



औषध Aushadh

सर्वश्रेष्ठ लघु कल्पित फिल्म
Best Short Fiction Film

रजत कमल
RAJAT KAMAL
₹ 50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

इंसानियत बचाने की अनथक कोशिश।

An untiring effort to stay humane.

औषध | Aushadh

2015 | मराठी | डिजिटल | रंगीन | 16 मिनट

निर्देशक: अमोल देशमुख निर्माता: प्रगति प्रोडक्शंस छायांकन: मधुराम सोलंकी संपादक: रीमा कौर ध्वनि: पीयुष शाह

2015 | Marathi | Digital | Colour | 16 minutes

Director: Amol Deshmukh Producer: Pragati Productions Cinematographer: Madhuram Solanki Editor: Reema Kaur Sound: Piyush Shah

कथासार (Synopsis)

औषध एक औषधि निर्माता की कथा है, जो अपने अधीन कार्ययत की गलती के चलते होने जा रही जान की हानि को बचाने के लिए तमाम तरह के जतन करता है। जिन्दगी को खतरे में देख संजीवन गलती सुधार की एक अनदेखी राह पर निकल जाता है।

Aushadh is the story of a pharmacist, who goes through a physical and emotional journey to save a life after an innocent mistake is committed by his subordinate. With a life at risk, Sanjeevan sets out on an unforeseen journey to undo a mistake.

परिचय (Profile)



अमोल देशमुख, प्रगति प्रोडक्शंस (Amol Deshmukh, Pragati Productions)

अमोल देशमुख पेशे से दवा विक्रेता हैं। निर्देशन से पहले उन्होंने कुछ लघु फिल्मों और वृत्तचित्र में सहायक के तौर पर काम किया है। उन्होंने अपनी निर्माण संस्था **प्रगति प्रोडक्शंस** के तहत लेखक और निर्देशक के रूप में कुछ लघु फिल्मों का निर्माण किया है।

Amol Abasaheb Deshmukh is a pharmacist by profession. He has been an assistant director for some short fiction films and documentaries before turning writer-director. He has made a couple of short films as a writer, director under his own production house, **Pragati Productions**.



63^{वें}

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



बेस्ट फ्रेंड्स फॉरेवर

Best Friends Forever

पारिवारिक मूल्यों पर
सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म

Best Film on Family Values

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

प्रशस्ति (Citation)

छूटे रिश्तों को दोबारा हासिल करने की
कोशिश।

Reclaiming strained chords.

बेस्ट फ्रेंड्स फॉरएवर | Best Friends Forever

2015 | अंग्रेजी | डिजिटल | रंगीन | 26 मिनट

निर्देशक: संदीप मोदी निर्माता: एडुमीडिया इंडिया प्रा. लि. छायांकन: सुरजोदीप घोष संपादक: नेहा मेहता संगीत: लोरेल डी'सूजा

2015 | English | Digital | Colour | 26 minutes

Director: Sandeep Modi Producer: Edumedia India Pvt. Ltd. Cinematographer: Surjodeep Ghosh Editor: Neha Mehra Music: Lorel D'Souza

कथासार (Synopsis)

मौसमी और उनकी पंद्रह वर्षीय बेटी काव्या एक दूसरे के काफी करीब हैं और अपना बहुत सारा वक्त साथ में गुज़ारती हैं। मौसमी ने अपना जीवन अपनी उच्चारण विकार से ग्रस्त बेटी की शिक्षा में लगा दिया है और अपने लिए वे कम ही समय निकाल पाती हैं। लेकिन कॉलेज में प्रवेश के साथ ही काव्या के लिए एक नई दुनिया का दरवाजा खुल जाता है जिसमें आज़ादी है, नए दोस्त हैं और एक हमउमर लड़का है। मौसमी यहाँ काव्या को अपने फ़ैसले खुद लेने की आज़ादी देती है और अन्ततः अपने लिए जीना शुरू करती है।

Mausumi and her fifteen-year-old daughter Kavya are very close and spend a lot of time in each other's company. Having dedicated her life to keeping up with her stammering daughter's education, Mausumi has had hardly any time for herself. As Kavya enters college, she is drawn into a new world of independence, friends and a boyfriend. Mausumi lets Kavya know that she trusts her and realizes that it is finally time for her to live for herself.

परिचय (Profile)



संदीप मोदी (Sandeep Modi)

संदीप मोदी अपनी मराठी लघु फिल्म *बिल्लोरी* के साथ चर्चा में आए थे, जिसने दूसरे हैदराबाद इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में गोल्डन पर्ल पुरस्कार तथा आईडीपीए पुरस्कार 2007 में बेस्ट स्टूडेंट शॉर्ट फिक्शन का गोल्ड पुरस्कार जीता था। वे प्रतिष्ठित एफटीआईआई, पुणे के विद्यार्थी रहे हैं।

Sandeep Modi came to fore with his Marathi short film *Bilori* that won the Golden Pearl at the 2nd Hyderabad International Film Festival and Gold: Best Student Short Fiction at the IDPA Awards, 2007. He is an alumnus of the prestigious FTII, Pune.



एडुमीडिया (EduMedia)

एडुमीडिया बच्चों की प्रगति में मीडिया तकनीक के प्रगतिशील इस्तेमाल में अग्रणी कंपनी है। एडुमीडिया द्वारा निर्मित बाल फिल्मों तीन राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुकी हैं और तीस से ज्यादा अन्तरराष्ट्रीय फिल्मोत्सवों में दिखाई जा चुकी हैं।

EduMedia is a pioneer in the use of progressive media ventures to enable the holistic growth of children. EduMedia's children's films have won three National Film Awards and have been featured in over thirty prestigious international film festivals.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



कामुकी Kamuki

सर्वश्रेष्ठ निर्देशन

Best Direction

स्वर्ण कमल

SWARNA KAMAL

₹ 1,50,000/-

2015 | मलयालम | डिजिटल | रंगीन | 25 मिनट

निर्देशक: क्रिस्टो टॉमी, निर्माता: सत्यजीत रे फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान, छायांकन: धनेश रवींद्रनाथ संपादक: गौतम नेरुसु, ध्वनि: अनुरूप कुकरेजा, अभिनेता: कृष्णा पद्माकर, मिथुन नलिनी, मोहन कृष्णन, थानकम मोहन, कुंजीला

2015 | Malayalam | Digital | Colour | 25 minutes

Director: Christo Tomy Producer: Satyajit Ray Film & Television Institute Cinematographer: Dhanesh Raveendranath Editor: Goutham Nerusu Sound: Anuroop Kukreja Cast: Krishna Padmakumar, Mithun Nalini, Mohan Krishnan, Thankam Mohan & Kunjila

प्रशस्ति (Citation)

एक युवा महिला के तमाम मुश्किलों का सामना करते हुए अपना आत्मसम्मान कायम रखने की कथा का संवेदनशील चित्रण।

A sensitive portrayal of a young woman's determination to uphold her dignity against odds.

क्रिस्टो टॉमी (Christo Tomy)

क्रिस्टो टॉमी केरल के एक स्वतंत्र फिल्मकार हैं। उन्होंने अपनी स्नातकोत्तर उपाधि फिल्म निर्देशन और पटकथा लेखन में एसआरएफटीआई, कोलकाता से हासिल की है। उन्हें *कान्यका* के लिए 61वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में गैर-फीचर खंड में निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ पहली फिल्म के लिए रजत कमल से सम्मानित किया जा चुका है।

Christo Tomy is an independent film-maker from Kerala. He completed his postgraduate diploma in film direction and screenplay writing from the SRFTI, Kolkata. He won the Rajat Kamal for the best debut film of a director in the non-feature section for the film *Kanyaka* at the 61st National Film Awards.



बनारस: द अनएक्सप्लोर्ड अटैचमेंट्स

Benaras: The Unexplored
Attachments

सर्वश्रेष्ठ छायांकन

Best Cinematography

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | बंगाली | डिजिटल | रंगीन | 8 मिनट

निर्देशक: अमर्त्य भट्टाचार्य निर्माता: राहुल भट्टाचार्य छायांकन: अमर्त्य भट्टाचार्य संपादक: अमर्त्य भट्टाचार्य ध्वनि: अमर्त्य भट्टाचार्य संगीत: किसलय रॉय कथावाचक: अमर्त्य भट्टाचार्य, अमृता चौधरी

2015 | Bengali | Digital | Colour | 8 minutes

Director: Amartya Bhattacharyya Producer: Rahul Bhattacharyya Cinematographer: Amartya Bhattacharyya Editor: Amartya Bhattacharyya Sound: Amartya Bhattacharyya Music: Kisaloy Roy Narrator: Amartya Bhattacharyya, Amrita Chowdhury

प्रशस्ति (Citation)

चित्रमय कविता, जो एक स्थाई छाप छोड़ जाती है।
Poetry of visuals leaving a lasting imprint.

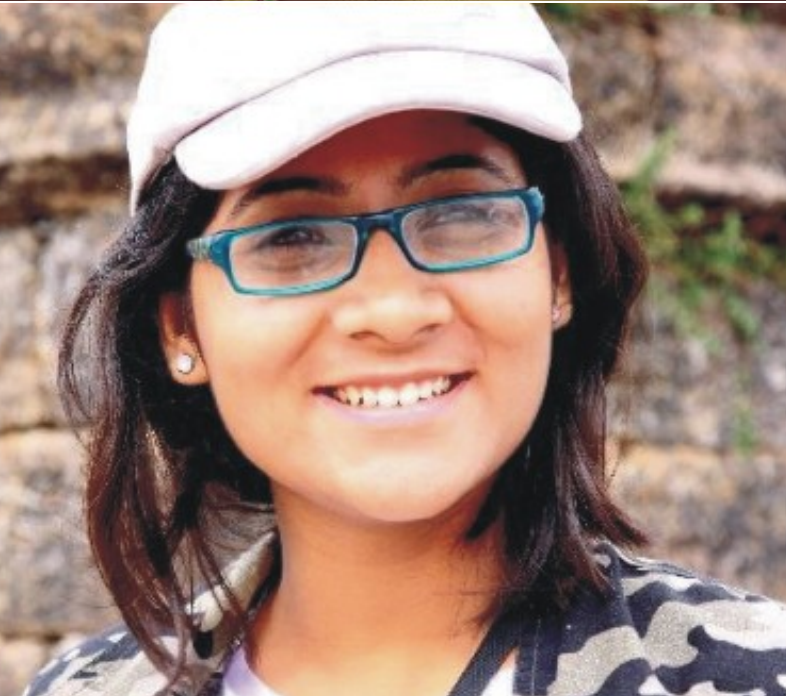
अमर्त्य भट्टाचार्य (Amartya Bhattacharyya's)

अमर्त्य भट्टाचार्य की फिल्म और कविताएं स्याह, अधिकतर स्वप्निल और गंभीर मनोवैज्ञानिक स्वर लिए होती हैं। उनका काव्यात्मक साइको ड्रामा *बोबा मुक्कोश* ने 2013 के व्हाइट स्क्रीन फिल्म फेस्टिवल में सर्वश्रेष्ठ निर्देशक और रोलिंग स्टोन 2013 में सर्वश्रेष्ठ संपादक का पुरस्कार जीता। उनकी पहली फीचर फिल्म *कैपिटल आई* को तीसरे साउथ एशियन अल्टरनेटिव फिल्म फेस्टिवल ऑफ़ पेरिस में प्रतियोगिता खंड में चयनित किया गया।

Amartya Bhattacharyya's films, poems and other works are dark, mostly surreal, and psychoanalytic in nature. His poetic psychodrama *Boba Mukhosh* won the Best Director at White Screen Film Festival 2013 and the Best Editor at Rolling Frames 2013. His debut feature film *Capital I* was officially selected in competition for the 3rd South Asian Alternative Film Festival of Paris in February 2015.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



एडपा काना

Edpa Kana

सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन
Best Audiography

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | कुडुख | डिजिटल | रंगीन | 26 मिनट

निर्देशक: निरंजन कुमार कुजुर निर्माता: संजय पट्टनायक,
एसआरएफटीआई छायांकन: नरेश के. राणा संपादक: अन्नपूर्णा बासु
ध्वनि: मौमिता रॉय संगीत: अनिरुद्ध सिंह

2015 | Kudukh | Digital | Colour | 26 minutes

Director: Niranjan Kumar Kujur Producer: Sanjaya
Pattanayak, SRFTI Cinematographer: Naresh K.Rana
Editor: Annapurna Basu Sound: Moumita Roy Music:
Anirudh Singh

प्रशस्ति (Citation)

नीरवता के मध्य आत्मीय स्वरों की ध्वनि भिन्नताओं को श्रव्य बनाती है।
Soulful sound amidst silence - differences made audible.

मौमिता रॉय (Moumita Roy)

मौमिता रॉय स्वतंत्र साउंड रिकॉर्डिस्ट एवं डिजाइनर हैं। साल 2009 में उन्होंने टेक्नो इंडिया, पश्चिम बंगाल युनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी से संचार विज्ञान में स्नातक की उपाधि हासिल की। स्नातकोत्तर उपाधि एसआरएफटीआई से साउंड रिकॉर्डिंग एवं डिजाइन में हासिल की। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रशिक्षण प्राप्त मौमिता ने विशेष आवाजों को सुनने और पहचानने की कला बहुत पहले ही सीख ली थी और वे परदेसी संगीत को देसज के साथ और शास्त्रीय संगीत को लोकसंगीत के साथ जोड़ने में माहिर हैं।

Moumita Roy is a freelance sound recordist and designer. She graduated in media science from Techno India, West Bengal University of Technology in 2009, and completed her master's from SRFTI in sound recording and design. Trained in basic Hindustani classical music, she developed an ear for distinctive sound early in life and endeavours to combine the exotic with the rustic, the classical with the folk.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015

63^{वें}

आधिकारिक विवरणिका
THE OFFICIAL CATALOGUE

ब्रेकिंग फ्री

Breaking Free

सर्वश्रेष्ठ संपादन

Best Editing

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-



2015 | अंग्रेजी | डिजिटल | रंगीन | 82 मिनट

निर्देशक: श्रीधर रंगायन निर्माता: श्रीधर रंगायन, सागर गुप्ता

छायांकन: शुभ्रांशु दास संपादक: प्रवीण अंगरे, श्रीधर रंगायन ध्वनि:

मधु अप्सरा संगीत: सुरेश एय्यर कथावाचक: श्रीधर रंगायन

2015 | English | Digital | Colour | 82 minutes

Director: Sridhar Rangayan Producer: Sridhar Rangayan,

Saagar Gupta Cinematographer: Subhransu Das Editor:

Pravin Angre, Sridhar Rangayan Sound: Madhu Apsara

Music: Suresh Iyer Narrator: Sridhar Rangayan

प्रशस्ति (Citation)

पीडित के जीवन की चुनौतियाँ सामने लाता कुशल संपादन।

An orchestrated cuts and curves to depict the hardship of the oppressed.



प्रवीण अंगरे, श्रीधर रंगायन

(Pravin Angre, Sridhar Rangayan)

प्रवीण अंगरे नौ साल से ज्यादा का पेशेवर अनुभव रखने वाले प्रख्यात संपादक हैं। उन्होंने *बी ए पास*, *शागिर्द*, *आहिस्ता आहिस्ता* जैसी चर्चित फिल्मों का संपादन किया है। श्रीधर रंगायन पुरस्कार विजेता फिल्मकार, लेखक और निर्माता हैं। भारत के कवीर सिनेमा इतिहास में उनकी पुरस्कार विजेता फिल्में सबसे आगे हैं। यह उनकी एक संपादक के तौर पर पहली फिल्म है।

Pravin Angre is a reputed editor with over nine years of professional working experience. He has edited acclaimed films like *B.A. Pass*, *Shagird*, *Ahista Ahista*, among others. Sridhar Rangayan is an award-winning

film-maker, writer and producer. His award-winning films have been at the forefront of India's emergent queer cinema movement. This is his first film as an editor.

63^{वें}

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



ए फ़ार आफ़्टरनून: ए पेंटेड सागा

A Far Afternoon: A Painted Saga

सर्वश्रेष्ठ संगीत आलेखन
Best Music

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | हिन्दी, अंग्रेजी | डिजिटल | रंगीन | 73 मिनट

निर्देशक: श्रुति हरिहर सुब्रमण्यन निर्माता: पिरामल आर्ट फाउंडेशन
छायांकन: अरविंदन जी.पी.एस. संपादन: पुलोमा पाल ध्वनि: अरविन्द
मुरली, जय शंकर अय्यर संगीत: अरविन्द-शंकर कथावाचक: अश्विन
राजगोपालन

2015 | Hindi, English | Digital | Colour | 73 minutes

Director: Sruti Harihara Subramanian Producer: Piramal Art
Foundation Cinematographer: Aravindan G.P.S. Editor:
Puloma Pal Sound: Aravind Murali, Jai Shankar Iyer Music:
Aravind-Shankar Narrator: Ashvin Rajagopalan

प्रशस्ति (Citation)

कूची से कैनवास पर ज़िन्दगी उतारते हुए बुनी गई ध्वनियों का सुन्दर
सामंजस्य।

Harmony of notes enhancing the brush strokes
breathing life through the canvas.

अरविन्द-शंकर (Aravind-Shankar)

अरविन्द-शंकर संगीतकार हैं और 1997 से साथ काम कर रहे हैं। वे
1000 से ज़्यादा परियोजनाओं पर काम कर चुके हैं जिनमें जिंगल,
कम्प्यूटर गेम्स, साउंड इंस्टॉलमेंट, रंगमंच, फीचर फ़िल्में और गैर
फीचर शामिल हैं। उन्होंने राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फ़िल्मों *साइलेंट स्क्रीम*
(1998) और *ओरुकु नूरुपर* (2001) में संगीत दिया है।

Aravind-Shankar are composers who have been
working together since 1997. They have scored music
for over 1000 projects including jingles, computer
games, sound installations, theatre, feature and non-
feature films. They have composed music for National
Award-winning films *Silent Scream* (1998) and *Ooruku
Nooruper* (2001).

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015

63^{वें}

आधिकारिक विवरणिका
THE OFFICIAL CATALOGUE

माला लाज वाटत नाही

Mala Laj Watat Nahai

सर्वश्रेष्ठ प्रकथन / वॉइस
ओवर (साझा)

Best Narration/Voice-Over (Shared)

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | मराठी, हिन्दी, अंग्रेजी | डिजिटल | रंगीन | 17 मिनट
निर्देशक: दीपक हाल्दनकर निर्माता: ध्रुवी हाल्दनकर, फिल्मस्मिथस
छायांकन: दीपक हाल्दनकर संपादक: ए. श्रीष, डी. महेश
कथावाचक: हरीश भिमानी

2015 | Marathi, Hindi, English | Digital | Colour | 17
minutes

Director: Deepak Haldankar **Producer:** Dhruvee Haldankar,
FilmSmith's **Cinematographer:** Deepak Haldankar **Editor:** A.
Shrish, D. Mahesh **Narrator:** Harish Bhimani

प्रशस्ति (Citation)

कथानक का समृद्ध पार्श्व स्वर वंचित की पीड़ा को रेखांकित करता है।
The rich baritone of the narrative underlines the plight of
the underprivileged.

हरीश भिमानी (Harish Bhimani)

वे संभवतः भारत की सबसे पहचानी जाने वाली आवाज़ हैं। हरीश
भिमानी, महाभारत के 'समय' की आवाज़, के नाम 20,000 से ज्यादा
रिकॉर्डिंग्स दर्ज हैं। उन्होंने तकरीबन हर शैली की रिकॉर्डिंग्स पर हाथ
आजमाया है – स्मारकों के लिए ध्वनि और प्रकाश शो, इन-फ्लाइट
उद्घोषणाएं, तारामंडल, वृत्तचित्र, कॉर्पोरेट वीडियो, टीवी प्रोमो और
रेडियो विज्ञापनों के लिए उन्होंने अपनी आवाज़ दी है।

Arguably, the most recognizable spoken voice of India,
Harish Bhimani, the voice of Mahabharat's Samay, is a
veteran of some 20,000 recordings. He straddles all
possible genres of voice recordings: light-and-sound
shows at monuments, in-flight announcements,
planetariums, documentaries, corporate videos, TV
show promos, radio and TV commercials.



63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



अरंगिले नित्या विस्मयम गुरु चेमंचेरीं कुन्हीरमण नायर

Arangile Nithya Vismayam Guru
Chemancherry Kunhiraman Nair

सर्वश्रेष्ठ प्रकथन / वॉइस
ओवर (साझा)

Best Narration/Voice-Over (Shared)

रजत कमल

RAJAT KAMAL

₹ 50,000/-

2015 | मलयालम | डिजिटल | रंगीन | 30 मिनट

निर्देशक: वात्तपरा रामचंद्रन, पी. के. राधाकृष्णन निर्माता: पी. प्रेमराजन छायांकन: सुनील कन्नूर संपादक: जयचन्द्र कृष्ण ध्वनि: राजीव कलाभवन संगीत: दीपनकुरन कथावाचक: प्रो. अलियार

2015 | Malayalam | Digital | Colour | 30 minutes

Director: Vattapara Ramchandran, P. K. Radhakrishnan

Producer: P. Premarajan Cinematographer: Sunil Kannur

Editor: Jayachandra Krishna Sound: Rajeev Kalabhavan

Music: Deepankuran Narrator: Prof. Aliyar

प्रशस्ति (Citation)

समृद्ध ऐतिहासिक संदर्भ लिए कलात्मक पार्श्व स्वर इस जीवित किंवदंती के कथानक को और भी असरदार बना देता है।

The rich history of voice artistry enhancing the narrative of a living legend.

प्रो. अलियार (Prof. Aliyar)

प्रो. अलियार बीते तीस सालों से केरल के विभिन्न कॉलेजों में मलयालम के प्रोफेसर पद पर कार्य करते रहे हैं। उन्होंने 75 से ज़्यादा फिल्मों में अभिनय भी किया है। वे कई राज्य पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं।

Prof. Aliyar has been a professor of Malayalam in various colleges of Kerala for over thirty years. He has acted in over seventy-five films. He is a recipient of various state awards.

दि केमेलीऑन

The Chameleon

विशेष उल्लेख

Special Mention

प्रशस्ति पत्र

CERTIFICATE

2015 | अंग्रेजी, हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 30 मिनट
निर्देशक: अरुण शंकर निर्माता: ओम प्रॉडक्शन्स (बेलोव एन झावेरी)
छायांकन: ललित साहू संपादक: बंटीनेगी ध्वनि: सुबीर दास संगीत:
असलम केई कथावाचक: अरुण शंकर

2015 | English, Hindi | Digital | Colour | 30 minutes
Director: Arun Shankar Producer: Belove N. Jhaveri
Cinematographer: Lalit Sahoo Editor: Buntynagi Sound:
Subir Das Music: Aslam Keyi Narrator: Arun Shankar

प्रशस्ति (Citation)

एक विकृत मस्तिष्क की उधेड़बुन।

The twists and turns of a distorted mind.

अरुण शंकर (Arun Shankar)

अरुण शंकर ने हिन्दी रंगमंच पर अपना करियर बतौर अभिनेता शुरू किया था और आगे चलकर वे विज्ञापन फिल्मों में मॉडल के रूप में कार्य करने लगे। फीचर फिल्मों की दुनिया में उन्हें पहला बड़ा मौका मलयालम फिल्म *कैमल सफारी* के साथ मिला, जिसके निर्देशक जयराज थे।

Arun Shankar started his career in Hindi theatre as an actor, and subsequently went on to work as a model in advertisements. His big break in feature films as an actor happened in the Malayalam film *Camel Safari*, directed by Jayaraj.



63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



अम्मा

Amma

विशेष उल्लेख

Special Mention

प्रशस्ति पत्र CERTIFICATE

2015 | मलयालम | डिजिटल | रंगीन | 37 मिनट

निर्देशक: नीलन निर्माता: लीला के. एन. छायांकन: शेहंद जलाल
संपादक: अजिथ कुमारा ध्वनि: कृष्णकुमार, चित्रांजलि स्टूडियो

2015 | Malayalam | Digital | Colour | 37 minutes

Director: Neelan Producer: Leela K.N. Cinematographer:
Shehanad Jalal Editor: Ajith Kumara Sound: Krishnakumar,
Chitranjali Studio

प्रशस्ति (Citation)

संघर्ष के एक युग का समृद्ध चित्रांकन, जिसे कथानायक की नज़र से देखा गया है।

The rich tapestry of an era of struggle seen through the eyes of the protagonist.

नीलन (Neelan)

चर्चित अभिनेता, कवि, नाटककार और सामाजिक कार्यकर्ता प्रेमजी के सुपुत्र **नीलन** केरल के सबसे सम्मानित पत्रकारों में से हैं। उन्हें इस पेशे में 46 से ज़्यादा साल हो चुके हैं। उन्होंने टेलिविज़न के लिए कई वृत्तचित्रों का निर्माण किया जिनमें से दो ने राज्य पुरस्कार हासिल किए। सत्तर और अस्सी के दशक में वे राज्य में फिल्म सोसाइटी आन्दोलन में भी बहुत सक्रिय रहे।

Son of the famous actor, poet, playwright and social reformer Premji, **Neelan** is one of the most senior journalists in Kerala, having being in the profession for the last forty-six years. He has made many documentaries for television of which two won state awards for the best television documentaries. He was active in the film society movement in the state during the 1970s and 1980s.

स्याही

Syaahi

विशेष उल्लेख

Special Mention

प्रशस्ति पत्र
CERTIFICATE

2015 | हिन्दी | डिजिटल | रंगीन | 30 मिनट

निर्देशक: वरुण टंडन निर्माता: रजनीश डेकू छायांकन: यशवीर सिंह
संपादक: अमितेश मुखर्जी ध्वनि: विनायक भोकरे संगीत: सोमेश साहा

2015 | Hindi | Digital | Colour | 30 minutes

Director: Varun Tandon Producer: Rajneesh Deku
Cinematographer: Yashveer Singh Editor: Amitesh Mukherjee Sound: Vinayak Bhokre Music: Somesh Saha

प्रशस्ति (Citation)

एक भोले तरुण मस्तिष्क की नज़र से महसूस की गई संवेदनाएं और भाव।

Conglomeration of sense and sensibilities depicted through the innocence of a young mind.

वरुण टंडन (Varun Tandon)

कक्षा की आखिरी कतारों में बैठे और हमेशा फिल्मों के बारे में सोचते रहने वाले वरुण टंडन ने साल 2008 में सेंट जेवियर्स कॉलेज में 'क्या बात है प्रॉडक्शन्स' की स्थापना की। तीन साल की अवधि में उन्होंने 15 से ज्यादा लघु फिल्में बना डालीं। इसके अलावा उन्होंने गोदरेज इंडिया, टेड एक्स, इंडिया आर्ट कलेक्टिव तथा कई स्टार्टअप और एनजीओ के लिए अनुबंध पर कार्य भी किया।

Sitting on the last benches and thinking about films all the time, Varun Tandon co-founded Kya Baat Hai Productions in St. Xavier's College, Mumbai in 2008. He ended up making more than fifteen short films in over three years. He has also taken on commissioned work for Godrej India, TedX, India Art Collective as well as many startups and NGOs.



कथासार (Synopses)

कामुकी (Kamuki)

सत्रह साल की स्कूली छात्रा दिव्या को अचानक समझ आता है कि वो गर्भवती है। वो अपने बॉयफ्रेंड से दूर हो चुकी है। अपने परिवार और स्कूल के बंधनों की परवाह ना करते हुए वो उसे ढूँढने और वापस पाने के सफर पर निकल जाती है।

Divya, a seventeen-year-old schoolgirl, realizes that she is pregnant. She is estranged from her boyfriend. Disregarding her family and school obligations she sets out to find and claim him back.

बनारस: दि अनएक्सप्लोर्ड अटैचमेंट्स (Benaras: The Unexplored Attachments)

यह फिल्म पुरातन शहर बनारस पर आधारित है। बनारस, जिसे हिन्दू धर्म की सात पवित्र नगरियों में सबसे पवित्र माना गया। यह दुनिया का सबसे पुराना इंसानी बसावट वाला शहर भी कहा जाता है और विश्वभर से पर्यटकों और घुमक्कड़ यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहाँ फिल्म के कल्पना लोक में शहर को एक स्त्री प्रेमिका मानकर उसे एक युवा प्रेमी की नजर से देखा गया है। प्रेमी जो उससे मिलने, उसकी खोज में उसके पास आता है।

This is a film on the ancient city of Varanasi, the holiest of the seven sacred cities in Hinduism. It is one of the oldest inhabited cities in the world and attracts tourists and travellers from round the world. The treatment is fictional, where the city is juxtaposed as a lady love, as seen from the perspective of a young lover who comes to meet her and explore her.

एडपा काना (Edpa Kana)

अशोक अपने गांव एक इरादे के साथ वापस लौटता है। लेकिन घर आकर उसे पता चलता है कि उनके माता-पिता ने उसके लिए दुल्हन चुन ली है। गांव के रूढ़िवादी समाज और शहर की तरक्कीपसन्द जीवनशैली के मध्य वो उलझ जाता है और अपने मन की बात नहीं कह पाता।

Ashok goes back to his village with an agenda. At home he discovers that his parents have chosen a bride for him. Caught between the dual realities of orthodox village life and his progressive city life he struggles to speak his mind.

ब्रेकिंग फ्री (Breaking Free)

ब्रेकिंग फ्री भारतीय एलजीबीटीक्यू समुदाय के लोगों द्वारा न्याय और बराबरी के लिए जारी संघर्षों और इतिहास का दस्तावेजीकरण करती है। यह फिल्म एलजीबीटी समुदाय के लोगों को होने वाली परेशानी की ओर लोगों को जागरूक बनाती है। परेशानी की वजह वो अंग्रेजों द्वारा लागू किया गया कानून है जिसका इस्तेमाल कर गे, लेस्बियन तथा ट्रांसजेंडर लोगों को प्रताड़ित और ब्लैकमेल किया जाता रहा है।

Breaking Free chronicles the history and the struggles of the Indian LGBTQ rights movement for justice and equality. The film attempts to create awareness about the problems faced by the LGBT community because of a law that was brought in by the British, which has been misused to torture, blackmail and harass gay, lesbian and transgender persons.

ए फार आफ्टरनून: ए पेंटेड सागा (A Far Afternoon: A Painted Saga)

कृष्ण खन्ना हिन्दुस्तान के सबसे अद्वितीय और प्रभावशाली कलाकारों में शामिल हैं। ए फार आफ्टरनून उनकी कला के रचे जाने की रचना प्रक्रिया को दर्ज किए जाने का एक प्रयास है, यहाँ वे अपनी इसी नाम से संबोधित नई रचना के पीछे मौजूद प्रभावों पर बात करते हैं। पांच खंडों में बंटी यह फिल्म उन प्रभावों को समझने का प्रयास करती है जो अन्ततः कैनवास पर अद्वितीय कलाकर्म के रूप में उकेरे जाते हैं।

Krishen Khanna is one of India's most prolific and influential artists. *A Far Afternoon* is an attempt to memorialize the artistic process involved in the creation of his artwork, as he describes the influences behind his new artwork by the same name. A film in five parts, the film delves into those influences that eventually rendered themselves on canvas.

माला लाज वाटत नाही (Mala Laj Watat Nahai)

यह फिल्म किसी भी महानगर में सार्वजनिक शौचालयों की जरूरत, खासकर महिलाओं के लिए, को रेखांकित करती है। खारडंडा, मुम्बई की महिलाएं परेशान हैं। उन्हें नित्य जैविक कर्म के लिए भी समन्दर किनारे समूह में घंटों ज्वार के उतरने का इन्तजार करना पड़ता है। खारडंडा एक आलीशान रिहाइश है जहाँ बगीचे, कुत्तों के घूमने के लिए बगीचे, शतरंज के लिए बगीचों में मेजे और भागने के लिए पथ बने हैं। लेकिन वहीं बीते आठ सालों से रहने वालों के लिए एक भी शौचालय नहीं।

This is a film on the need of toilets by women in particular in any metropolis. Women in Khar-Danda, Mumbai, are suffering. They have to wait for hours together at the seafont for the low tide to ease themselves. Khar-Danda is a posh locality with parks for dogs, gardens, tables for playing chess, jogging tracks, etc., but there are no toilets for the residents who have been living there for the last eight years.

अरंगिले नित्या विस्मयम गुरु चेमचैरी कुन्हीरमण नायर (Arangile Nithya Vismayam Guru Chemancherry Kunhiraman Nair)

यह फिल्म रंगमंच के जादूगर और सम्मानित नर्तक गुरु चेमचैरी कुन्हीरमण नायर का जीवन चित्र है। आज उनकी उम्र 100 साल से ज्यादा है लेकिन वे अब भी कथकली नृत्य के क्षेत्र में सक्रिय हैं। इसके अलावा वे भरतनाट्यम, मोहिनीअट्टम जैसे पारम्परिक नृत्य शैलियों के भी चर्चित नर्तक रहे हैं। यह वृत्तचित्र उनके उल्लेखनीय जीवन का दस्तावेजीकरण सरीखा है।

This film paints a portrait of the wonder wizard of the stage, Guru Chemancheri Kunhiraman Nair, a well-known dancer. He is now 100 years old and yet is an active Kathakali performer even now. He is also an eminent traditional dancer especially Bharatanatyam, Mohiniyattam, etc. This documentary documents his remarkable life.

दि केमेलीऑन (The Chameleon)

यह कहानी है एक दो व्यक्तित्वों वाले इंसान की जो भावनाओं के समन्दर में गोते खा रहा है। वो अपनी प्रेमिका के साथ लिव-इन में रहता है और उसके पास मल्टीनेशनल में शानदार नौकरी है, याने जिन्दगी एकदम सही जा रही है। लेकिन एक दिन अचानक वो कुछ अलग सा महसूस करता है और अपनी इस जिन्दगी को बदल डालता है। इसके आगे है एक रोमांचकारी कहानी जिसमें कई उतार-चढ़ाव हैं और एक अप्रत्याशित क्लाइमैक्स।

A story of a bipolar man who goes through various shades of emotions. He is in a live-in relationship with his loving girlfriend, has a great job in a MNC, life seems to be perfect for him. When suddenly one day he feels differently in a split of a second and decides to change his life, what awaits is a plot of breath-taking twists and turns with an unexpected climax.

अम्मा (Amma)

यह फिल्म एक सदी लम्बा जीवन देखने वाली स्त्री का एकालाप है। यह एकालाप उन सामाजिक-राजनैतिक परिवर्तनों के बारे में बताता है जो स्त्री ने इस शताब्दी लम्बी यात्रा में देखे, और इस यात्रा में स्वयं उसने भी सक्रिय भूमिका अदा की।

The film is a monologue of a woman who has lived through almost a century. The monologue reveals the socio-political changes that occurred around her during this century in which she too played an active role herself.

स्याही (Syahi)

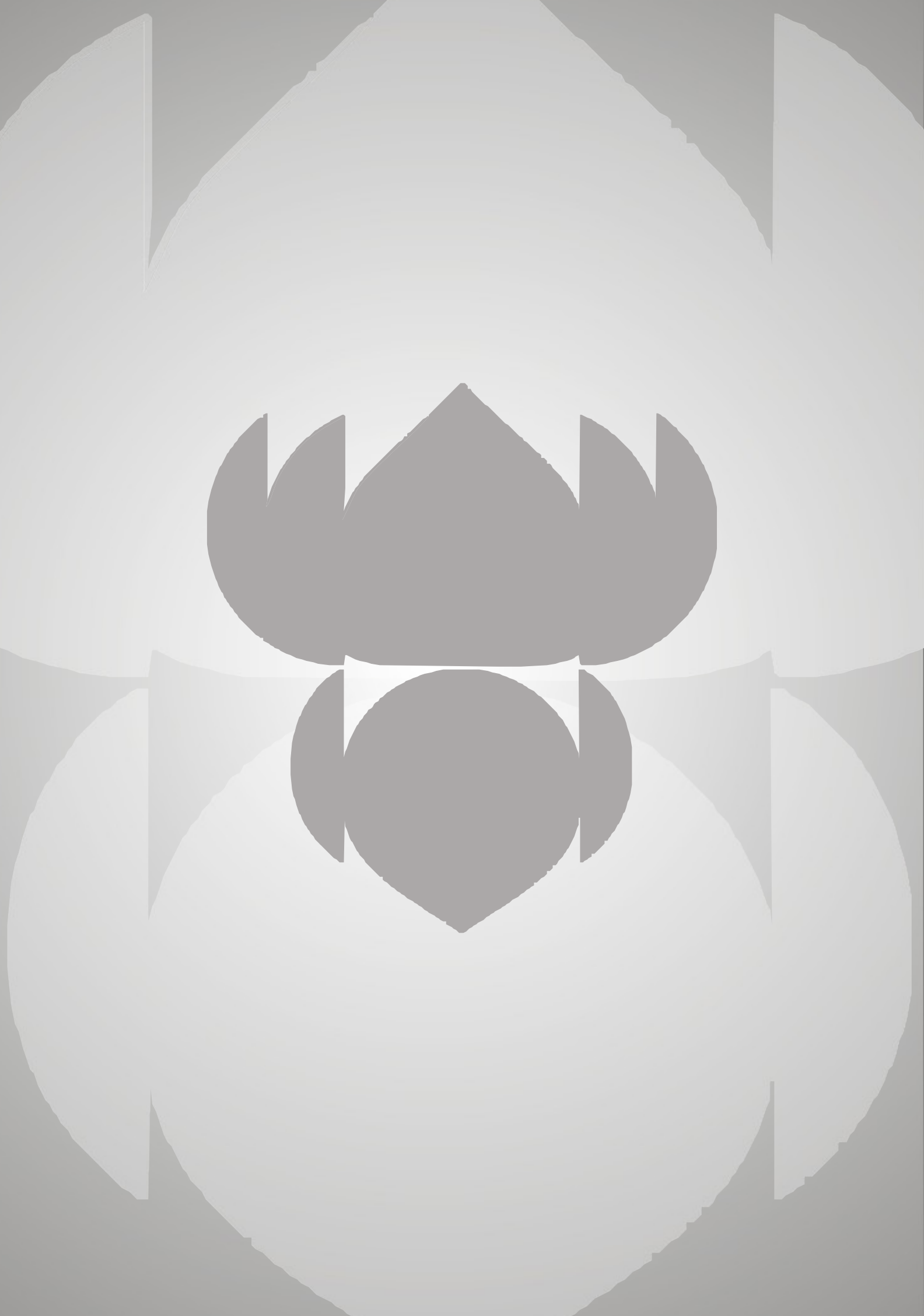
एक तरुण लड़का, एक शांत पहाड़ी कस्बा। और जो कुछ गलत हो सकता है, वो होता है। यह एक तरुण लड़के की खुद को जानने की कहानी है, जिसमें बचपन की कुछ नितान्त सरल घटनाएँ हैं जो कभी ना भूलनेवाला प्रभाव छोड़ जाती हैं।

A young boy. A quaint hilly town. Everything that can go wrong will go wrong. A coming-of-age story of a young boy, portraying some seemingly simple events of childhood, which leave a lasting impression and alter one's being.

63^{वें}

आधिकारिक विवरणिका
THE OFFICIAL CATALOGUE





सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन

BEST WRITING ON CINEMA

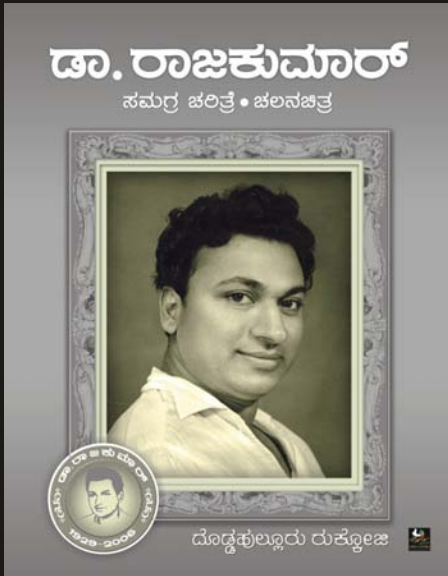
63^{वें}
राष्ट्रीय
फ़िल्म
पुरस्कार
2015
NATIONAL FILM
AWARDS 2015

पुस्तकों, लेखों एवं समीक्षा के माध्यम से सिनेमा का एक कला के रूप में मूल्यांकन करने के लिए यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

The awards aim at encouraging study and appreciation of cinema as an art form and dissemination of information and critical appreciation of this art form through publication of books, articles, reviews etc.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



डॉ. राजकुमार समग्र चरित्र

Dr. Rajkumar Samagra Charithre

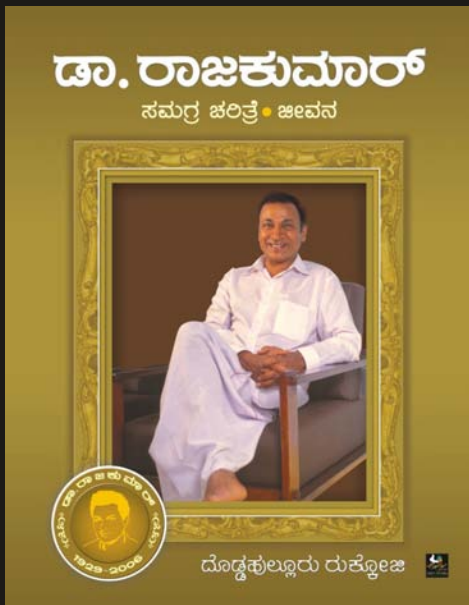
सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक
Best Book on Cinema

स्वर्ण कमल
SWARNA KAMAL
₹ 75,000/-

प्रशस्ति (Citation)

डोड्डाहुल्लरु रुक्कोजी का कार्य भारतीय सिनेमा के चमकते सितारों में से एक डॉ. राजकुमार के जीवन और रचनाकर्म का विश्वकोषीय दस्तावेजीकरण है। पन्द्रह साल के गहन शोध के बाद लिखी गई यह दो खंडों वाली पुस्तक शोधकर्ताओं, विद्यार्थियों और सिनेप्रेमियों के लिए मूल्यवान दस्तावेज़ है और रहेगी।

Doddahulluru Rukkoji's work is an encyclopaedic study into the life and career of one of India's greatest screen legends Dr Rajkumar. The fifteen-year research behind the writing of this double volume makes it a valuable resource for scholars, students and cinephiles of today and tomorrow.



डॉ. राजकुमार समग्र चरित्र | Dr. Rajkumar Samagra Charithre

पुस्तक परिचय (About the Book)

जीवनियों की दुनिया में एक अपूर्व उपलब्धि, अभिनेता, गायक, रंगमंचीय हस्ती डॉ. राजकुमार पर हुआ यह कार्य कई किस्म के कीर्तिमान स्थापित करनेवाला है। दो खंडों में रचित यह पुस्तक 2148 पृष्ठों में फैली है और 8,000 से ज्यादा तस्वीरों की साक्षी है। यह एक अद्भुत व्यक्तित्व और उसके सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को समर्पित और ईमानदार श्रद्धांजलि है। एक ऐसे इंसान को सलाम जिसने एक आधुनिक माध्यम का इस्तेमाल करते हुए सांस्कृतिक इतिहास में सदियों से चली आती पारम्परिक भाषाई संस्कृति की धारा ही बदल दी।

A unique endeavour in the domain of biographies, this work on Dr Rajkumar, actor, singer, theatre personality, creates a record of sorts. Its two volumes run into 2148 pages with more than 8,000 photographs. A committed and sincere tribute to an amazing personality and his cultural environs. A fitting tribute to a man who changed the course of the cultural history of a long and traditional linguistic civilization through a modern medium.

लेखक परिचय (About the Author)



डोड्डाहुल्लुरु रुक्कोजी (Doddahulluru Rukkoji)

डोड्डाहुल्लुरु रुक्कोजी समर्पित और प्रयोगशील सिने पत्रकार तथा आलोचक हैं। उनका सिनेमा और कन्नड़ भाषा के प्रति लगाव इस पुस्तक से जाहिर होता है। इस महति कार्य के लिए उन्होंने सामग्री का संग्रह 1993 से ही शुरू कर दिया था और बीते बाईस सालों के संरक्षण और समर्पण के बाद उन्होंने यह कार्य अकेले दम पर सम्पन्न किया है।

Doddahulluru Rukkoji is a committed and innovative film journalist and critic. His commitment to cinema and Kannada language is evident from this book. He started collecting material for this masterly researched work in 1993 and singlehandedly accomplished his dream and mission after twenty-two years of

perseverance and dedication.



प्रीति पुस्तक प्रकाशन (Preeti Pustaka Prakashana)

प्रीति पुस्तक प्रकाशन बेंगलोर स्थित एक प्रकाशन संस्थान है।

Preeti Pustaka Prakashana is a Bangalore-based publication house.

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



मेघचन्द्र कोंगबम
Meghachandra Kongbam

सर्वश्रेष्ठ फिल्म समीक्षक
Best Film Critic

स्वर्ण कमल
SWARNA KAMAL
₹ 75,000/-

प्रशस्ति (Citation)

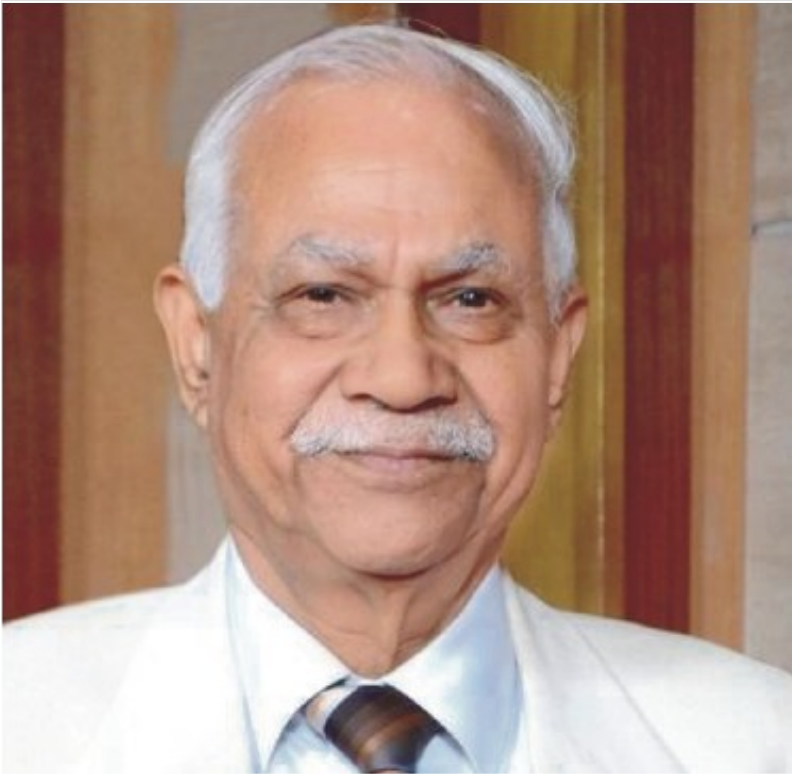
मेघचंद्र कोंगबम अपने लेखन से मणिपुरी पाठकों के लिए भारतीय सिनेमा का विवेचन करते हैं। उनका बोधगम्य भाषाई कौशल तथा सिनेमा के प्रति प्यार उन्हें मणिपुर के लोगों के लिए आदर्श 'फिल्म समीक्षक' बना देता है, एक ऐसे प्रदेश में जहाँ भारतीय सिनेमा तक पहुँच आज भी सीमित है।

Meghachandra Kongbam interprets the world of Indian cinema for his readers in Manipuri. His lucid understanding and love for cinema makes him the ideal 'Film Whisperer' in Manipur, where access to Indian films is often limited.

मेघचन्द्र कोंगबम (Meghachandra Kongbam)

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से 1979 में पत्रकारिता की उपाधि लेने के पश्चात **मेघचन्द्र कोंगबम** ने 1985 में फिल्म और टेलिविज़न संस्थान, पुणे से फिल्म एप्रिसिएशन कोर्स किया। इसके बाद वे मणिपुर के अग्रणी अखबारों और पत्रिकाओं में सिनेमा पर आलेख और स्तम्भ लिखने लगे। आजकल वे मणिपुर के अग्रणी अखबार *पोकनाफाम डेली* में सिनेमा पर नियमित स्तम्भ लेखन करते हैं। मणिपुर के फिल्म जर्नलिस्ट एंड क्रिटिक्स एसोसिएशन के संस्थापक सदस्य, उन्होंने ही मणिपुर सरकार की ओर से मणिपुरी फिल्म पॉलिसी का मसौदा तैयार किया है।

After obtaining a postgraduate degree in journalism from Banaras Hindu University in 1979 and attending the film appreciation course in FTII in 1985, **Meghachandra Kongbam** plunged into writing on cinema as film columnist in leading newspapers and journals of Manipur. He is now a regular film columnist of the leading Manipuri newspaper, *Poknapham Daily*. Founder Member of Manipur Film Journalists and Critics Association, he drafted the Manipuri Film Policy on behalf of the Government of Manipur.

63^{वें}राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015

सतीश चोपड़ा

Satish Chopra

विशेष उल्लेख

Special Mention

फॉरगॉटन मास्टर्स ऑफ़

हिन्दी सिनेमा

Forgotten Masters of Hindi Cinema

प्रशस्ति पत्र

CERTIFICATE

प्रशस्ति (Citation)

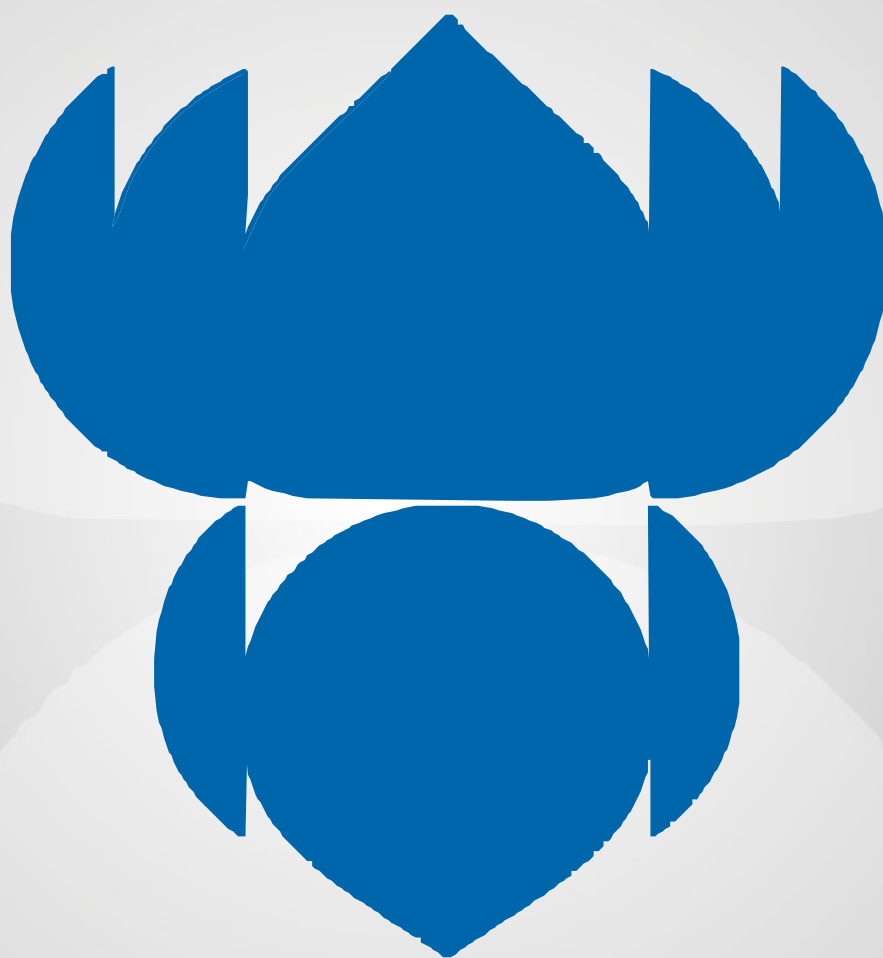
सतीश चोपड़ा की यह पुस्तक गहरे लगाव और किस्से कहानियों से भरी है और हिन्दी फिल्म संगीत के शुरुआती फनकारों से हमारा परिचय करवाती है। एक समर्पित संगीतप्रेमी के नज़रिए से लिखी गई यह किताब पढ़नेवाले को दोबारा उन पुराने क्लासिक्स के मोह में बांध लेती है।

Satish Chopra's book is an anecdotal and affectionate insight that brings to life the early maestros of Hindi film music. Written from the perspective of a lifelong music lover, its effervescence engages and makes one fall in love with the classics again.

सतीश चोपड़ा (Satish Chopra)

सतीश चोपड़ा सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया में सैंतीस साल से विभिन्न प्रबंधकीय भूमिकाओं में अपनी सेवाएं देते रहे हैं। वे संगीत के अनन्य प्रेमी हैं और साहित्य, कला और सीखने-सिखाने के प्रति सदा समर्पित। वे दिल्ली में रहते हैं।

Satish Chopra served Central Bank of India for thirty-seven years in different managerial capacities. He is an ardent lover of music and zealous devotee of literature, art and learning. He lives in Delhi.



फ़िल्म अनुकूल प्रदेश पुरस्कार
FILM FRIENDLY STATE AWARD

63^{वें}
राष्ट्रीय
फ़िल्म
पुरस्कार
2015
NATIONAL FILM
AWARDS 2015

राज्य सरकार द्वारा सिनेमा गतिविधियों और प्रमोशन के लिए समर्पित प्रयास, जो भारतीय सिनेमा के संवर्धन के लिए सकारात्मक माहौल बनाए, 'फ़िल्म अनुकूल राज्य' पुरस्कार के योग्य होगा।

A state government that makes dedicated effort in the direction of facilitating film shootings and in creating a conducive environment towards promotion of Indian Cinema shall be eligible for the award for 'Most Film Friendly State'

63^{वें}

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015
National Film Awards 2015



सत्यमेव जयते
Government of Gujarat

गुजरात (Gujarat)

सर्वश्रेष्ठ फिल्म अनुकूल राज्य
Most Film Friendly State

रजत कमल एवं प्रशस्ति पत्र Rajat Kamal & Certificate

प्रशस्ति (Citation)

फिल्म की शूटिंग आसान बनाने, अन्तरराष्ट्रीय प्रचार-प्रसार, सिंगल विंडो क्लीयरेंस सुविधा, वेब पोर्टल के निर्माण, संसाधनों, होटल तथा अन्य आपातकालीन सुविधाओं के डेटाबेस निर्माण जैसे प्रयासों के लिए तथा कुल मिलाकर राज्य सरकार द्वारा फिल्म उद्योग के प्रति मैत्रीपूर्ण रवैये के लिए।

For its effort in the direction of ease of shooting films, international promotions, single window clearance facility, presence of a dedicated web portal, database of Product facilities & hotels and emergency services as well as the friendly approach of the state government.



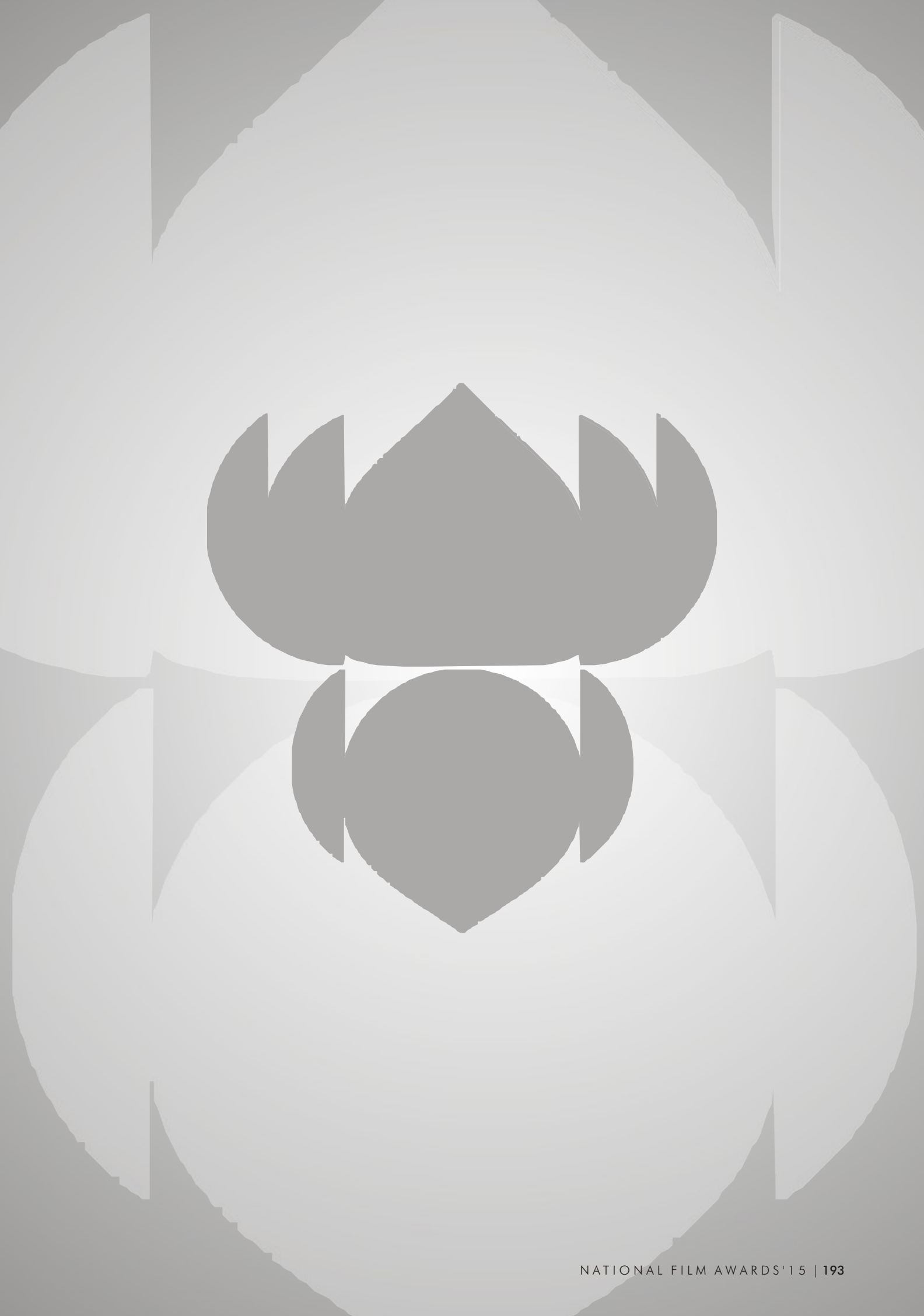
उत्तर प्रदेश, केरल (Uttar Pradesh, Kerala)

विशेष उल्लेख
Special Mention

प्रशस्ति पत्र Certificate

प्रशस्ति (Citation)

अपने राज्य को फिल्म गतिविधियों और फिल्मकारों के लिए और ज़्यादा मैत्रीपूर्ण बनाने के प्रयास के लिए।
Certificate for the efforts in making their State friendly towards film shooting crews.



फ़िल्म समारोह निदेशालय समूह Directorate of Film Festivals Team

रिज़वान अहमद (उप निदेशक)
Rizwan Ahamd (Dy. Director)

तनु राय (उप निदेशक)
Tanu Rai (Dy. Director)

के. प्रशांत कुमार (उप निदेशक) (प्र०)
K Prashant Kumar (Dy. Director) (A)

रवि कुमार पाठक (उप निदेशक) (लेखा)
Ravi Kumar Pathak (Dy. Director) (A/Cs)

मंजु खन्ना | Manju Khanna

मुकेश चंद | Mukesh Chand

विनोद कुमार बस्सी | Vinod Kumar Bassi

रोशन कुमार वत्स | Roshan Kumar Vatsa

गणेश चंद | Ganesh Chand

गौतम सिंह | Gautam Singh

प्रवीण कुमार चावला | Pravin Kumar Chawala

सुशांत श्रोत्रिय | Sushant Shrotriya

चिरंजी लाल मीणा | Chiranji Lal Meena

महेश चंद | Mahesh Chand

राजेन्द्र कुमार | Rajendra Kumar

दीपू चौधरी | Deepu Chaoudhary

जयदेव | Jaidev

सुरेन्द्र कुमार | Surendra Kumar

देवेन्द्र प्रसाद | Devendra Prasad

कमलेश कुमार रावत | Kamlesh Kumar Rawat

चण्डी प्रसाद | Chandhi Prasad

गोविन्द राम | Govind Ram

इंजिनियरिंग एवं प्रोजेक्शन समूह

ENGINEERING AND PROJECTION TEAM

एस.के. शर्मा (ए.ई.) सिविल | S.K Sharma (A.E) Civil

जे.एस. पंघल (ए.ई.) इलैक्ट्रिकल | J.S Panghal (A.E) Electrical

डी.पी. गौतम (ए.ई.) पी | D.P Gautam (A.E) P

जे.के. गोयल (ए.ई.) पी | J.K Goel (A.E) P

ओम प्रकाश (प्रोजेक्शनिस्ट) | Om Prakash (Projectionist)

धन सिंह (प्रोजेक्शनिस्ट) | Dhan Singh (Projectionist)

किशन (प्रोजेक्शनिस्ट) | Kishan (Projectionist)

आभार

ACKNOWLEDGEMENTS

फ़िल्म निर्माता / निर्माण समूह, विगत डीएसपीए विजेताओं की फिल्म से संबंधित सामग्री फोटोग्राफ उपलब्ध करवाने के लिए:

भारतीय राष्ट्रीय फ़िल्म अभिलेखागार, पुणे (भारत सरकार)

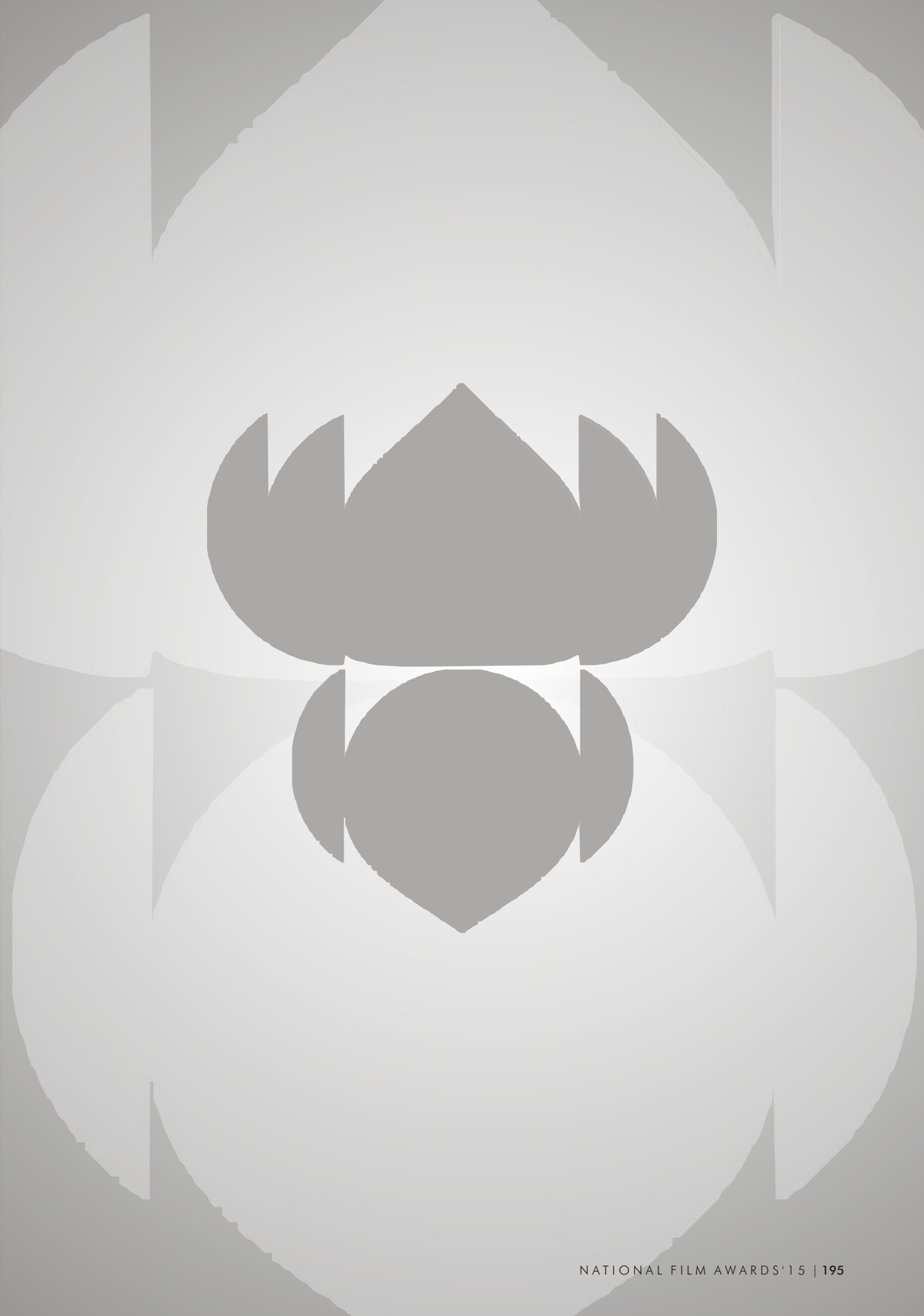
फ़िल्म प्रभाग राष्ट्रीय पुरस्कार और डीएसपीए पुरस्कार विजेताओं की दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति के लिए

Film Producers/Production Houses for providing the film-related material Photographs of Past DSPA Winners:

National Film Archives of India, Pune (Government of India)

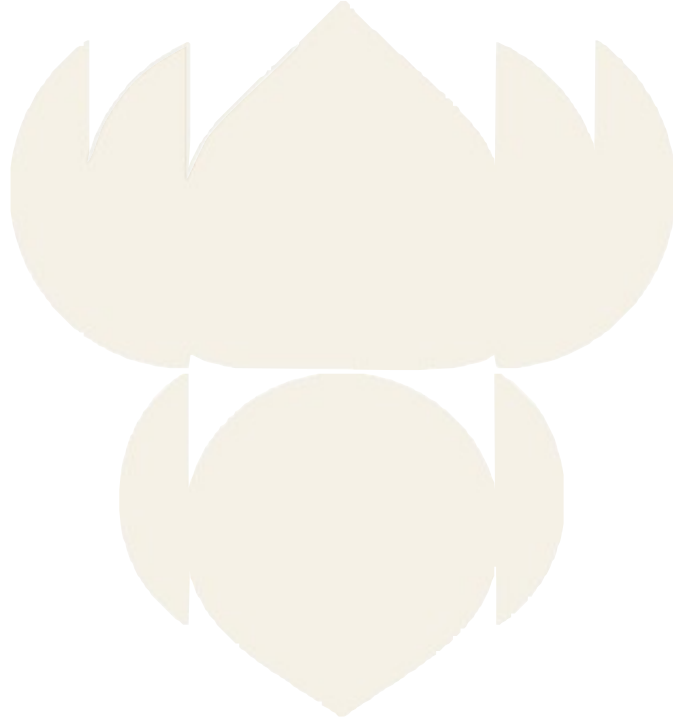
Films Division for DSPA and National Award Winners Audio Visual presentation







एक कदम स्वच्छता की ओर



फ़िल्म समारोह निदेशालय

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
सिरी फोर्ट सभागार परिसर, अगस्त क्रांति मार्ग, नई दिल्ली-110049

DIRECTORATE OF FILM FESTIVALS

Ministry of Information and Broadcasting, Government of India
Siri Fort Auditorium Complex, August Kranti Marg, New Delhi – 110049.

www.dff.nic.in